॥ श्री चौबीस तीर्थंकराय नमः॥

विशद दीप अर्चना

(भाग-2)

रचयिता :

प.पू. क्षमामूर्ति 108 आचार्य विशदसागरजी महाराज

कृति - विशद दीप अर्चना (भाग-2)

कृतिकार - प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

संस्करण - प्रथम-2020 ● प्रतियाँ :1000

संकलन - मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज
क्षुल्लक 105 श्री विसोमसागरजी, ब्र. प्रदीप भैया

सहयोग - आर्यिका 105 श्री भक्तिभारती, क्षुल्लिका 105 श्री वात्सल्य भारती

संपादन - ब्र. ज्योति दीदी (9829076085), आस्था दीदी (9660996425)
सपना दीदी (9829127533), आरती दीदी (8700876822)

प्राप्ति स्थल - 1. सुरेश जी सेठी, पी-958, गली नं. 3,
शांति नगर, जयपुर मो. 9413336017

2. विशद साहित्य केन्द्र
C/o श्री दिगम्बर जैन मंदिर, कुआँ वाला जैनपुरी
रेवाड़ी (हरियाणा) प्रधान ● मो.: 09416882301

3. लाल मंदिर, चाँदनी चौक, दिल्ली

4. जय अरिहन्त ट्रेडर्स, 6561, नेहरू गली, गाँधी नगर, दिल्ली
मो. 9818115971

मूल्य - 51/- रु. मात्र

- अर्थ सौजन्य :-

1. श्रीमती कुमुद जैन ध.प. श्री निर्मल जैन
नया बाजार (मुरैना वाले) ग्वालियर (म.प्र.)
2. श्री पद्मकुमार जैन (गार्ड)
84, कर्मचारी आवास कॉलोनी, महल गाँव, ग्वालियर (म.प्र.)
3. श्री मेहुल जैन सुपुत्र श्री राजीव जैन (IOFS) सुपुत्र श्री एन.के. जैन
127/159, 4 ब्लाक, निराला नगर, कानपुर (उ.प्र.) 208014

मुद्रक : राजू ग्राफिक आर्ट (संदीप शाह), जयपुर ● फोन : 2313339, मो.: 9829050791

मंगलाष्टकम्

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्र-महिताः सिद्धाश्च सिद्धीश्वराः।
आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः॥
श्रीसिद्धान्त-सुपाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधकाः।
पञ्चैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वन्तु (ते) वो मंगलम्॥

पूजनीय इन्द्रों से अर्हत्, सिद्ध क्षेत्र सिद्धी स्वामी।
जिन शासन को उन्नत करते, सूरी मुक्ती पथगामी॥
उपाध्याय हैं ज्ञान प्रदायक, साधु रत्नत्रय धारी।
परमेष्ठी प्रतिदिन पापों के, नाशक हों मंगलकारी॥

ॐ ह्रीं रत्नत्रय स्वरूप परमेष्ठिने नमः मम् मंगल कृतेऽहं दीप प्रज्ज्वलनं करोमि स्वाहा।

श्रीमन्नम्र - सुरा - सुरेन्द्र - मुकुट, प्रद्योत - रत्नप्रभा-
भास्वत्पाद-नखेन्दवः प्रवचनाम्भोधीन्दवः स्थायिनः।
ये सर्वे जिन-सिद्ध-सूर्यनुगतास्ते पाठकाः साधवः,
स्तुत्या योगिजनैश्च पञ्चगुरूवः कुर्वन्तु ते (वो) मंगलम्॥

नमित सुरासुर के मुकुटों की, मणिमय कांति शुभ्र महान्।
प्रवचन सागर की वृद्धी को, प्रभु पद नख हैं चंद्र समान॥
योगी जिनकी स्तुति करते, गुण के सागर अनगारी।
परमेष्ठी प्रतिदिन पापों के, नाशक हों मंगलकारी॥1॥

ॐ ह्रीं पंच परमेष्ठिने नमः मम् मंगल कृतेऽहं दीप प्रज्ज्वलनं करोमि स्वाहा।

सम्यग्दर्शन-बोध-वृत्तममलं रत्नत्रयं पावनं,
मुक्ति-श्री-नगराधिनाथ-जिनपत्युक्तोऽपवर्गप्रदः।
धर्मः सूक्तिसुधा च चैत्यमखिलं चैत्यालयं श्रयालयं,
प्रोक्तं च त्रिविधं चतुर्विधममी कुर्वन्तु ते (वो) मंगलम्॥

सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण युत, निर्मल रत्नत्रयधारी।
मोक्ष नगर के स्वामी श्री जिन, मोक्ष प्रदाता उपकारी।।
जिन आगम जिन चैत्य हमारे, जिन चैत्यालय सुखकारी।
धर्म चतुर्विध पंच पाप के, नाशक हों मंगलकारी।।2।।

ॐ ह्रीं रत्नत्रय स्वरूप नव देवेभ्यो नमः मम् मंगल कृतेऽहं दीप प्रज्ज्वलनं करोमि स्वाहा।

नाभेयादि जिनाःप्रशस्त-वदना, ख्याताश्चतुर्विंशतिः,
श्रीमन्तो भरतेश्वरप्रभृतयो ये चक्रिणो द्वादश।
ये विष्णु-प्रतिविष्णु-लांगलधराः सप्तोत्तरा विंशतिस्ः
त्रैकाल्ये प्रथितास्त्रिषष्टिपुरुषाः कुर्वन्तु ते (वो) मंगलम्।।

तीन लोक में ख्यात हुए हैं, ऋषभादि चौबिस जिनदेव।
श्रीयुत द्वादश चक्रवर्ति हैं, नारायण नव हैं बलदेव।।
प्रति नारायण सहित तिरेसठ, महापुरुष महिमाधारी।
पुरुष शलाका पंच पाप के, नाशक हों मंगलकारी।।3।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर आदि महापुरुषेभ्यो नमः मम् मंगल कृतेऽहं दीप प्रज्ज्वलनं करोमि स्वाहा।

ये सर्वौषधऋद्धयः सुतपसो वृद्धिंगताः पञ्च ये,
ये चाष्टांग-महानिमित्त-कुशलाश्, चाष्टौ वियच्चारिणः।
पञ्चज्ञानधरास्त्रयोऽपि बलिनो ये बुद्धि ऋद्धीश्वराः,
सप्तैते सकलार्चिता गणभृतः कुर्वन्तु ते (वो) मंगलम्।।

सुतप वृद्धि करके सर्वौषधि, ऋद्धी पाई पञ्च प्रकार।
वसु विधि महा निमित् के ज्ञाता, वसुविधि चारण ऋद्धीधार।।
पंच ज्ञान तिय बल भी पाये, सप्त बुद्धि ऋद्धीधारी।
ये सब गण नायक पापों के, नाशक हों मंगलकारी।।4।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्ठि ऋद्धी प्राप्त मुनेः नमः मम् मंगल कृतेऽहं दीप प्रज्ज्वलनं करोमि स्वाहा।

ज्योतिर्व्यन्तर-भावनामरगृहे मेरौ कुलाद्रौ स्थिताः,
जम्बू शाल्मलि-चैत्य-शाखिषुतथा वक्षार-रूप्याद्रिषु।
इष्वाकारगिरौ च कुण्डलनगे द्वीपे च नन्दीश्वरे,
शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वन्तु ते (वो) मंगलम्॥

व्यंतर भवन विमान ज्योतिषी, मेरु कुलाचल इष्वाकार।
जंबू शाल्मलि चैत्य वृक्ष की, शाखा नंदीश्वर वक्षार॥
रूप्यादि कुण्डल मनुजोत्तर, में जिनग्रह अतिशयकारी।
वे सब ही पांचों पापों के, नाशक हों मंगलकारी॥5॥

ॐ ह्रीं अधो मध्य ऊर्ध्वलोके कृत्रिमाकृत्रिम जिनालयेभ्यो नमः मम् मंगल कृतेऽहं दीप प्रज्ज्वलनं करोमि स्वाहा।

कैलाशे वृषभस्य निर्वृतिमही वीरस्य पावापुरे,
चम्पायां वसुपूज्यसज्जिनपतेः सम्मेदशैलेऽर्हताम्।
शेषाणामपि चोर्जयन्तशिखरे नेमीश्वरस्यार्हतो,
निर्वाणावनयः प्रसिद्धविभवाः कुर्वन्तु ते (वो) मंगलम्॥

आदिनाथ स्वामी अष्टापद, वासुपूज्य चंपापुर ग्राम।
नेमिनाथ गिरनार सुगिरि से, महावीर पावापुर धाम॥
बीस जिनेश सम्मेदशिखर से, मोक्ष विभव अतिशयकारी।
सिद्ध क्षेत्र पांचों पापों के, नाशक हों मंगलकारी॥6॥

ॐ ह्रीं ऋषभादि जिनः निर्वाण क्षेत्रेभ्यो नमः मम् मंगल कृतेऽहं दीप प्रज्ज्वलनं करोमि स्वाहा।

देव्योऽष्टौ च जयादिका द्विगुणिता विद्यादिका देवता,
श्रीतीर्थंकर मातृकाश्च जनका यक्षाश्च यक्ष्यस्तथा।
द्वात्रिंशत् त्रिदशाऽधिपास्तिथिसुरा दिक्कन्यकाश्चाष्टधा,
दिक्पाला दश चैत्यमी सुरगणाः कुर्वन्तु ते (वो) मंगलम्॥

जया आदि हैं अष्ट देवियाँ, सोलह विद्यादिक हैं देव।
श्रीयुत तीर्थंकर के माता-पिता यक्ष-यक्षी भी एव।।
देवों के स्वामी बत्तिस वसु, दिक् कन्याएँ मनहारी।
दश दिक्पाल सहित विघ्नों के, नाशक हों मंगलकारी।।7।।

ॐ ह्रीं जिनधर्म रक्षक सर्वदेव देविभ्यो नमः मम् मंगल कृतेऽहं दीप प्रज्ज्वलनं करोमि स्वाहा।

यो गर्भाऽवतरोत्सवो भगवतां जन्माऽभिषेकोत्सवो,
यो जातः परिनिष्क्रमेण विभवो यः केवलज्ञानभाक्।
यः कैवल्य पुर प्रवेश महिमा संभावितः स्वर्गिभिः,
कल्याणानि च तानि पञ्च सततं कुर्वन्तु ते (वो) मंगलम्।।

तीर्थंकर जिन भगवंतों को, गर्भ जन्म के उत्सव में।
दीक्षा केवलज्ञान विभव अरु, मोक्ष प्रवेश महोत्सव में।।
कल्याणक को प्राप्त हुए तब, देव किए अतिशय भारी।
कल्याणक पांचों पापों के, नाशक हों मंगलकारी।।8।।

ॐ ह्रीं गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, मोक्ष पंचकल्याणेभ्यो नमः मम् मंगल कृतेऽहं दीप प्रज्ज्वलनं करोमि स्वाहा।

इत्थं श्रीजिनमंगलाष्टकमिदं सौभाग्य-संपत्प्रदं,
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्तीर्थंकराणामुषः।
ये शृण्वन्ति पठन्ति तैश्च सुजनैर्धर्मार्थ कामान्विता,
लक्ष्मीराश्रयते व्यापाय रहिता निर्वाण लक्ष्मीरपि।।

धन वैभव सौभाग्य प्रदायक, जिन मंगल अष्टक धारा।
सुप्रभात कल्याण महोत्सव में, सुनते-पढ़ते न्यारा।।
धर्म अर्थ अरु काम समन्वित, लक्ष्मी हो आश्रयकारी।
मोक्ष लक्ष्मी 'विशद' प्राप्त कर, होते हैं मंगलकारी।।9।।

ॐ ह्रीं सर्वमंगलकृत मंगलाष्टकेभ्यो नमः मम् मंगल कृतेऽहं दीप प्रज्ज्वलनं करोमि स्वाहा।

।। इति मंगलाष्टकम्।।

श्री नवदेवता स्तोत्रम्-मंगलाष्टकम्

(1) अरहंत

श्रीमन्तो जिनपाजगत्त्रयनुता, दोषैर्विमुक्तात्मकाः।
लोकालोकविलोकनैक चतुराश्शुद्धाः परं निर्मलाः॥
दिव्यानन्तचतुष्टयादिकयुताः, सत्यस्वरूपात्मकाः।
प्राप्तायैर्भुविप्रातिहार्यविभवाः, कुर्वन्तु ते मंगलम्॥

तीन लोक में पूजनीय हैं, जिन श्रीमान् निर्मल निर्दोष।
दिव्यानन्त चतुष्टय आदिक, प्रातिहार्य वैभव के कोष॥
सत्य स्वरूपी परम आत्मशुभ, श्रीजिन छियालिस गुणधारी।
लोकालोक विलोकी अर्हत्, इस जग में मंगलकारी॥1॥

ॐ ह्रीं श्री अरहंत परमेष्ठिने नमः दीप प्रज्ज्वलनं करोमि स्वाहा।

(2) सिद्ध

श्रीमन्तो नृसुरा सुरेन्द्र महिता, लोकाग्रसंवासिनः।
नित्याः सर्व सुखाकरा भयहरा, विश्वेषु कामप्रदाः॥
कर्मातीतविशुद्ध भावसहिता, ज्योतिःस्वरूपात्मकाः।
श्रीसिद्धाजननार्ति मृत्युरहिताः, कुर्वन्तु ते मंगलम्॥

महित सुरासुर नर से पूजित, नित्य सर्व सुखकर श्रीमान्।
कर्मातीत विशुद्ध काम पद, ज्योति स्वरूपी वसु गुणवान॥
रहित जन्म-मृत्यू अर्ति से, विश्वेषु जिन भयहारी।
सिद्ध श्री लोकाग्र निवासी, इस जग में मंगलकारी॥2॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध परमेष्ठिने नमः दीप प्रज्ज्वलनं करोमि स्वाहा।

(3) आचार्य परमेष्ठी

पञ्चाचार परायणाः सुविमलाश्चारित्र संद्योतकाः।
अर्हद्भू पधराश्च निस्पृहपराः, कामादिदोषोज्झिताः॥

बाह्याभ्यन्तर संगमोहरहिताः शुद्धात्मसंराधकाः।
आचार्या नरदेवपूजितपदाः, कुर्वन्तु ते मंगलम्॥

पंचाचार परायण निष्पृह, कामादिक दोषों से हीन।
विमल ज्ञान चारित्र प्रकाशक, बाह्याभ्यन्तर संग विहीन॥
परं शुद्ध आतम आराधक, जिन अर्हन्त रूपधारी।
जिनाचार नर सुर से पूजित, इस जग में मंगलकारी॥3॥

ॐ ह्रीं श्री आचार्य परमेष्ठिने नमः दीप प्रज्ज्वलनं करोमि स्वाहा।

(4) उपाध्याय परमेष्ठी

वेदांगं निखलागमं शुभतरं, पूर्णं पुराणं सदा।
सूक्ष्मासूक्ष्मसमस्ततत्त्वकथकं, श्री द्वादशांग शुभम्॥
स्वात्मज्ञानविवृद्धये गतमलाः, येऽध्यायपन्तीश्वराः।
निर्द्वन्द्वावरपाठकाः सुविमलाः, कुर्वन्तु ते मंगलम्॥

निर्मल वेद अंग शुभतर शुभ, निखिलागम् युत पूर्ण पुराण।
सूक्ष्मासूक्ष्म सर्व तत्त्वों का, द्वादशांग में कथन महान्॥
श्रेष्ठ विमल पंतीश्वर ध्याता, स्वात्म ज्ञान वृद्धीकारी।
उपाध्याय निर्द्वन्द सुपाठक, इस जग में मंगलकारी॥4॥

ॐ ह्रीं श्री उपाध्याय परमेष्ठिने नमः दीप प्रज्ज्वलनं करोमि स्वाहा।

(5) सर्व साधु

त्यक्त्वाशां भव भोग पुत्रतनुजां, मोहं परं दुस्त्यजं।
निःसंगाकरुणालयाश्च विरता दैगम्बरा धीधनाः॥
शुद्धाचाररतानिजात्मरसिका, ब्रह्मस्वरूपात्मका।
देवेन्द्रैरपि पूजिताः सुमुनयः, कुर्वन्तु ते मंगलम्॥

महा मोह आशा के त्यागी, करुणालय अध्यात्म स्वरूप।
पुत्र तनु भव भोग विरत धीमान् निसंग दिगम्बर रूप॥

निज आतम के रसिक श्रेष्ठ जो, ज्ञान ध्यान शुद्धाचारी।
देवेन्द्रों से पूजित मुनिवर, इस जग में मंगलकारी।।5।।

ॐ ह्रीं श्री सर्वसाधु परमेष्ठिने नमः दीप प्रज्ज्वलनं करोमि स्वाहा।

(6) जिनधर्म

जीवानामभयप्रदः सुसदयः, संसारदुःखापहः।
सौख्यंयोनित्तरां ददाति सकलं, दिव्यं मनोवाञ्छितम्।।
तीर्थेशैरपिधारितोद्यनुपमः, स्वर्मोक्षसंसाधकः।
धर्मःसोऽत्र जिनोदितोहितकरः, कुर्यात्सदा मंगलम्।।

अभय प्रदायक जग जीवों का, दयावान दुख का हर्त्ता।
स्वर्ग मोक्ष का साधक अनुपम, मनवांछित सुख का कर्त्ता।।
सकल विमल सुदिव्य तीर्थ के, अधिपति पावन हितकारी।
जिनवर कथित धर्म है पावन, इस जग में मंगलकारी।।6।।

ॐ ह्रीं श्री जिनधर्माय नमः दीप प्रज्ज्वलनं करोमि स्वाहा।

(7) जिनागम

स्याद्वादांकधरं त्रिलोकमहितं, देवैः सदा संस्तुतं।
सन्देहादि विरोध भाव रहितं, सर्वार्थ सन्देशकम्।।
याथातथ्यमजेयमाप्तकथितं, कोटिप्रभाभासितं।
श्रीमज्जैनसुशासनं हितकरं, कुर्यात्सदा मंगलम्।।

स्याद्वाद रवि से आलोकित, सुर नर पूजित लोक महान्।
सन्देहादिक दोष रहित शुभ, सर्व अर्थ संदेश प्रधान।।
याथातथ्य अजेय सुशासन, आप्त कथित है हितकारी।
कोटि प्रभा भाषित जैनागम, इस जग में मंगलकारी।।7।।

ॐ ह्रीं श्री जिनागमाय नमः दीप प्रज्ज्वलनं करोमि स्वाहा।

(8) जिनचैत्य

सौम्याः सर्वविकार भावरहिताः, शान्ति स्वरूपात्मकाः।
शुद्धध्यानमयाः प्रशान्तवदनाः, श्रीप्रातिहार्यान्विताः।।

स्वात्मानन्द विकाशकाश्च सुभगाश्चैतन्य भावावहाः।
पञ्चानांपरमेष्ठिनां हि कृतयाः, कुर्वन्तु ते मंगलम्॥

शुद्ध ध्यानमय प्रातिहार्य युत, परमेष्ठी कृत शांतिस्वरूप।
सर्व विकार भाव से वर्जित, सुभग चैतन्य भावमय रूप॥
स्वात्मानंद प्रशांत वदनमय, जिन मुद्रा है अविकारी।
सौम्य सुनिर्मल जिन प्रतिमा है, इस जग में मंगलकारी॥8॥

ॐ ह्रीं श्री जिनचैत्येभ्यो नमः दीप प्रज्ज्वलनं करोमि स्वाहा।

(9) जिन चैत्यालय

घण्टातोरणदामधूपघटकै, राजन्ति सन्मंगलैः।
स्तोत्रैश्चित्तहरैर्महोत्सव शतै, र्वादित्र संगीत कैः॥
पूजारम्भ महाभिषेक यजनैः पुण्योत्करैः सत्क्रियैः।
श्रीचैत्यायतनानितानि कृतिनां, कुर्वन्तु सन्मंगलम्॥

घंटा तोरण दाम धूप घट, राजत शत् वादित्र महान्।
पूजारंभ महोत्सव मंगल, महाभिषेक स्तोत्र प्रधान॥
महत् पुण्यकारक सत् किरिया, भवि जीवों को हितकारी।
कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्यालय, इस जग में मंगलकारी॥9॥

ॐ ह्रीं श्री जिन चैत्यालयेभ्यो नमः दीप प्रज्ज्वलनं करोमि स्वाहा।

(10) बोधि समाधि प्रदायक

इत्थंमंगलदायका जिनवराः, सिद्धाश्च सूर्यादयाः।
पूज्यास्ता नव देवता अघहरास्तीर्थोत्तमास्तारकाः॥
चारित्रोज्वलतांविशुद्ध शमतां, बोधिं समाधिं तथा।
श्री जैनेन्द्र 'सुधर्म' मात्मसुखदं, कुर्वन्तु सन्मंगलम्॥

मंगलदायक श्री जिनवरजी, सिद्ध सूरि आदिक नवदेव।
उत्तम तीर्थ सुतारक भव से, बोधि समाधि दाता एव॥
उज्ज्वलतम् विशुद्ध समतामय, सुचरित्रमय अघहारी।
'विशद' धर्म आतम सुखदायक, इस जग में मंगलकारी॥10॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो नमः दीप प्रज्ज्वलनं करोमि स्वाहा।

श्री महावीराष्टक स्तोत्रम्

(शिखरिणी छन्दः)

यदीये चैतन्ये मुकुर इव भावाश्चिदचितः
समं भान्ति ध्रौव्य-व्यय-जनि-लसन्तोऽन्तरहिताः।
जगत्साक्षी मार्ग-प्रकटन-परो भानुरिव यो
महावीर-स्वामी नयन-पथगामी भवतु मे ॥1॥

ज्ञानादर्श में युगपद दिखते, जीवाजीव द्रव्य सारे।
व्यय, उत्पाद, ध्रौव्य प्रतिभाषित, अंत रहित होते न्यारे॥
जग को मुक्ती पथ प्रकटाते, रवि सम जिन अन्तर्यामी।
ऐसे श्री महावीर प्रभू हों, मम नयनों के पथगामी॥1॥

ॐ ह्रीं प्रत्यक्षज्ञानी श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

अताम्रं यच्चक्षुः कमल - युगलं स्पन्द - रहितं
जनान्कोपा-पायं प्रकटयति वाभ्यन्तर-मपि।
स्फुटं मूर्तिर्यस्य प्रशमितमयी वातिविमला
महावीर-स्वामी नयन पथगामी भवतु मे॥2॥

नयन कमल झपते नहिं दोनों, क्रोध लालिमा से भी हीन।
जिनकी मुद्रा शांत विमल है, अंतर बाहर भाव विहीन॥
क्रोध भाव से रहित लोक में, प्रगटित हैं अन्तर्यामी।
ऐसे श्री महावीर प्रभू हों, मम नयनों के पथगामी॥2॥

ॐ ह्रीं प्रशांतमुद्रा प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

नमन्नाकेन्द्राली-मुकुटमणि-भा-जाल-जटिलं
लसत्पादांम्भोज - द्वयमिह यदीयं तनुभृताम्।
भवज्जवाला-शान्त्यै प्रभवति जलं वा स्मृतमपि
महावीर-स्वामी नयन पथगामी भवतु मे॥3॥

नमित सुरों के मुकुट सुमणि की, आभा हुई है कांतीमान।
दोनों चरण कमल की भक्ती, भक्त जनों को नीर समान॥

दुखहर्ता सुखकर्ता जग में, जन-जन के अंतर्यामी।
ऐसे श्री महावीर प्रभू हों, मम नयनों के पथगामी।।3।।

ॐ ह्रीं सुरवंदित श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

यदर्चा-भावेन प्रमुदित-मना दर्दुर इह
क्षणादासीत्स्वर्गी गुण-गण-समृद्धः सुखनिधिः।
लभन्ते सद्भक्ताः शिव सुख-समाजं किमु तदा
महावीर-स्वामी नयन पथगामी भवतु मे।।4।।

हर्षित मन होकर मेढ़क ने, जिन पूजा के भाव किए।
क्षण में मरकर गुण समूह युत, देवगति अवतार लिए।।
क्या अतिशय नर भक्ति आपकी, करके हो अंतर्यामी।
ऐसे श्री महावीर प्रभू हों, मम नयनों के पथगामी।।4।।

ॐ ह्रीं भक्तिफल प्रदायक श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

कनत्स्वर्णाभासोऽप्यपगत-तनुर्ज्ञान-निवहो,
विचित्रात्माप्येको नृपति-वर सिद्धार्थ-तनयः।
अजन्मापि श्रीमान् विगत-भव-रागोऽद्भुत-गतिर्
महावीर-स्वामी नयन पथगामी भवतु मे ।।5।।

स्वर्ण समा तन को पाकर भी, तन से आप विहीन रहे।
पुत्र नृपति सिद्धारथ के हैं, फिर भी तन से हीन कहे।।
राग-द्वेष से रहित आप हैं, श्री युत हैं अंतर्यामी।
ऐसे श्री महावीर प्रभू हों, मम नयनों के पथगामी।।5।।

ॐ ह्रीं मुक्तिश्री प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

यदीया वाग्गङ्गा विविध-नय-कल्लोल-विमला,
बृहज्ज्ञानाम्भोभि-र्जगति जनतां या स्नपयति।
इदानीमप्येषा बुध-जन-मरालैः परिचिता
महावीर-स्वामी नयन पथगामी भवतु मे।।6।।

जिनके वचनों की गंगा शुभ, नाना नय कल्लोल विमल।
महत् ज्ञान जल से जन-जन को, प्रच्छालित कर करे अमल।।

बुधजन हंस सुपरिचित होकर, बन जाते अंतर्यामी।
ऐसे श्री महावीर प्रभू हों, मम नयनों के पथगामी।।6।।

ॐ ह्रीं दिव्यदेशना प्रदायक श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

अनिर्वारोद्रेकस्, त्रिभुवन-जयी काम-सुभटः
कुमारावस्थाया-, मपि निज-बलाद्येन विजितः।
स्फुरन्-नित्यानन्द, प्रशम-पद-राज्याय स जिनः
महावीर-स्वामी नयन पथगामी भवतु मे।।7।।

तीन लोक में कामबली पर, विजय प्राप्त करना मुश्किल।
लघु वय में अनुपम निज बल से, विजय प्राप्त कर हुए विमल।।
सुख शांति शिव पद को पाकर, आप हुए अंतर्यामी।
ऐसे श्री महावीर प्रभू हों, मम नयनों के पथगामी।।7।।

ॐ ह्रीं कामविजयी श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

महामोहातङ्क-, प्रशमनपराकस्मिक-भिषङ्
निरापेक्षो बन्धु-, र्विदित-महिमा मङ्गलकरः।
शरण्यः साधूनां, भव-भयभृता-मुत्तमगुणो,
महावीर-स्वामी नयन पथगामी भवतु मे।।8।।

महामोह के शमन हेतु शुभ, कुशल वैद्य हो आप महान्।
निरापेक्ष बंधु हैं सुखकर, उत्तम गुण रत्नों की खान।।
भव भयशील साधुओं को हैं, शरण भूत अन्तर्यामी।
ऐसे श्री महावीर प्रभू हों, मम नयनों के पथगामी।।8।।

ॐ ह्रीं जगतशरण श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

महावीराष्टकं स्तोत्रं, भक्त्या 'भागेन्दुना' कृतम्।
यः पठेच्छ्रृणुयाच्चापि, स याति परमां गतिम्।।9।।

दोहा- भागचंद भागेन्दु ने, भक्ति भाव के साथ।
महावीर अष्टक लिखा, झुका चरण में माथ।।
पढ़े सुने जो भाव से, श्रेष्ठ गति को पाय।
भाषा पढ़के काव्य की, 'विशद' वीर बन जाय।।

ॐ ह्रीं परमाराध्य श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

।। इति श्रीमहावीराष्टकस्तोत्रम् ।।

अकलंक स्तोत्र

त्रैलोक्यं सकलं त्रिकालविषयं सालोकमालोकितं,
साक्षाद् येन यथा स्वयं करतले रेखात्रयं सांगुलि।
रागद्वेष भयामयान्तक - जरा - लोलत्व लोभादयो,
नालं यत्पद-लङ्घनाय स महादेवो मया वंद्यते ।।1।।

जिनने अंगुली सहित हथेली, में रेखाएँ तीन समान।
तीन लोक आलोक काल तिय, आलोकित प्रत्यक्ष प्रमाण॥
राग-द्वेष भय रोग जरामय, लोभादिक पद से हैं हीन।
महादेव वह मेरे द्वारा, वन्दित सन्ध्याओं में तीन॥ 1॥

ॐ ह्रीं सर्वदेव पूज्य महाऽपाय नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

दग्धं येन पुरत्रयं शरभुवा तीव्रार्चिषा वह्निना,
यो वा नृत्यति मत्तवत्पितृवने यस्यात्मजो वा गुहः।
सोऽयं किं मम शङ्करो भय-तृषा-रोषार्ति-मोह-क्षयं,
कृत्वा यः स तु सर्ववित्तनुभृतां क्षेमंकरः शङ्करः ।।2।।

काम बाण की ज्वालाओं से, तीन लोक को जला दिया।
पागल सम श्मशान घाट में, जिसने खुलकर नृत्य किया॥
तृषा क्रोध भय दुःख मोह के, क्षायक जग के क्षेमंकर।
कार्तिकेय के पिता नहीं, सर्वज्ञ रहे मेरे शंकर॥ 2॥

ॐ ह्रीं परम सर्वज्ञ शंकराय नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

यत्नाद्येन विदारितं कररुहै-र्दैत्येन्द्र-वक्षःस्थलं,
सारथ्येन धनञ्जयस्य समरे योऽमार यत्कौरवान्।
नासौ विष्णुरनेक-कालविषयं यज्ज्ञान-मव्याहतं,
विश्वं व्याप्य विजृम्भते स तु महाविष्णुः सदेष्टो मम ।।3।।

दैत्यराज का सीना जिसने, नाखूनों से ध्वस्त किया।
अर्जुन का सारथी बन रण में, कौरव को विध्वस्त किया॥
नहीं विष्णु वह महाविष्णु मम्, अव्याबाध है जिसका ज्ञान।
विश्व व्याप्त कर वृद्धी करता, मुझे इष्ट वह है भगवान॥ 3॥

ॐ ह्रीं अव्याबाध ज्ञानधर महाविष्णवे नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

उर्वश्या-मुदपादि राग बहुलं चेतो यदीयं पुनः,
पात्री-दण्ड कमण्डलु-प्रभृतयो यस्याकृतार्थ-स्थितिम्।
आविर्भावयितुं भवन्ति स कथं ब्रह्मा भवेन्मादृशां,
क्षुतृष्णा-श्रम-रागरोगरहितो ब्रह्मा कृतार्थोऽस्तु नः ॥4॥

जिसके चित्त में उर्वसि ने भी, काम वासना उपजाई।
दण्ड कमण्डल पात्र आदि अरु, अकृत्य कृत्यता प्रगटाई॥
वह ब्रह्मा कैसे मेरा हो, मम् ब्रह्मा कृतकृत्य रहा।
क्षुधा तृषा श्रम राग रोग बिन, मम् ब्रह्मा तो नित्य कहा॥ 4॥

ॐ ह्रीं कृतकृत्य महाब्रह्मणे नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

यो जग्ध्वा पिशितं समत्स्यकवलं जीवं च शून्यं वदन,
कर्त्ता कर्मफलं न भुङ्क्त इति यो वक्ता स बुद्धः कथम्।
यज्ज्ञानं क्षणवर्ति वस्तु सकलं ज्ञातुं न शक्तं सदा,
यो जानन्युगपज्जगत्त्रयमिदं साक्षात् स बुद्धो मम ॥5॥

मगरमच्छ के माँस को खाता, कहता जीव है सून्य वदन।
कर्म करे फल न पावे वह, क्षणिक ज्ञान का करे कथन॥
सर्व द्रव्य को जान न पावे, फिर कैसे कहलाए बूद्ध।
तीन लोक को युग पद जाने, वह मेरा है ज्ञानी बूद्ध॥ 5॥

ॐ ह्रीं महाबोधि प्राप्त जिन बुद्धाय नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

(स्रग्धरा छन्दः)

ईशः किं छिन्नलिङ्गो यदि विगतभयः शूलपाणिः कथं स्यात्,
नाथः किं भैक्ष्यचारी यतिरिति स कथं साङ्गनः सात्मजश्च।
आर्द्राजः किन्त्वजन्मा सकलविदित किं वेत्ति नात्मान्तरायं,
संक्षेपात्सम्यगुक्तं पशुपतिमपशुः कोऽत्र धीमानुपास्ते॥6॥

महादेव यदि ईश विगतभय, छिन्न लिंग क्यों ले त्रिशूल।
स्वामी को शिक्षा साधू को, सुत पत्नी क्या है अनुकूल॥
यदी अजन्मा सकल ज्ञानवित्, आर्दासुत क्यों कहा अनात्म।
सत् संक्षेप कथन से पशु वह, ज्ञानी कौन कहे परमात्म॥ 6॥

ॐ ह्रीं परम ज्ञानी परमात्मने नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

ब्रह्मा चर्माक्षसूत्री सुरयुवति-रसावेश-विभ्रान्तचेताः,
शम्भुः खट्वांगधारी गिरिपति-तनयापांग-लीलानुविद्धः।

विष्णुश्चक्राधिपः सन्दुहित-रमगमद् गोपनाथस्य मोहा,
दर्हन्विध्वस्तरागोजितसकलभयः कोऽयमेष्वाप्तनाथः ॥7॥

चर्म अक्षमाला युत ब्रह्मा, चित्त देवियों में विभ्रान्त।
महादेव खटिया पर सोते, पार्वती के मोह में क्लान्त॥
ग्वाल सुता का सेवन करते, विष्णू चक्ररत्न धारी।
इनमें राग के नाशक निर्भय, अर्हत् आप्त ज्ञानधारी॥ 7॥

ॐ ह्रीं आप्त अर्हन्त देवाय नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

एको नृत्यति विप्रसार्य ककुभां चक्रे सहस्रं भुजा,
नेकः शेषभुजङ्ग-भोगशयने व्यादाय निद्रायते।
दृष्टं चारुतिलोत्तमा-मुखमगा-देकश्चतु-र्वक्त्रता-
मेते मुक्तिपथं वदन्ति विदुषामित्येतदत्यद्भुतम् ॥8॥

सहस भुजाओं को फैलाकर, शिव करते चउदिश में नृत्य।
विष्णू शेष नाग शैया पर, सोते सुमुख खोलकर कृत्य॥
ब्रह्म तिलोत्तमा के मुख दर्शन, हेतू सुमुख बनाए चार।
विद्वत मोक्ष मार्ग ये कहते, वह आश्चर्य भरा संसार॥ 8॥

ॐ ह्रीं रत्नत्रयधारक मोक्षमार्ग स्वरूपाय नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

यो विश्वं वेद वेद्यं जननजलनिधेर्भंगिनः पारदृश्वा,
पौर्वापर्याविरुद्धं वचनमनुपमं निष्कलंकं यदीयम्।
तं वन्दे साधुवंद्यं सकलगुणनिधिं ध्वस्तदोषाद्विषन्तं,
बुद्धं वा वर्द्धमानं-शतदलनिलयं केशवं वा शिवं वा ॥9॥

विश्व जानने योग्य जानते, रागादिक भवदधि के पार।
पूर्वोपर के रोध हीन, निरुपम निर्दोष वचन संसार॥
साधु बन्ध रागादि नाशक, सर्वगुणों के स्वामी नाथ।
नाम कोई ब्रह्मा विष्णु शिव, बुद्ध वीर के चरणों माथ॥ 9॥

ॐ ह्रीं सर्वगुणोद्याय नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

माया नास्ति जटा-कपाल-मुकुटं चन्द्रो न मूर्धावली,
खट्वाङ्गं न च वासुकिर्न च धनुः शूलं न चोग्रं मुखम्।
कामो यस्य न कामिनी न च वृषो-गीतं न नृत्यं पुनः,
सोऽस्मान् पातु निरंजनो जिनपतिः सर्वत्र सूक्ष्मः शिवः ॥10॥

जटा मुकुट माया कपाल अरु, मूर्धावली न है खटवांग।
धनुष सर्प न शूल उग्रमुख, काम कामिनी न मालांग॥
नृत्य गीत अरु बैल नहीं है, सूक्ष्म निरञ्जन शिव आकार।
हम सबकी सब जगह जिनेश्वर, रक्षा करो करो भवपार॥ 10॥

ॐ ह्रीं सर्व व्याप्त जिनेन्द्राय नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

नो ब्रह्मांकितभूतलं न च हरेः शम्भोर्न मुद्रांकितं,
नो चन्द्रार्क-कराङ्कितं सुरपते-र्वज्राङ्कितं नैव च।
षड्वक्त्राङ्कित - बौद्धदेव - हुत - भुग्यक्षो- रगैर्नाङ्कितं-
नग्नं पश्यत वादिनो जगदिदं जैनेन्द्र-मुद्रांङ्कितम्॥11॥

जग को ब्रह्मा व्याप्त भू वाला, हरि शिव मुद्रा से भी व्याप्त।
चन्द्र सूर्य किरणों से सुरपति, वज्रांकित हे वादि! न आप्त॥
गणपति बौद्ध यक्ष अरु अग्नी, शेषनाग से देखो न व्याप्त।
वीतराग इस जग को वादी, देखो पूर्ण दिगम्बर आप्त॥ 11॥

ॐ ह्रीं परम वीतराग स्वरूपाय नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

मौञ्जी दण्ड-कमण्डलु-प्रभृतयो नो लाञ्छनं ब्रह्मणो,
रुद्रस्यापि जटा-कपाल मुकुटं-कौपीन-खट्वाङ्गनाः।
विष्णोश्चक्र-गदादि-शंख-मतुलं बुद्धस्य रक्ताम्बरं,
नग्नं पश्यत वादिनो जगदिदं जैनेन्द्र-मुद्राङ्कितम्॥12॥

मौजी दण्ड कमण्डल आदिक, ब्रह्मा बौद्ध का रक्तांबर।
गदा शंख चक्रादि विष्णु का, चिन्ह नहीं कहते जिनवर॥
जटा कपाल मुकुट खटवांगा, स्त्री रुद्र का चिन्ह नहीं।
हे वादी! देखो इस जग में, जिन मुद्रा तो नग्न रही॥ 12॥

ॐ ह्रीं दिगम्बर मुद्राधारकाय नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

नाहंकार-वशीकृतेन मनसा न द्वेषिणा केवलं,
नैरात्म्यं प्रतिपद्य नश्यति जने कारुण्य-बुद्ध्या मया।
राज्ञः श्रीहिमशीतलस्य सदसि प्रायो विदग्धात्मनो,
बौद्धौघान्सकलान् विजित्य स घटः पादेन विस्फालितः॥13॥

द्वेष भाव कुछ भी न मन में, मात्र करुण बुद्धी से युक्त।
मोक्ष मार्ग से भ्रष्ट हुए जो, आत्म शून्यता से संयुक्त॥

सभा लगी हिमशीतल नृप की, मानी हो करने को वाद।
मूढ़ बौद्ध भक्तों को जीता, घट को फोड़ा मार के लात॥ 13॥

ॐ ह्रीं भवभंजकाय नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

खटवाङ्गं नैव हस्ते न च हृदि रचिता लम्बते मुण्डमाला,
भस्माङ्गं नैव शूलं न च गिरिदुहिता नैव हस्ते कपालं।
चन्द्रार्द्धं नैव मूर्धन्यपि वृषगमनं नैव कण्ठे फणीन्द्रः,
तं वन्दे त्यक्तदोषं भवभयमथनं चेश्वरं देवदेवं॥14॥

हाथों में खट्वांग हृदय पर, रचित मुण्डमाला न होय।
तन पर भस्म शूल गिरि दुहिता, नहिं कपाल हाथों में कोय॥
चन्द्रावली शीश नहि कंठे, सर्प नहीं देवों का देव।
दोष मुक्त ईश्वर को बन्दूँ, जो त्रिलोक पति रहे सदैव॥ 14॥

ॐ ह्रीं निर्दोष त्रैलोक्याधिपतये नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

किं वाद्यो भगवानमेयमहिमा देवोऽकलंकः कलौ,
काले यो जनतासु धर्मनिहितो देवोऽकलङ्को जिनः।
यस्य स्फार-विवेक-मुद्रलहरीजाले प्रमेयाकुला,
निर्मग्ना तनुतेतरा भगवती ताराशिरःकम्पनम्॥15॥

सम्यक् श्रुत सागर की लहरों, से आकुल भगवति भगवान।
तारा का मस्तक विस्तृत कर, जिसने सहज जगाया ज्ञान॥
कलयुग में सत् पथ दिखलाए, जीते मिथ्यात्वादि कलंक।
रत्नत्रय के धारी ज्ञानी, वाद योग्य हैं क्या अकलंक॥ 15॥

ॐ ह्रीं मोक्षमार्ग प्रकाशक अकलंकाय नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

सा तारा खलुदेवताभगवती मन्याऽपि मन्यामहे,
षण्मासावधि-जाड्यसांख्य-भगवद् भट्टाकलंकप्रभोः ।
वाक्कल्लोल-परंपराभिरमते नूनं मनोमज्जन-
व्यापारं सहतेस्म विस्मितमतिः संताडितेतस्ततः॥16॥

भगवति मान तारा ने निज को, प्रभु अकलंक से वाद किया।
छह महिने में तर्क युक्ति से, प्रभु ने उसको मात दिया॥
आश्चर्य चकित हुए निश्चय से, यतः ततः मन भञ्जन वान।
ऐसा मान रहे हैं हम यह, अज्ञानी मिथ्यात्वी रहते॥ 16॥

ॐ ह्रीं अज्ञान निवारक 'विशद' ज्ञानधर जिनेन्द्राय नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

गणधर वलय स्तोत्र

जिनान् जितारति-गणान् गरिष्ठान्, देशावधीन् सर्व-परावधींश्च।
सत्-कोष्ठ-बीजादि-पदानुसारीन्, स्तुवे गणेशानपि-तद्-गुणाप्त्यै॥1॥

कर्म घातिया अरि को जीता, जो हैं सर्व गुणों में ज्येष्ठ।
देश सर्व परमावधि धारक, कोष्ठ बीज बुद्धी अति श्रेष्ठ॥
पदानुसारिणी बुद्धी आदिक, धारक गणधर देव महान।
उनके गुण की प्राप्ती हेतू, करते चरणों 'विशद' प्रणाम॥1॥

ॐ ह्रीं घातिकर्म निवारक गणधर देवाय नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

संभिन्न-श्रोतान्वित-सन्-मुनीन्द्रान्, प्रत्येक-सम्बोधित-बुद्ध-धर्मान्।
स्वयं-प्रबुद्धांश्च विमुक्ति-मार्गान्, स्तुवे गणेशानपि-तद्-गुणाप्त्यै॥2॥

संभिन्न श्रोतृत्व धारी जिन हे !, प्रत्येक बुद्ध अरु बोधित बुद्ध।
मोक्षमार्ग रूपी सु धर्ममय, आप स्वयं में स्वयं प्रबुद्ध॥
सच्चे मुनियों के स्वामी हैं, ऐसे गणधर देव महान्।
उनके गुण की प्राप्ती हेतू, करते चरणों 'विशद' प्रणाम॥2॥

ॐ ह्रीं बुद्धि ऋद्धि विशिष्ट गणधर देवाय नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

द्विधा मनःपर्यय-चित्-प्रयुक्तान्, द्विपञ्च-सप्तद्वय-पूर्व-सक्तान्।
अष्टांग-नैमित्तिक शास्त्र-दक्षान्, स्तुवे गणेशानपि-तद्-गुणाप्त्यै॥3॥

द्वय प्रकार मनपर्यय ज्ञानी, ऋजू विपुलमति पाया ज्ञान।
दश पूरब धारी मुनिवर हैं, चौदह पूर्व धारी गुणवान॥
अष्टांग महानिमित्त के ज्ञाता, शास्त्र कुशल गणधर भगवान।
उनके गुण की प्राप्ति हेतू, करते चरणों 'विशद' प्रणाम॥3॥

ॐ ह्रीं विशिष्ट ज्ञानी गणधर देवाय नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

विकुर्वणाख्यर्द्धि-महा-प्रभावान्, विद्याधरांश्चारण-ऋद्धि-प्राप्तान्।
प्रज्ञाश्रितान् नित्य-ख-गामिनश्च, स्तुवे गणेशानपि-तद्-गुणाप्त्यै॥4॥

महा प्रभाव विक्रिया ऋद्धी, धारी विद्या धारक नाथ !।
चारण ऋद्धी प्राप्त किए हैं, प्रज्ञावान आप हैं साथ॥
नित्य गगन में गमन करें जो, ऐसे गणधर देव महान्।
उनके गुण की प्राप्ती हेतू, करते चरणों 'विशद' प्रणाम॥4॥

ॐ ह्रीं विक्रिया ऋद्धियुक्त गणधर देवाय नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

आशीर्विषान् दृष्टि-विषान् मुनीन्द्रानुग्राति-दीप्तोत्तम-तप्त-तप्तान्।
महातिघोर-प्रतपःप्रसक्तान्, स्तुवे गणेशानपि-तद्-गुणाप्त्यै ॥5॥

आशीविष दृष्टी विष ऋद्धी, के धारक मुनिराज प्रधान,
अती उग्र तप दीप्त तपोतप, तप्त ऋद्धी धारक गुणवान।
महा घोर तप ऋद्धी धारक, ऐसे गणधर देव महान।
उनके गुण की प्राप्ती हेतू, करते चरणों 'विशद' प्रणाम॥5॥

ॐ ह्रीं तप ऋद्धियुक्त गणधर देवाय नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

वन्द्यान् सुरै-र्घोर-गुणांश्च लोके, पूज्यान् बुधै-र्घोर-पराक्रमांश्च।
घोरादि-संसद्-गुण-ब्रह्मयुक्तान्, स्तुवे गणेशानपि-तद्-गुणाप्त्यै॥6॥

देवों द्वारा वंदनीय हैं लोक पूज्य सदगुण धारी,
जगत् पूज्य ज्ञानी जीवों के, सद्गुण धारक ब्रह्मचारी।
घोर पराक्रम धारण करते, ऐसे गणधर देव महान,
उनके गुण की प्राप्ती हेतु, चरणों करते 'विशद' प्रणाम॥6॥

ॐ ह्रीं देव वंद्य गणधर देवाय नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

आमर्द्धि-खेलर्द्धि-प्रजल्ल-विडर्द्धि,-सर्वर्द्धि-प्राप्तांश्च व्यथादि-हंत्रून्।
मनो-वचः काय-बलोपयुक्तान्, स्तुवे गणेशानपि-तद्-गुणाप्त्यै॥7॥

आमर्द्धि अरु खेलर्द्धि युत, प्रजल्ल तथा विड ऋद्धीवान्।
पीड़ा आदिक हरने वाले, सर्व ऋद्धि हैं जिन्हें प्रधान॥
मन बल वचन काय ऋद्धी युत, ऐसे गणधर देव महान।
उनके गुण की प्राप्ती हेतू, करते चरणों 'विशद' प्रणाम॥7॥

ॐ ह्रीं बल ऋद्धियुक्त गणधर देवाय नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

सत् क्षीर-सर्पि-र्मधुरामृतर्द्धीन्, यतीन् वराक्षीण महानसांश्च।
प्रवर्धमानांस्त्रिजगत्-प्रपूज्यान्, स्तुवे गणेशानपि-तद्-गुणाप्त्यै॥8॥

सत्क्षीर स्रावी घृतस्रावी युत, मधुर स्रावी ऋद्धीधारी।
अमृत स्रावी अक्षीण महानस, वर्धमान वृद्धीकारी॥
तीन लोक में पूज्य मुनीश्वर, ऐसे गणधर देव महान।
उनके गुण की प्राप्ती हेतू, करते चरणों 'विशद' प्रणाम॥8॥

ॐ ह्रीं रस ऋद्धियुक्त गणधर देवाय नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

सिद्धालयान् श्रीमहतोऽतिवीरान्, श्रीवर्धमानर्द्धि विबुद्धि-दक्षान्।
सर्वान् मुनीन् मुक्तिवरा-नृषीन्द्रान्, स्तुवे गणेशानपि-तद्-गुणाप्त्यै॥9॥

सिद्धालय में आप विराजित, महत् श्री जिनवर अतिवीर।
वर्धमान ऋद्धी विशिष्ट युत, बुद्धि ऋद्धिधारी गुण धीर॥
मुक्ती वर ऋषि मुनी इन्द्र अरु, श्री गणनायक देव महान्।
उनके गुण की प्राप्ति हेतु, करते चरणों 'विशद' प्रणाम॥9॥

ॐ ह्रीं सिद्धालय स्थित जिनेन्द्र गणधर देवाय नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

नृ-सुर-खचर-सेव्या विश्व-श्रेष्ठ र्द्धि-भूषा,
विविध-गुण-समुद्रा मार-मातंग-सिंहाः।
भव-जल-निधि-पोता वन्दिता मे दिशन्तु,
मुनि-गण-सकलाः श्री-सिद्धिदाः सदृषीन्द्राः॥10॥

नर सुर विद्याधर से पूजित, श्रेष्ठ बुद्धि भूषित गुणखान।
विविध गुणों के सागर हैं जो, गज मन्मथ को सिंह समान॥
भव सागर को पोत रूप हैं, मुनि समूह के इन्द्र महान॥
सिद्धि दो हमको हे! भगवन, करते चरणों 'विशद' प्रणाम॥10॥

ॐ ह्रीं भवसिंधु तारक गणधर देवाय नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

नित्यं यो गणभृन्मन्त्र, विशुद्धसन् जपत्यमुम्।
आस्रवस्तस्य पुण्यानां, निर्जरा पापकर्मणाम्॥
नश्यादुपद्रवकश्चिद्, व्याधिभूत विषादिभिः।
सदसत् वीक्षणे स्वप्ने, समाधिश्च भवेन्मृतो॥11॥

गणधर वलय को शुद्ध मन से, नित्य पढ़ता भाव से।
निज पाप का वह नाश करता, पुण्य पावे चाव से॥
भूत विष आदि कुव्याधि, के उपद्रव नाश हों।
सब स्वप्न दिखते हैं शुभाशुभ, अंतिम समाधिवास हो॥11॥

ॐ ह्रीं पापनाशक गणधर देवाय नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

जाप्य-ॐ ह्रीं गणाधिपतये गणधर देवाय नमः।

गोम्मटेस-स्तुति

विसट्ट कंदोट्ट दलाणुयारं, सुलोयणं चंद-समाण-तुण्डं।
घोणाजियं चम्पय-पुप्फसोहं, तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं॥1॥

चन्द्र समान सुमुख अति सुंदर, लोचन नील कमल दल रूप।
चंपक पुष्प पराजित होता, देख नाशिका का स्वरूप॥
कामदेव पद से शोभित हैं, बाहुबली है जिनका नाम।
विश्व वंद्य श्री गोमटेश पद, मेरा बारंबार प्रणाम॥1॥

ॐ ह्रीं कामदेवपदप्राप्त श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

अच्छाय-सच्छं जलकंत-गण्डं, आबाहु-दोलंत-सुकण्णपासं।
गइन्द-सुण्डुज्जल-बाहुदण्डं, तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं॥2॥

जिनके स्वच्छ सुनिर्मल जल सम, शोभित सुन्दर उभय कपोल।
कर्ण कंध पर्यंत झूलते, बालों की संरचना गोल॥
गज सुण्डासम उभय भुजाएँ, गगन रूप शोभित अभिराम।
विश्व वंद्य श्री गोमटेश पद, मेरा बारंबार प्रणाम॥2॥

ॐ ह्रीं शुभ्रवदनप्राप्त श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

सुकण्ठ सोहा-जिय दिव्व-संखं, हिमालयुद्दाम-विसाल-कंधं।
सुपेक्खणिज्जायल-सुट्ठु-मज्झं, तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं॥3॥

दिव्य शंख की शोभा को भी, जीत रहा है सुंदर कंठ।
विशद हिमालय की भांति है, वक्षस्थल जिनका उत्कंठ॥
अचल सुसुंदर कटि प्रदेश है, सुदृढ़ प्रेक्षणीय अभिराम।
विश्व वंद्य श्री गोमटेश पद, मेरा बारंबार प्रणाम॥3॥

ॐ ह्रीं उच्चपदप्राप्त श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

विंज्झायलग्गे पविभासमाणं, सिहामणिं सव्व-सुचेंदियाणं।
तिलोय-संतोसय-पुण्णचंदं, तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं॥4॥

विंध्य सुगिरि के अग्र भाग पर, शुभम् कांति से दमक रहे।
सब चैत्यों के शिखामणि हो, पूर्ण चाँद सम चमक रहे॥
तीन लोकवर्ती जीवों को, सुख देते अनुपम अभिराम।
विश्व वंद्य श्री गोमटेश पद, मेरा बारंबार प्रणाम॥4॥

ॐ ह्रीं सर्वसौख्यप्रदायक श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

लया-समक्कंत-महासरीरं, भव्वावलीलद्ध-सुकप्परुक्खं।
देविंदविंदच्चिय-पायपोम्मं, तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं।।5।।

लिपटी महत् लताएँ जिनके, महत् देह पर चारों ओर।
कल्पवृक्ष सम भवि जीवों को, कर देते हैं भाव विभोर।।
देवेन्द्रों के द्वारा अर्चित, चरण कमल जिनके अभिराम।
विश्व वंद्य श्री गोमटेश पद, मेरा बारंबार प्रणाम।।5।।

ॐ ह्रीं देवार्चनीय श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

दियंबरो जो ण च भीइ-जुत्तो, ण चांबरे सत्तमणो विसुद्धो।
सप्पादि-जंतु-प्फुसदो ण कंपो, तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं।।6।।

पूर्ण दिगंबर निर्भय साधक, जो हैं निज आतम के भक्त।
मन विशुद्ध जिनका वस्त्रों में, होता नहीं, कभी आसक्त।।
सर्पादिक की फुंकारों से, कंपित न होते अभिराम।
विश्व वंद्य श्री गोमटेश पद, मेरा बारंबार प्रणाम।।6।।

ॐ ह्रीं स्थिरध्यानप्राप्त श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

आसां ण जो पोक्खदि सच्छदिट्ठी, सोक्खे ण वाञ्छा हयदोसमूलं।
विरायभावं भरहे विसल्लं, तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं।।7।।

स्वच्छ दृष्टि शुभ बुद्धी वाले, दोष मूल है मोह विहीन।
नाश किया उस महाबली को, सुख की आशा से भी हीन।।
किया पराजित भ्रात भरत को, शल्य रहित शोभित अभिराम।
विश्व वंद्य श्री गोमटेश पद, मेरा बारंबार प्रणाम।।7।।

ॐ ह्रीं विशुद्ध दृष्टि श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

उपाहि-मुत्तं धण-धाम-वज्जियं, सुसम्मजुत्तं भय मोह-हारय।
वस्सेय-पज्जंत-मुववास-जुत्तं, तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं।।8।।

सर्व परिग्रह रहित आप हैं, धन अरु धाम के त्यागी देव।
मद अरु मोह जीतने वाले, क्षायिक समदृष्टि हैं एव।।
एक वर्ष पर्यंत अखंडित, 'विशद' किया अनशन अभिराम।
विश्व वंद्य श्री गोमटेश पद, मेरा बारंबार प्रणाम।।8।।

ॐ ह्रीं निष्पृह साधक श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

जाप्य-ॐ ह्रीं गोमटेश बाहुबली जिनेन्द्राय नमः।

श्री सरस्वती स्तोत्रम् (संस्कृत)

चन्द्रार्ककोटिघटितोज्ज्वलदिव्यमूर्ते, श्रीचन्द्रिकाकलित-निर्मल-शुभ्रवस्त्रे।
कामार्थदायि-कलहंस-समाधिरूढे, वागीश्वरि प्रतिदिनं मम रक्ष देवि॥1॥

कोटी चन्द्र सूर्य से भी अति, उज्ज्वल दिव्य मूर्ति पावन।
धवल चाँदनी से अति निर्मल, शुभ्र वस्त्र अति मनभावन॥
समतामय कामार्थ दायिनी, हंसारूढ़ दिव्य आसन।
रक्षा करो मात जिनवाणी, प्रतिदिन बारंबार नमन्॥1॥

ॐ ह्रीं इच्छित फलप्रदायक वाग्वादिनी देव्यै नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

देवासुरेन्द्रनतमौलिमणिप्ररोचिः, श्रीमंजरी निविड-रंजित पाद पद्मे।
नीलालके प्रमद-हस्तिसमानयाने, वागीश्वरि प्रतिदिनं मम रक्ष देवि॥2॥

नमित सुरासुर के मुकुटों की, मणिमय आभा कांतीमान।
सघन मंजरी से अनुरंजित, पाद पद्म हैं आभावान॥
नील अलीसम केश सुसुंदर, प्रमद हस्ति सम गगन गमन।
रक्षा करो मात जिनवाणी, प्रतिदिन बारंबार नमन्॥2॥

ॐ ह्रीं सुरनरपूजित वाग्वादिनी देव्यै नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

केयूर-हार-मणि-कुंडल-मुद्रिकाद्यैः, सर्वांग-भूषण-नरेन्द्र-मुनीन्द्र वंद्ये।
नाना सुरत्नवरनिर्मलमौलियुक्ते, वागीश्वरि प्रतिदिनं मम रक्ष देवि॥3॥

मुक्तामणि से निर्मित कुण्डल, हार मुद्रिका अरु केयूर।
निर्मल रत्नावलि सुसज्जित, मुकुट सुशोभित है भरपूर॥
सर्व अंग भूषण से सज्जित, नर मुनीन्द्र भी करें नमन्।
रक्षा करो मात जिनवाणी, प्रतिदिन बारंबार नमन्॥3॥

ॐ ह्रीं सर्वांग सुशोभित वाग्वादिनी देव्यै नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

मंजीरकोत्कनककंकणकिंकणीनां, काञ्चयाश्च झंकृतरवेण विराजमाने।
सद्धर्म वारिनिधिसंततिवर्धमाने, वागीश्वरि प्रतिदिनं मम रक्ष देवि॥4॥

कंकण कनक करधनी सुंदर, कंठ में शोभित कंठाहार।
नूपुर झंकृत होते अनुपम, इत्यादि शोभित उपहार।।
धर्म वारि निध की संतति को, नित प्रति करते हैं वर्धन।
रक्षा करो मात जिनवाणी, प्रतिदिन बारंबार नमन्।।4।।

ॐ ह्रीं धर्मवृद्धिकर सुशोभित वाग्वादिनी देव्यै नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

कंकेलि-पल्लव-विनिंदित-पाणियुग्मे, पद्मासने दिवस-पद्मसमान वक्त्रे।
जैनेन्द्रवक्त्र-भवदिव्य-समस्तभाषे, वागीश्वरि प्रतिदिनं मम रक्ष देवि।।5।।

कदली दल को निंदित करते, मृदुतम जिनके दोनों हाथ।
विकसित कमल समान सुमुख है, कमलासन पर शोभित नाथ।।
सब भाषामय दिव्य देशना, जिन मुख से निःसृत पावन।
रक्षा करो मात जिनवाणी, प्रतिदिन बारंबार नमन्।।5।।

ॐ ह्रीं दिव्यदेशना प्रदायक वाग्वादिनी देव्यै नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

अर्द्धेन्दुमंडितजटा-ललितस्वरूपे, शास्त्रप्रकाशिनि समस्तकलाधिनाथे।
चिन्मुद्रिका जपसरामय पुस्तकांके, वागीश्वरि प्रतिदिनं मम रक्ष देवि।।6।।

अर्ध चन्द्र सम जटा सुमंडित, कला निधी सुंदर तम रूप।
धारण किए गोद में पुस्तक, जिनका चित् चैतन्य स्वरूप।।
सर्व शास्त्र का करे प्रकाशन, अजपाजाप मय शुभ आसन।
रक्षा करो मात जिनवाणी, प्रतिदिन बारंबार नमन्।।6।।

ॐ ह्रीं श्रुतज्ञान प्रकाशक वाग्वादिनी देव्यै नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

डिंडीरपिंड हिमशङ्खसिताभ्रहारे, पूर्णेन्दुबिंबरुचिशोभित दिव्यगात्रे।
चांचल्यमानमृगशावललाटनेत्रे, वागीश्वरि प्रतिदिनं मम रक्ष देवि।।7।।

सागर फेन समान सुसुंदर शंख लिए हैं बर्फ समान।
पूर्ण चन्द्रमा सम शोभित तन, अभ्रहार ज्यों शोभावान।।
दिव्य ललाट सहित चंचल अति, हिरणी शावक समलोचन।
रक्षा करो मात जिनवाणी, प्रतिदिन बारंबार नमन्।।7।।

ॐ ह्रीं सर्वरक्षक वाग्वादिनी देव्यै नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

पूज्ये पवित्रकरणोन्नतकामरूपे, नित्यं फणीन्द्र गरुड़ाधिप किं नरेन्द्रैः।
विद्याधरेन्द्र सुरयक्षसमस्तवृन्दैः, वागीश्वरि प्रतिदिनं मम रक्ष देवि।।8।।

काम रूपिणी हे ! करणोन्नत, जगत् पूज्य तुम परम पवित्र।
नाग गरुण किन्नर के स्वामी, पूजा करते सुर नर नित्य।।
सर्व यक्ष विद्या धरेन्द्र नित 'विशद' करें तुमको वन्दन।
रक्षा करो मात जिनवाणी, प्रतिदिन बारंबार नमन्।।8।।

ॐ ह्रीं जगत्पूज्या वाग्वादिनी देव्यै नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

श्री सरस्वती नाम स्तोत्रम् (अनुष्टुप छंद)

सरस्वत्या प्रसादेन, काव्यं कुर्वन्ति मानवाः।
तस्मान्निश्चलभावेन, पूजनीया सरस्वती।।
श्री सर्वज्ञमुखोत्पन्ना, भारती बहुभाषिणी।
अज्ञानतिमिरं हन्ति, विद्याबहुविकासिनी।।9।।

सरस्वती की कृपा से मानव, करें काव्य की संरचना।
इसीलिए निश्चल भावों से, पूज्य सरस्वती को जपना।।
श्री सर्वज्ञ कथित जिनवाणी, बहु भाषामय जिनका ज्ञान।
हनन करे अज्ञान तिमिर का, विद्या का करती गुणगान।।9।।

ॐ ह्रीं अज्ञान नाशक वाग्वादिनी देव्यै नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

सरस्वती मया दृष्टा, दिव्याकमललोचना।
हंसस्कन्धसमारुढ़ा, वीणापुस्तकधारिणी।।
प्रथमं भारती नाम, द्वितीयं च सरस्वती।
तृतीयं शारदा देवि, चतुर्थं हंसगामिनी।।10।।

दिव्य कमल लोचन से देवी, सरस्वती देखो हमको।
हंसारूढ़ सुपुस्तक वीणा, धारी वंदन है तुमको ।।
प्रथम भारती नाम आपका, द्वितीय सरस्वती है नाम।
तीजा नाम शारदा देवी, हंसगामिनी चौथानाम।।10।।

ॐ ह्रीं विभिन्न नामांकित वाग्वादिनी देव्यै नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

पंचमं विदुषां माता, षष्ठं वागीश्वरि तथा।
कुमारी सप्तमं प्रोक्तं, अष्टमं ब्रह्मचारिणी।।
नवमं च जगन्माता, दशमं ब्राह्मिणी तथा।
एकादशं तु ब्रह्माणी, द्वादशं वरदा भवेत्।।11।।

विदुषां माता नाम पाँचवां, वागीश्वरी है छठवां नाम।
सप्तम नाम कुमारी पावन, ब्रह्मचारिणी अष्टम नाम।।
नौवाँ नाम जगत् माता है, ब्राह्मिणी जिनका दशवां नाम
ग्यारहवां जानो ब्रह्माणी, वरदा है बारहवां नाम।।11।।

ॐ ह्रीं यथानाम गुणधारकाय वाग्वादिनी देव्यै नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

वाणी त्रयोदशं नाम, भाषा चैव चतुर्दशम्।
पंचदशं तु श्रुतदेवी, षोडशं गौर्निगद्यते।।
एतानि श्रुतनामानि, प्रातरुत्थाय च पठेत्।
तस्य संतुष्यति माता, शारदा वरदा भवेत्।।12।।

वाणी नाम कहा तेरहवां, चौदहवां है भाषा नाम।
श्रुतदेवी है नाम पंचदश, सोलहवां है गौरी नाम।।
प्रात: उठकर श्रुतदेवी के, इन सब नामों को पढ़ते।
कर देती संतुष्ट सुमाता, विद्या में आगे बढ़ते।।12।।

ॐ ह्रीं संतोष प्रदायक वाग्वादिनी देव्यै नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

सरस्वती नमस्तुभ्यं, वरदे कामरूपिणी।
विद्यारंभ करिष्यामि, सिद्धिर्भवतु मे सदा।।13।।

इच्छित वर देने वाली, है सरस्वती ! है तुम्हें नमन्।
सिद्धि दो हमको हे माता! काम रूपिणी तुम्हे नमन्।।
विद्या का आरंभ करूँ मैं, हे ! ब्रह्माणी तुम्हे नमन्।
'विशद' ज्ञान को देने वाली, श्री जिनवाणी तुम्हें नमन्।।13।।

ॐ ह्रीं इच्छित फलप्रदायक वाग्वादिनी देव्यै नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

जाप्य-ॐ णमो अरहंताणं वद-वद वाग्वादिनी स्वाहा।

चौबीस तीर्थंकर स्तवन

दोहा - मंगलमय मंगल परम, विशद ज्ञान के नाथ।
तीर्थंकर चौबीस के, चरण झुकाते माथ।।

तर्ज : वन्देमातरम्...

तीर्थंकर वृषभेष ने भू पर, धर्म ध्वजा फहराई है।
केवलज्ञान के द्वारा प्रभु ने, जिनवाणी भी गाई है।।
असि मसि कृषि वाणिज्य कला अरु, शिल्प का भी उपदेश दिया।
भूखे को भोजन की सुविधा, पाने का संदेश दिया।।
आदिम तीर्थंकर बन प्रभु ने, धरती पर अवतार लिया।
स्वयं बुद्ध होकर भगवन् ने, संयम दे उपकार किया।।
मोक्ष मार्ग पर सबसे पहले, चलकर जग को बता दिया।
सरल किया है मोक्ष का मारग, बढ़ो इसी पर जता दिया।।1।।

ॐ ह्रीं आदि धर्मप्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/ प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

कर्मों का महाराजा बनकर, जीवों को ललचाता है।
मोह महा चक्री बनकर के, जग को नाच नचाता है।।
उस राजा को जीत के प्रभु जी, इस जगती पर विजित हुये।
द्वितिय तीर्थंकर इस जग में, विजय श्री पा अजित हुये।।
अजिनाथ बनकर के तुमने, राग द्वेष को जीत लिया।
सार्थक नाम आपने पाकर, कर्मों को भयभीत किया।।
कर्म विजेता बनने हेतू, हमको भी दे दो वरदान।
अजितनाथ जी तव चरणों का, विशद लगाऊँमैं भी ध्यान।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/ प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

कठिन जीतना है कषाय का, उसको कर दिखलाया है।
कर्म शत्रु जो लगे पुराने, उनको मार भगाया है।।

सारे जग के कार्य असम्भव, अपने हाथों आप किये।
मुक्ती पथ से हार न मानी, कितने कड़वे घूँट पिये।।
संभवनाथ जी संभव कर दो, मोक्ष मार्ग मेरे भी हेत।
भव समुद्र को पार करूँ मैं, पा जाऊँ आतम का भेद।।
भटक रहे हैं चरण शरण बिन, अपनी शरण हमें दीजे।
देकर हमको 'विशद'' सहारा, अपने पास बुला लीजे।।3।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/ प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

भव बंधन से छूट गये जो, बन गये हैं शिव के नंदन।
चर अरु अचर जीव सब जग के, करते हैं पद का वंदन।।
जिस पदवी को तुमने पाया, करते उसका अभिनंदन।
अभिनंदन तव चरण कमल की, धूलि कही शीतल चंदन।।
आत्म ध्यान को पाकर तुमने, मैटा भव का आक्रंदन।
तप के द्वारा तपा तपाकर, आत्म बनाया है कुंदन।।
मन में आकुलता छाई मम, कर्म ने डाला है बंधन।
अभिनंदन जी अभिवंदन है, करदो कर्मों का खण्डन।।4।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदन जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/ प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

राज ताज गजराज तुरग को, त्याग के वन की शरण लही।
छोड़के सारे जग का वैभव, संयम तप की राह गही।।
कुमति त्यागकर सुमति प्राप्त कर, सुमति नाम को पाया है।
केवलज्ञान जगाकर तुमने, सार्थक नाम बनाया है।।
लोकालोक प्रकाशित होता, सुमतिनाथ की शुभ मति से।
केहरि किन्नर नरपति द्वारा, पूज्य हुये प्रभु सुरपति से।।
सुमतिनाथ से सुमति के द्वारा, प्राणी पाते शुभ मति को।
वंदन करके सुमतिनाथ को, पाना हमको सद् गति को।।5।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/ प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

पद्माकर में पद्म प्रफुल्लित, होता है दिनकर को देख।
पद्म प्रभु के पाद पद्म में, अंकित लाल पद्म का लेख॥
पाद पद्म में चतुर्दिशा से, श्रावक दौड़े आते हैं।
भक्ति भाव से वंदन करके, प्राणी मधु रस पाते हैं॥
पद्म पराग चाहता मैं भी, पाद पद्म को पाता हूँ।
पद्म प्रभु आशीष दीजिये, पद में शीश झुकाता हूँ॥
चरणों में वश अर्ज यही है, कृपा नाथ ! हम पर कीजे।
दया निधे हे ! पद्म प्रभु जी, हमको पंथ बता दीजे॥6॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

सुंदर पारस मणि भी फीकी, पड़ती प्रभु की शोभा से।
जिन सुपार्श्व जी दमक रहे हैं, लोक शिखर पर आभा से॥
जिनके दर्शन कर लेने पर, पूरी होती आशाएँ।
विशद नष्ट हो जाती जितनी, लगी हुई थीं बाधाएँ॥
तीन काल में अनुपम पारस, तीन लोक के शिखामणी।
ऋषि मुनियों के मध्य में प्रभु जी, आप हैं उत्तम पार्श्वमणी॥
लोकालोक प्रकाश करे वह, पाया तुमने केवलज्ञान।
इसीलिये तो हुये धरा पर, आप जहाँ में सर्व महान्॥7॥

ॐ ह्रीं श्री सुपारस जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

शरद चंद्र चंदन से चर्चित, करता जिनके चरण कमल।
नहीं जहाँ में दिखता कुछ भी, चंद्र प्रभु सम धवल अमल॥
सूर्य चंद्र लज्जित होकर के, चरणों में झुक जाते हैं।
चंद्रप्रभु की चरण वंदना, करने हेतू आते हैं॥
चंद्र चाँदनी की शीतलता, हाथ जोड़ सिरनाती है।
चंद्र मणी तो प्रमुदित होकर, सादर शीश झुकाती है॥
रात कुमुदिनी खिल जाती है, चंद्र बिम्ब के दर्शन से।
विशद ज्ञान का फूल यों खिलता, चंद्र प्रभु के चरणन से॥8॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/ प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

धवल पुष्प पंक्ती सरवर में, मोहित करती जग जन को।
पुष्पदंत की सुंदर सूरत, करती मोहित तन मन को।।
सूर्य उदय को देख कमल ज्यों, नत मस्तक हो जाता है।
पुष्पदंत के शुभादर्श से, मम मस्तक झुक जाता है।
पुष्प सुकोमल और सुगंधित, सरवर को शोभित करता।
अपनी आभा के द्वारा जो, जन-जन के मन को हरता।।
शंख पुष्प की शोभा प्रभुजी, पुष्पदंत का तन पाता।
चरण वंदना करता हूँ मैं, विशद भाव से गुण गाता।।9।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/ प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

वीतरागता धारण करते, शीतलता को मात करें।
शीतल नाथ जिनेश्वर जग में, समता की बरसात करें।
चंदन सी शीतलता मिलती, प्रभु पद के स्पर्शन से।
निज आतम की छवि दिखती है, शीतलनाथ के दर्शन से।।
जल स्वभाव में आ जाता तब, हो जाता है अतिशीतल।
कतक योग से नश जाता है, जल में हो जो भी कलमल।।
शीतल नाथ जी शीतलता दो, कर दो मेरे कर्म शमन।
विशद ज्ञान से भर दो हमको, करते हैं शत् बार नमन।।10।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/ प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

आश्रय पाने जग के प्राणी, चरण में तेरे आते हैं।
शुद्ध भाव से आश्रय पाकर, मन वांछित फल पाते हैं।।
आश्रय बिन प्रभु श्रेय नाथ के, भव-भव में भटकाते हैं।
जो पा जाते चरण शरण को, निःश्रेयस पा जाते हैं।।
आश्रय दे दो पद पंकज की, मुझको श्री श्रेयांस प्रभो।
श्रेयस्कर मम् जीवन कर दो, शीश झुकाता चरण विभु।।

आश्रय दाता हो जग जन के, मंगलमय हैं आप महाँ।
आश्रय चाह रहा है सेवक, नाशो मेरा सर्व जहाँ॥11॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/ प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

महाकाम को शील शस्त्र से, क्षण में जिसने जीत लिया।
वासुपूज्य जिनके चरणों में, काम ने माथा टेक दिया॥
गर्भ जन्म तप ज्ञान मोक्ष ये, पंच कल्याणक गाये हैं।
चम्पापुर नगरी में सारे, वासुपूज्य ने पाये हैं॥
रूप आपका लखकर मेरे, नयन सृजल हो जाते हैं।
चरण वंदना करने हेतू, भाव रोक नहिं पाते हैं॥
वासुपूज्य तुम जगत पूज्य हो, आया हूँ तव चरणों में।
'विशद' मुक्ति न पाई जब तक, वशे रहो मम नयनों में॥12॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/ प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

चार घातिया कर्म नाशकर, विमलनाथजी विमल हुये।
लोकालोक प्रकाशक होकर, 'विशद' ज्ञान से प्रबल हुये॥
सकल चराचर जीव जगत् के, विमल चरण को पाते हैं।
कर्म नाशकर अपने सारे, विमल स्वयं हो जाते हैं॥
द्रव्य भाव नो कर्म नाशकर, निर्मलता को पाता है।
विमल अमल संयम के द्वारा, निर्मल हृदय बनाता है॥
विमल चरण कमलों से फैले, सारे जग में ज्ञान सुवास।
विमलनाथ शक्ती दो इतनी, 'विशद' ज्ञान में हो मम वास॥13॥

ॐ ह्रीं विमल गुणन्वित श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/ प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

प्रभु अनंत भगवंत कंत अब, मुझको भी धीमंत करो।
ज्ञान अनन्त हमें दो भगवन, जन्म मरण का अंत करो॥
नहीं हो जिसका अंत कभी वह, ज्ञान सुधा बरसाते हैं।
आते जो भी संत चरण में, भव का अंत पा जाते हैं॥

कर्मानन्त का छेदन करके, गुण अनन्त तुव पाये हैं।
मोह शत्रु पर विजय प्राप्तकर, जिनानन्त कहलाये हैं।।
सुर नर किन्नर विद्याधर भी, स्तुति करने आते हैं।
ऋषि मुनि यति गणधर भक्ती कर, सुख अनंत पा जाते हैं।।14।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/ प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

धर्म कर्म का मर्म धरा पर, धर्मनाथ जी से होता।
कर्म नाशकर नर्म भाव से, बीज पुण्य का भी बोता।।
धर्म गर्म करता तप करके, वसु कर्मों को दहता है।
शर्म त्याग कर देता सारी, पूर्ण दिगम्बर रहता है।।
धर्मनाथ के साथ धर्म की, ध्वजा हमें फहराना है।
समता का सागर धरती पर, धर्म से ही लहराना है।।
धर्म भावना से भरकर मैं, धर्मनाथ पद पाता हूँ।
धर्मनाथ जी तव चरणों में, विशद भावना भाता हूँ।।15।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/ प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

महा शांति के दाता जग में, प्रभुवर शांतीनाथ हुये।
कामदेव तीर्थंकर चक्री, त्रय पद जिनको साथ हुये।।
क्रांतिकारि भी शांती पाते, जिनके पद आराधन से।
द्वेष दम्भ छल डरकर भागें, जग में मानव जीवन से।।
महाकाल को संयम द्वारा, तुमने क्षण में ध्वस्त किया।
कामदेव होकर के प्रभु ने, काम शत्रु को पस्त किया।।
शांतिनाथ शांति दो हमको, शांती की भिक्षा माँगें।
विशद शांति समता पाकर हम, आतम के हित में लागें।।16।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/ प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

छह खण्डों का वैभव पाकर, भूल स्वयं को भोग किया।
निज वैभव का भान हुआ तो, कण की भाँति त्याग दिया।।

धर्म चक्र लेकर के रण में, कुन्थुनाथ जी उतर गये।
कर्म शत्रु के सर पर चढ़कर, भव समुद्र से उभर गये।।
कुन्थुनाथ जिनराज राज तज, आत्म तत्त्व का रस आया।
शुद्धातम का ध्यान लगाकर, महाराजा पद को पाया।।
कुन्थुनाथ जी कृपा करो मम्, ज्ञानामृत से हृदय भरो।
मोह तिमिर छाया नयनों का, विशद ज्ञान से दूर करो।।17।।

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/ प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

त्रय पद धारी जग उपकारी, अरहनाथ जग में नामी।
राग आग को त्याग किया है, बने आत्म धन के स्वामी।।
कुपथ का खण्डन करने वाली, हित-मित-प्रिय तेरी वाणी।
जिन सूत्रों की प्रतिपादक है, अतः कहाती जिनवाणी।।
अरहनाथ जी राह दिखा दो, मोक्ष महल में जाने की।
लगन लगी है मेरे मन में, जग से मुक्ती पाने की।।
अरहनाथ जी नहीं मिला है, जग में कोइ तेरी सानी।
विशद ज्ञान आचरण प्राप्त कर, बन जाऊँ केवलज्ञानी।।18।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/ प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

मोह मल्ल को मार गिराया, आप हुए मल्लों के नाथ।
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण तप, आराधन को लिया है साथ।।
काम अग्नि की तीव्र ज्वलन से, जलता है यह जग सारा।
शील समुद्र से जल भर करके, छोड़ी तुमने जलधारा।।
मल्लिनाथ के पद में नत हैं, इस जग में जो भी हैं मल्ल।
छूमंतर होती दर्शन से, मन में लगी हुई जो शल्य।।
मल्लिनाथ तव शील के आगे, हार काम ने भी मानी।
शील स्वभावी बना दीजिये, 'विशद' प्रतिज्ञा हम ठानी।।19।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/ प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

मुनिसुव्रत जी ने मुनि बनकर, महाव्रतों को वरण किया।
द्रव्य भाव से रत्नत्रय को, स्वयं बोध से ग्रहण किया॥
निश्चय अरु व्यवहार मार्ग का, सुन्दर ढंग से कथन किया।
सप्त तत्व अरु नौ पदार्थ का, आत्म ध्यान से मथन किया॥
संशय अरु अज्ञान से पीड़ित, जग में जो भी प्राणी हैं।
मुनिसुव्रत की मंगलवाणी, उन सबकी कल्याणी है॥
मुनिसुव्रत ने संयम सरिता, जन मानस में लहराई।
पद पंकज में मुनिसुव्रत के, 'विशद' भावना शुभ भाई॥20॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/ प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

नील कमल के सिंहासन पर, नमीनाथ जिनवर स्वामी।
नील गगन में अधर विराजे, नमी प्रभु हैं शिवगामी॥
निरालम्ब निर्मल निर्भय हो, नील गगन में जिनका वास।
तप्त स्वर्ण सम तन अति सुन्दर, प्रहसित होती सदा सुवास॥
नमीनाथ ने निज कमियों, को एक-एक कर दूर किया।
भोग रोग के नाश करन को, आत्म योग भरपूर किया॥
नमीनाथ जी साथ चाहते, मुक्ती पथ पर बढ़ने को।
'विशद' सहारा देना हमको, सिद्ध शिला पर चढ़ने को॥21॥

ॐ ह्रीं श्री नमीनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/ प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

राह पे बढ़ते हुये सुना था, पशुओं का जब आक्रन्दन।
सृजल हुआ था हृदय आपका, जैसे हो शीतल चंदन॥
रथ को मोड़ दिया था प्रभु ने, ऊर्जयन्त पर्वत की ओर।
गिरनारी के शीश पे चढ़कर, तप में लीन हुये अतिघोर॥
अम्बर तजकर हुये दिगम्बर, ध्यान लगाया आतम का॥
नेमि जिनेश्वर बनकर तुमने, पद पाया परमातम का॥

सारे जग की आशा त्यागी, वीतरागता को पाया।।
शरण छोड़कर सारे जग की, 'विशद' शरण तेरी आया।।22।।

ॐ ह्रीं श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/ प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

घोर उपद्रव करते-करते, हार काल ने भी मानी।
सारे जहाँ के लोगों ने तब, तप की शक्ती पहिचानी।।
शुक्ल ध्यान में लीन हुये थे, सप्त तत्त्व का मनन किया।
पार्श्व प्रभू ने तप अग्नी से, कर्म शत्रु का हनन किया।।
चिंतामणि चिंतन करने पर, इच्छित फल को देते हैं।
पार्श्व प्रभू का चिंतन करके, मुक्ति वधू पा लेते हैं।।
पार्श्वनाथ के पद स्पर्श को, यह जग भरता है आँहें।
पार्श्व प्रभू के 'विशद' चरण में, पारस बनने की चाहें।।23।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/ प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

हिंसा का जब जोर बढ़ा था, इस भारत की भूमी पर।
दास प्रथा खुलकर हँसती थी, ऊँचा था पापी का सर।।
'सत्य अहिंसा परमो धर्मः', शुभ नारा गुंजाया था।
केवलज्ञान का दीप वीर ने, अपने हृदय जलाया था।।
ध्यान अग्नि से महावीर ने, केवलज्ञान जगाया था।
नर जीवन का सार जहाँ के, हर प्राणी ने पाया था।।
युगों-युगों तक दिव्य देशना, वर्धमान की साथ रहे।
वीर प्रभू के पद पंकज में 'विशद' हमारा माथ रहे।।24।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/ प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

दोहा- चौबीसों जिनराज को, नमन करूँ कर जोर।
कदम-कदम बढ़ता चलूँ, मोक्ष महल की ओर।।

ॐ ह्रीं श्री ऋषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/ प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

विषापहार स्तोत्र विधान एवं दीपार्चना प्रारम्भ

सर्व विघ्न विनाशक

स्वात्मस्थितः सर्वगतः समस्त, व्यापार वेदी वि-निवृत्तसंगः।
प्रवृद्धकालोप्-यजरो वरेण्यः,पाया-दपायात्-पुरुषः पुराणः ॥1॥

श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें॥
आत्मरूप में संस्थित हैं अरु, त्रिभुवन के हैं पथगामी।
वेत्ता हैं सब व्यापारों के, अपरिग्रही हैं जिन स्वामी॥
दीर्घायू से सहित आप हैं, वृद्ध अवस्था से भी हीन।
श्रेष्ठ पुराण नरोत्तम जग में, जो विनाश से पूर्ण विहीन॥
आदिनाथ जिन स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं ऋद्धि युक्त श्री ऋषभदेव चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/ प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

अचिन्त्य महिमावान

परै-रचिन्त्यं युगभारमेकः, स्तोतुं वहन्योगिभिरप्-यशक्यः।
स्तुत्योऽद्य मेऽसौ वृषभो न भानोः, किमप्रवेशे विशति प्रदीपः ॥2॥

श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें॥
युग का भार विचिन्तित जिसने, अन्य अकेले ही धारा।
एवं जिनका गुण कीर्तन भी, सम्भव न मुनियों द्वारा॥
अभिनंदन के योग्य मेरे वह, श्री वृषभ दुख के हर्त्ता।
रवि अभाव में हे प्रभुवर ! क्या, दीप प्रवेश नहीं करता॥
आदिनाथ जिन स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो ओहि जिणाणं ऋद्धि युक्त श्री ऋषभदेव चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/ प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

इच्छित फलदर्शक

तत्त्याज शक्रः शकनाभिमानं, नाहं त्यजामि स्तवनाऽनुबन्धम्।
स्वल्पेन बोधेन ततोऽधिकार्थं, वातायनेनेव निरूपयामि ।।3।।

श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें।।
तव संस्तुति करने का भी जब, त्याग चुका मद है सुरपति।
पर में तव गुण गाने का भी, करे न उद्यम हे जिनपति ! ।।
वातायन सम सीमित होकर, अल्प ज्ञान से मैं इस क्षण।
करता हूँ उनसे विस्तृत अति, व्यापक अर्थ का मैं निरुपण।।
आदिनाथ जिन स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो परमोहि जिणाणं ऋद्धि युक्त श्री ऋषभदेव चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/ प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

विद्यादायक

त्वं विश्वदृश्वा सकलै-रदृश्यो, विद्वा-नशेषं निखिलै-रवेद्यः।
वक्तुं क्रियान्कीदृश मित्-यशक्यः, स्तुतिस्ततोऽशक्तिकथा तवास्तु।।4।।

श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें।।
आप सभी के ज्ञाता दृष्टा, किन्तू सबसे आदर्शित।
वेत्ता भी हो आप सभी के, विदित नहीं हो स्पर्शित।।
कितने हैं ? कैसे हैं ? प्रभुजी, बता नहीं पाते ज्ञानी।
प्रभु तव संस्तुति से प्रगटित हो, मेरी शक्ती अन्जानी।।
आदिनाथ जिन स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोहि जिणाणं ऋद्धि युक्त श्री ऋषभदेव चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/ प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

अज्ञानता विनाशक

व्यापीडितं बालमिवात्मदोषै- रुल्लाघतां लोकमवापिपस्त्वम्।
हिताहितान्वेषणमांद्यभाजः, सर्वस्य जन्तोरसि बालवैद्यः ॥5॥

श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें॥
जो शिशुओं सम व्याकुल जग में, अपने दोषों के कारण।
उन दोषों का पूर्ण रूप से, किया आपने है वारण॥
मूढ़ बुद्धि हित और अहित का, कर न पाते हैं निर्णय।
बाल वैद्य बनकर निश्चय से, करते भव रोगों का क्षय॥
श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अणंतोहि जिणाणं ऋद्धि युक्त श्री ऋषभदेव चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/ प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

अभीप्सित फलप्रदाता

दाता न हर्ता दिवसं विवस्वा- नद्यश्व इत्यच्युत ! दर्शिताशः।
सव्याजमेवं गमयत्-यशक्तः, क्षणेन दत्सेऽभिमतं नताय॥6॥

श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें॥
कुछ भी हरण नहीं करता है, न ही कुछ देता दिनकर।
आज और कल की आशाएँ, सब जीवों को दिखलाकर॥
हो असमर्थ दिवस खो देता, प्रतिदिन ही जगती को छल।
शीघ्र आप जन जन को बन्धू, दे देते मन वांछित फल॥
आदिनाथ जिन स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो कोट्ठबुद्धीणं ऋद्धि युक्त श्री ऋषभदेव चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/ प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

संतान सुखदायक

उपैति भक्त्या सुमुखः सुखानि, त्वयि स्वभावाद् विमुखश्च दुःखम्।
सदावदात-द्युतिरेकरूपस्-, तयोस्त्वमादर्श इवावभासि।।7।।

श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें।।
जो अनुकूल आपके चलते, वे प्राणी सुख से रहते।
रहते जो प्रतिकूल आपके, जग के अगणित दुख सहते।।
आप सदा दोनों के आगे, दर्पण सम रहते भगवान।
अपनी आभा में निमग्न हो, होते नहीं कभी भी क्लान।।
आदिनाथ जिन स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो बीज बुद्धीणं ऋद्धि युक्त श्री ऋषभदेव चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/ प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

सर्व व्यापीगुण धारक

अगाधताब्धेः स यतः पयोधिर्- मेरोश्च तुंगा प्रकृतिः स यत्र।
द्यावापृथिव्योः पृथुता तथैव, व्याप त्वदीया भुवनान्तराणि।।8।।

श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें।।
सागर का गहरापन भाई, सागर तक मर्यादित है।
अरु सुमेरु की ऊँचाई भी, मात्र उसी तक सीमित है।।
वसुधा और गगन की सीमा, उन तक सीमित महान्।
तव गुण से कण-कण पूरित हैं, तीन लोक में हे भगवान!।।
आदिनाथ जिन स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो पदाणुसारीणं ऋद्धि युक्त श्री ऋषभदेव चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/ प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

दोहा- जिन भक्ती करके मिले, मुक्ती का सोपान।
'विशद' कर्म का नाश हो, शिवपुर होय प्रयाण।।

ॐ ह्रीं सर्वविषापहारिणे श्री ऋषभ देवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दृष्टि रोग नाशक

तवानवस्था परमार्थतत्त्वं, त्वया न गीतः पुनरागमश्च।
दृष्टं विहाय त्वमदृष्टमैषीर्-विरुद्धवृत्तोऽपि समञ्जसस्त्वम्।।9।।

श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें।।
है सिद्धांत आपका प्रभुवर, अनवस्थित है और यथार्थ।
पुनरागमन व्यवस्था का न, घोषित किया आपने अर्थ।।
इह लौकिक सुख त्याग सौख्य शुभ, पर लौकिक के अभिलाषी।
शरणागत को मिले आपके, रहे और विरोधाभाषी।।
आदिनाथ जिन स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो संभिण्णसोदाराणं ऋद्धि युक्त श्री ऋषभदेव चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/ प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

शत्रु जयकारक

स्मरः सुदग्धो भवतैव तस्मिन्-नुद्धूलितात्मा यदि नाम शम्भुः।
अशेत वृन्दोपहतोऽपि विष्णुः, किं गृह्यते येन भवान जागः।।10।।

श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें।।
हुआ वस्तुतः आपके द्वारा, मर्यादित शुभ कार्य अशेष।
हुआ मनोज कलंकित शम्भू, कैसे माने गये विशेष।।
लक्ष्मी से प्रेरित होकर के, विष्णु भी सोये स्वमेव।
जागृत थे अविराम आप क्यों, ग्राह्य हुए फिर कैसे एव।।
आदिनाथ जिन स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सयं बुद्धाणं ऋद्धि युक्त श्री ऋषभदेव चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/ प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

श्री सुख प्रदायक

स नीरजाः स्या-दपरोऽघवान्वा, तद्दोषकीर्त्यैव न ते गुणित्वम्।
स्वतोऽम्बुराशेर्महिमा न देव !, स्तोकापवादेन जलाशयस्य ॥11॥

श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें॥
ब्रह्मादि या अन्य देव कोइ, सारे जग के सविकारी।
उनके दोष कथन से गरिमा, रह पाती न अविकारी॥
जिस कारण सागर की महिमा, हो स्वभावतः हे जिनवर !
सिद्ध नहीं हो पाए कभी भी, सरवर को छोटा कहकर॥
आदिनाथ जिन स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥11॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो पत्तेयबुद्धाणं ऋद्धि युक्त श्री ऋषभदेव चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/ प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

सर्व विजयदायक

कर्मस्थितिं जन्तु-रनेकभूमिम्, नयत्यमुं सा च परस्परस्य।
त्वं नेतृभावं हि तयोर्भवाब्धौ, जिनेन्द्र नौ नाविकयो-रिवाख्यः ॥12॥

श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें॥
कर्म पिण्ड को भव-भव में यह, जीव साथ ले जाता है।
वही कर्म का पिण्ड जीव को, हर गति साथ घुमाता है॥
हे जिनेन्द्र ! नौका नाविक सम, भव जल में यह दिखलाया।
सत्य नियम नेतृत्व परस्पर, कहकर जग को बतलाया॥
आदिनाथ जिन स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥12॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो बोहि बुद्धाणं ऋद्धि युक्त श्री ऋषभदेव चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/ प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

रोग विनाशक

सुखाय दुःखानि गुणाय दोषान्, धर्माय पापानि समाऽऽचरन्ति।
तैलाय बालाः सिकतासमूहं, निपीडयन्ति स्फुट-मत्वदीयाः ॥13॥

श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें॥
जैसे तेल प्राप्त करने को, शिशु पेला करते रज कण।
विमुख आपके शासन से त्यों, देव अनेकों हैं नर गण॥
सुख की इच्छा से दुख पाते, गुण की इच्छा करके दोष।
धर्म हेतु पापों का संचय, करके भरते उनका कोष॥
आदिनाथ जिन स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥13॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो उजुमदीणं ऋद्धि युक्त श्री ऋषभदेव चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/ प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

विषापहारी जिनवर

विषापहारं मणिमौषधानि, मन्त्रं समुद्दिश्य रसायनं च।
भ्राम्यन्त्यहो न त्वमिति स्मरन्ति, पर्यायनामानि तवैव तानि ॥14॥

श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें॥
मणी मंत्र औषधी रसायन, खोज रहें हैं विषहारी।
भोले प्राणी भटक रहे हैं, खोज रहे विस्मयकारी॥
मणी मंत्र औषधी आप कुछ, नहीं ध्यान में भी लाते।
क्योंकि आपके ही यह सारे, पर्यय नाम कहे जाते॥
आदिनाथ जिन स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥14॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउलमदीणं ऋद्धि युक्त श्री ऋषभदेव चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/ प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

सर्व अर्थ सिद्धिदायक

चित्ते न किञ्चित्कृतवानसि त्वं, देवः कृतश्चेतसि येन सर्वम्।
हस्ते कृतं तेन जगद्-विचित्रं, सुखेन जीवत्यपि चित्तबाह्यः ॥15॥

श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें॥
स्वयं आप अपने मन में हे, देव ! नहीं कुछ भी करते।
प्राणी भाव सहित इस जग के, मोद सहित उर में धरते॥
मानो सर्व जगत् को उनने, किया हाथ में भी संचित।
है आश्चर्य ! आप चेतन से, रहित लोक में हो जीवित॥
आदिनाथ जिन स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो दसपुव्वीणं ऋद्धि युक्त श्री ऋषभदेव चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/ प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

परम शांति प्रदायक

त्रिकालतत्त्वं त्व-मवैस्त्रिलोकी, स्वामीति संख्यानियते-रमीषाम्।
बोधाधिपत्यं प्रति नाभविष्यंस्- तेऽन्येऽपिचेद्व्याप्स्-यदमूनपीदम्॥16॥

श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें॥
त्रैकालिक तत्वों के ज्ञाता, अरु त्रिलोक के हो स्वामी।
उनकी निश्चितता से संख्या, बन जाती प्रभु अनुगामी॥
नहीं ज्ञान के शासन में पर, यह संख्या समुचित मानी।
होती कोई और यदि वह, जान रहे केवलज्ञानी॥
आदिनाथ जिन स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥16॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो-चउदस पुव्वीणं ऋद्धि युक्त श्री ऋषभदेव चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/ प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

सम्मान सौभाग्यवर्द्धक

नाकस्य पत्युः परिकर्म रम्यं, नागम्यरूपस्य तवोपकारि।
तस्यैव हेतुः स्वसुखस्य भानो-रुद्बिभ्रतच्छत्र-मिवादरेण॥17॥

श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें॥
शिवपुर के स्वामी की सेना, सर्व जगत् में मनहारी।
हे आगम ! के धारी अनुपम, नहीं आपकी उपकारी॥
जैनागम के दिनकर को शुभ, छत्र लगाने वाली है।
आत्मिक सुख देने वाली जो, जग में विशद निराली है॥
आदिनाथ जिन स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥17॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अट्ठांग महाणिमित्त कुसलाणं ऋद्धि युक्त श्री ऋषभदेव चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/ प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

अकथनीय महिमाधारक

क्वोपेक्ष-कस्त्वं क्व सुखोपदेशः, स चेत्किमिच्छा प्रतिकूलवादः।
क्वासौ क्व वा सर्वजगत्-प्रियत्वम्-तन्नो यथा-तथ्य-मवेविजं ते॥18॥

श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें॥
कहाँ आप निर्मोही जिनवर, कहाँ सुखद उपदेश महान्।
इच्छा के विपरीत निरूपण, कहाँ आपका हो भगवान॥
कहाँ लोक प्रियता होती है, कहाँ लोक रंजकता एव।
यों विरोध है सब प्रकार से, होय नहीं सद्रूप सदैव॥
आदिनाथ जिन स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥18॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउव्वइड्ढि पत्ताणं ऋद्धि युक्त श्री ऋषभदेव चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

सर्व विजयदायक

तुंगात्फलं यत्तदकिञ्चनाच्च, प्राप्यं समृद्धान्न धनेश्वरादेः।
निरम्भसोऽप्युच्चतमादिवाद्रेर्-नैकापि निर्याति धुनी पयोधेः॥19॥

श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें॥
दानी निष्किञ्चन से जो फल, पल में ही मिल जाता है।
धनशाली लोभी जन से वह, नहीं प्राप्त हो पाता है॥
अद्रि शिखर से जल विहीन ज्यों, अगणित सरिताएँ बहतीं।
पर हे नाथ ! सभी सरिताएँ, सागर से दूर सदा रहतीं॥
आदिनाथ जिन स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥19॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो विज्जाहराणं ऋद्धि युक्त श्री ऋषभदेव चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/ प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

मनोरथ पूरक

त्रैलोक्य-सेवा नियमाय दण्डं, दध्रे यदिन्द्रो विनयेन तस्य।
तत्प्रातिहार्यं भवतः कुतस्त्यं, तत्कर्म योगाद्यदि वा तवास्तु॥20॥

श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें॥
तीनों लोकों की सेवा के, अर्थ नियम के जो कारण।
अधिक विनय से सुरपति द्वारा, दण्ड किया था जो धारण॥
प्रातिहार्य उसको यों होते, नहीं आपको संभव नाथ !।
कर्म योग से वही आपके, पद में झुका रहे हैं माथ॥
आदिनाथ जिन स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥20॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो चारणाणं ऋद्धि युक्त श्री ऋषभदेव चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/ प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

वाञ्छापूरक

श्रिया परं पश्यति साधु निःस्वः, श्रीमान्-न-कश्चित्-कृपणं त्वदन्यः।
यथा प्रकाश-स्थितमन्धकार-स्थायीक्षतेऽसौ न तथा तमःस्थम्॥21॥

श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें॥
निर्धन जन लक्ष्मी शाली को, सदा देखते हैं सादर।
शिवा आपके निर्धन को वह, धनी नहीं देते आदर॥
तिमिरावस्थित प्राणी को ही, ज्यों प्रकाश दिखलाता है।
त्यों प्रकाश स्थित प्राणी को, नहीं देखने पाता है॥
आदिनाथ जिन स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥21॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो पण्णसमणाणं ऋद्धि युक्त श्री ऋषभदेव चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/ प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

अरिष्ट योगनिवारक

स्ववृद्धिनिःश्वास-निमेषभाजि, प्रत्यक्षमात्मानुभवेऽपि मूढः।
किं चाखिल-ज्ञेय-विवर्ति-बोध-स्वरूप-मध्यक्ष-मवैति लोकः॥22॥

श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें॥
ज्यों प्रत्यक्ष वृद्धि उच्छवासों, का दृग ज्योती के भाजन।
निजस्वरूप के अनुभव की जो, शक्ति न रखते हैं भविजन॥
सकल विश्व के ज्ञायक वह सब, ज्ञानमयी गुण के सागर।
लोकाध्यक्ष आपको कैसे, समझ पाएँगे हे जिनवर !॥
आदिनाथ जिन स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥22॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगासगामीणं ऋद्धि युक्त श्री ऋषभदेव चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/ प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

सर्व भय निवारक

तस्याऽत्मजस्-तस्य पितेति देव !, त्वां येऽवगायन्ति कुलं प्रकाश्य।
तेऽद्यापि नन्वाश्मनमित्यवश्यं, पाणौ कृतं हेम पुनस्त्यजन्ति ।।23।।

श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें।।
नाभिराय नन्दन हे जिनवर !, पिता भरत के आप महान्।
नाथ ! आपकी वंशावलि कह, अपमानित करते इन्सान।।
स्वर्ण प्राप्त करके हाथों में, पत्थर जन्म समझते हैं।
फिर अवश्य ही जग के प्राणी, पत्थर कहकर तजते हैं।।
आदिनाथ जिन स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।23।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो आसीविसाणं ऋद्धि युक्त श्री ऋषभदेव चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/ प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

मोह सुभट विजेता

दत्तस्त्रिलोक्यां पटहोऽभिभूताः, सुराऽसुरास्तस्य महान् स लाभः।
मोहस्य मोहस्त्वयि को विरोद्धुर्, मूलस्य नाशो बलवद्-विरोधः ।।24।।

श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें।।
तीन लोक में मोह सुभट ने, जय का पटह बजाया है।
हुए तिरस्कृत उससे सब पर, लाभ मोह ने पाया है।
उसको भी तो आपके सम्मुख, पड़ा पराजित होना देव !।
सत्य सबल का रिपू रहा जो, नाश हुआ वह पूर्ण सदैव।।
आदिनाथ जिन स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।24।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो दिट्ठि विसाणं ऋद्धि युक्त श्री ऋषभदेव चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/ प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

दोहा- भक्ती के शुभ भाव से, मिलता ज्ञान प्रकाश।
विशद ज्ञान पाके 'विशद', पावें शिवपुर वास।।

ॐ ह्रीं विषापहारिणे श्री ऋषभ देवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नेत्र रोगनाशक

मार्गस्त्वयैको ददृशे विमुक्तेश्-चतुर्गतीनां गहनं परेण।
सर्वंमया दृष्टमिति स्मयेन, त्वंमा कदाचिद्-भुजमालुलोकः॥25॥

श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें॥
जो भी देखा नाथ ! आपने, मोक्षमार्ग पर रहा गमन।
औरों ने जो भी देखा वह, चतुर्गती का रहा भ्रमण॥
सर्व चराचर मैंने देखा, ऐसा कभी नहीं कहकर।
स्वयं भुजाएँ को अपने मद से, देखी नहीं कभी जिनवर॥
आदिनाथ जिन स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥25॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो उग्ग तवाणं ऋद्धि युक्त श्री ऋषभदेव चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/ प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

सर्व संकट निवारक

स्वर्-भानु-रर्कय हविर्भुजोऽम्भः, कल्पान्तवातोऽम्बुनिधेर्विघातः।
संसारभोगस्य वियोगभावो, विपक्षपूर्वाभ्युदयास्त्वदन्ये॥26॥

श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें॥
राहु सूर्य का ग्राहक है तो, जल पावक का संहारक।
जो कल्पान्त काल का भीषण, मारुत सागर का नाशक॥
विरह भाव इस जग के भोगों, का क्षयकारी रहा विशेष।
सिवा आपके सबका अरि संग, होता है संयोग जिनेश॥
आदिनाथ जिन स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥26॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो दित्ततवाणं ऋद्धि युक्त श्री ऋषभदेव चरण कमलेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/ प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

वैभव प्रदायक

अजानतस्त्वां नमतः फलं यत्-तज्जानतोऽन्यं न तु देवतेति।
हरिन्मणिं काचधिया दधानस्, तंतस्य बुद्ध्या वहतो न रिक्तः॥27॥

श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें॥
बिना आपको जाने जिनवर ! विजयी फल पाता जैसा।
देव समझ करके औरों को, कभी न फल पावे वैसा॥
निर्मल मणि को काँच समझकर, धारण जो करता सज्जन।
मणि को सुमणि समझने वाला, होता नहीं कभी निर्धन॥
आदिनाथ जिन स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥27॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो तत्तवाणं ऋद्धि युक्त श्री ऋषभदेव चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/ प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

पिशाचादि बाधा निवारक

प्रशस्तवाचश्चतुराः कषायैर्-दग्धस्य देव व्यवहारमाहुः।
गतस्य दीपस्य हि नन्दितत्त्वं, दृष्टं कपालस्य च मंगलत्वम्॥28॥

श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें॥
ज्यों व्यवहार कुशल पटु वक्ता, चतुःकषायों से दहते।
रागी द्वेषी मोही जन को, देव निरन्तर जो कहते॥
बुझे हुए दीपक को प्राणी, जैसे कहते दीप बढ़ा।
कहते हैं कल्याण हुआ जब, फूट जाय यदि कोई घड़ा॥
आदिनाथ जिन स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥28॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो महातवाणं ऋद्धि युक्त श्री ऋषभदेव चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/ प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

ज्वर पीड़ा विनाशक

नानार्थ मेकार्थ-मदस्त्-वदुक्तं, हितं वचस्ते निशमय्य वक्तुः।
निर्दोषतां के न विभावयन्ति, ज्वरेण मुक्तः सुगमः स्वरेण॥29॥

श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें॥
हैं एकार्थ आपके वर्णित, कई अर्थों के प्रतिपादक।
त्रिभुवन हितकारी वचनों के, कौन लोक में हैं धारक॥
निर्दोषत्व न तत्क्षण अपना, प्रभुवर अनुभव को पाता।
सच है ज्वर से विरहित योगी, स्वर सुगम्य कहा जाता॥
आदिनाथ जिन स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥29॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरतवाणं ऋद्धि युक्त श्री ऋषभदेव चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/ प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

भव सिन्धु तारक

न क्वापि वाञ्छा-ववृते च वाक्ते, काले क्वचित्-कोऽपि तथा नियोगः।
न पूरयाम्-यम्बुधिमित्युदंशुः, स्वयं हि शीतद्युति-रभ्युदेति॥30॥

श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें॥
इच्छा नहीं आपकी कुछ भी, खिरते वचन स्वयं पावन।
किसी काल में वैसा होता, नियम नहीं न अपनापन॥
उगता नहीं सोच ज्यों शशि यह, करूँ सिन्धु को मैं पूरित।
पर स्वभावत : प्रतिदिन रजनी, दूर करे होकर समुदित॥
आदिनाथ जिन स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥30॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर गुणाणं परक्कमाणं, गुण बंभयारीणं ऋद्धि युक्त श्री ऋषभदेव चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/ प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

श्रेष्ठ गुण प्रदायक

गुणा गभीराः परमाः प्रसन्नाः, बहुप्रकारा बहवस्-तवेति।
दृष्टोऽयमन्तः स्तवने न तेषाम्, गुणो गुणानां किमतः परोऽस्ति॥31॥

श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें॥
गुण गण हैं हे नाथ ! आपके, अनुपम अगणित अरु गम्भीर।
और अपरिमित श्रेष्ठ समुज्ज्वल, विविध भाँति उत्कृष्ट सुधीर॥
यों तो अन्त दिखाता उनका, नहीं स्तवन में जिनवर।
और अन्य गुण क्या हो सकते, हे जिनेन्द्र ! इनसे बढ़कर॥
आदिनाथ जिन स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥31॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो आमोसहि पत्ताणं ऋद्धि युक्त श्री ऋषभदेव चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/ प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

इष्ट फलसाधक

स्तुत्या परं नाभिमतं हि भक्त्या, स्मृत्या प्रणत्या च ततो भजामि।
स्मरामि देवं प्रणमामि नित्यं, केनाप्-युपायेन फलं हि साध्यम्॥32॥

श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें॥
केवल संस्तुति करने से ही, मन वाञ्छित न होवे सिद्ध।
सद्भक्ती और नमस्कृती से, संस्मृती से होय प्रसिद्ध॥
प्रतिपल नत होकर ध्याता जो, भजे आपको भी अतएव।
परम साध्य फल पा लेता है, कारण किसी सुविधि से एव॥
आदिनाथ जिन स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥32॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो खेल्लोसहिपत्ताणं ऋद्धि युक्त श्री ऋषभदेव चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/ प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

अखण्ड स्वामित्व दायक

ततस्त्रिलोकी नगराधिदेवं, नित्यं परं ज्योति-रनंतशक्तिम्।
अपुण्य-पापं परपुण्यहेतुं, नमाम्यहं वन्द्य-मवन्दितारम्॥33॥

श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें॥
प्रभु अतएव त्रिलोक स्वरूपी, इस नगरी के अधिकारी।
शाश्वत हैं अति श्रेष्ठ प्रभामय, प्रभु निस्सीम शक्ति धारी॥
पुण्य पाप से विरहित हैं जो, पुण्य हेतु जग में वन्दित।
स्वयं अखण्ड प्रभू को करता, मैं प्रणाम हो आनन्दित॥
आदिनाथ जिन स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥33॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो जल्लोसहि पत्ताणं ऋद्धि युक्त श्री ऋषभदेव चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/ प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

सर्व सिद्धिदायक

अशब्द-मस्पर्श-मरूपगन्धं, त्वां नीरसं तद्-विषयाऽवबोधम्।
सर्वस्य मातारममेय-मन्यैर्-जिनेन्द्र-मस्मार्य-मनुस्मरामि॥34॥

श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें॥
जो स्पर्श हीन अति नीरस, गंध रूप से पूर्ण विहीन।
और शब्द से रहित जिनोत्तम, तद्विषयक हैं ज्ञान प्रवीण॥
प्रभु सर्वज्ञ स्वयं होकर भी, अन्य जनों से जो वंदित।
ध्याते हम अस्मार्य जिनेश्वर, विशद भाव से हो प्रमुदित॥
आदिनाथ जिन स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥34॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो विप्पोसहिपत्ताणं ऋद्धि युक्त श्री ऋषभदेव चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/ प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

सर्व विपत्ति नाशक

अगाधमन्यैर्-मनसाप्-यलंघयं, निष्किञ्चनं प्रार्थित-मर्थवद्भिः।
विश्वस्य पारं तमदृष्टपारं, पतिं जनानां शरणं व्रजामि॥35॥

श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें॥
जो गम्भीर सिन्धु से बढ़कर, मन द्वारा भी अनुलंघित।
निष्किञ्चन होने पर भी जो, धनवानों द्वारा याचित॥
जो हैं सबके पार स्वरूपी, पर जिनका न पाए पार।
शरण प्राप्त हो जाए उनकी, जगत्पती जो अपरम्पार॥
आदिनाथ जिन स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥35॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहि पत्ताणं ऋद्धि युक्त श्री ऋषभदेव चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/ प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

स्वभाविक गुण प्रदायक

त्रैलोक्यदीक्षागुरवे नमस्ते, यो वर्धमानोऽपि निजोन्नतोऽभूत्।
प्राग्गण्डशैलः पुन-रद्रिकल्पः, पश्चान्न मेरुः कुलपर्वतोऽभूत्॥36॥

श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें॥
त्रिभुवन के दीक्षा गुरुवर हे !, नमन् आपको शत्-शत् बार।
वर्धमान होकर भी उन्नत, स्वयं आप हो अपरम्पार॥
मेरु सुगिरि के पूर्व में टीला, शिला राशि फिर पर्वत राज।
क्रमशः कुल गिरि हुआ न फिर भी, था स्वभाव से उन्नत ताज॥
आदिनाथ जिन स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥36॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो मणबलीणं, वचबलीणं, कायबलीणं, खीर सवीणं सप्पिसवीणं ऋद्धि युक्त श्री ऋषभदेव चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/ प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

परमात्मा फलदायक

स्वयंप्रकाशस्य दिवा निशा वा- न बाध्यता यस्य न बाधकत्वम्।
न लाघवं गौरव-मेकरूपं, वन्दे विभुं कालकला-मतीतम्॥37॥

श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें॥
जो स्वयमेव प्रकाशित जिसको, दिन अरु रात का भेद नहीं।
न बाधकता अरु बाधत्व का, न ही होता नियम कहीं॥
यों जिनके न कभी भी लाघव, और न गौरव हैं अणुभर।
अविनाशी उन एक रूप जिन, को प्रणाम मेरा सादर॥
आदिनाथ जिन स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥37॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो महुरसवीणं ऋद्धि युक्त श्री ऋषभदेव चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/ प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

इच्छित फलदायक

इति स्तुतिं देव विधाय दैन्याद्-वरं न याचे त्वमुपेक्षकोऽसि।
छाया तरुं संश्रयतः स्वतः स्यात्-कश्छायया याचित-यात्मलाभः॥38॥

श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें॥
हे प्रभुवर ! यों संस्तुति करके, मैं भी दीन भाव के साथ।
नहीं माँगता हूँ वर कोई, क्योंकि आप उपेक्षक नाथ !॥
वृक्षाश्रित को स्वयं आप ही, मिल जाती छाया शीतल।
भीख माँगने से छाया की, मिलता है क्या कोई फल॥
आदिनाथ जिन स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं॥38॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अमिय सवीणं ऋद्धि युक्त श्री ऋषभदेव चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/ प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

विषम ज्वर विनाशक

अथास्ति दित्सा यदि वोपरोधस्-त्वय्येव सक्तां दिश भक्तिबुद्धिम्।
करिष्यते देव तथा कृपां मे, को वात्मपोष्ये सुमुखो न सूरिः॥39॥

श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें।।
यदि आग्रह कुछ देने का है, या देने की अभिलाषा।
हो जाऊँ भक्ति में तत्पर, यही मात्र मेरी आशा।।
है विश्वास आप अब वैसी, कृपा करोगे हे जिनवर !।
निज शिष्यों पर करुणाकर क्या ?, होते नहीं श्री गुरुवर।।
आदिनाथ जिन स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।39।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खीण महाणसाणं बड्ढमाणाणं ऋद्धि युक्त श्री ऋषभदेव चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/ प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

धन, जय, सुख, यश प्रदात्ती जिनभक्ति

वितरति विहिता यथाकथञ्चिज्, जिन विनताय मनीषितानि भक्तिः।
त्वयि नुतिविषया पुनर्विशेषाद्-दिशति सुखानि यशो 'धनंजयं' च।।40।।

श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें।।
जिस किस भाँती से सम्पादित, देव वंद्य हे जिननायक !
मनवाञ्छित फल देने वाली, भक्ती कर्मों की क्षायक।।
संस्तुति विषयक भक्ति आपकी, देती है शुभ फल निश्चय।
'विशद' ओज विद्यादायक है, कीर्ति धनंजय ही अक्षय।।
आदिनाथ जिन स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।40।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्व साहूणं ऋद्धि युक्त श्री ऋषभदेव चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/ प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

न्याय और व्याकरण के ज्ञाता, कविगण एवं संत सहाय।
वादिराज अरु कवि धनञ्जय, की तुलना में हैं निरुपाय।।
पाकर शुभ आशीष गुरु का, किया पद्यमय यह अनुवाद।
'विशद' ज्ञान के सुधा कलश से, पाने को अनुपम आस्वाद।।41।।

ॐ ह्रीं विषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभनाथ देवाय चरण कमलेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/ प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि स्वाहा।

दशलक्षण धर्म

सोरठा- शिवपद के सोपान, दशलक्षण शुभ धर्म हैं।
धारें जो गुणवान, वे पावें शिवपद विशद।।

(तर्ज-मेरा अंतिम मरण समाधि तेरे दर पर..)

उत्तम क्षमा धर्म (विष्णुपद छंद)

दुर्जन प्राणी कभी सताए, उनने कष्ट दिया।
मन से वचन काय के द्वारा, जो प्रतिकार किया।।
इच्छित कार्य हुआ ना कोई, हमने क्रोध किया।
कर्मोदय से फल ना पाया, पर को दोष दिया।।
क्षमा भाव गुण रहा जीव का, उसको विसराए।
आतम का स्वभाव क्षमा है, नहीं जगा पाए।।।
क्षमा धर्म को धारण करके, निज गुण को पाना।
मोक्षमार्ग की सीढ़ी चढ़कर, शिवपुर को जाना।।1।।

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमा धर्मांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

उत्तम मार्दव धर्म

पूजा ज्ञान जाति कुल ऋद्धी, तप बल देह कहे।
आठ अंग में मद ये आठों, बन्धन डाल रहे।।
वाणी के वाणाों का सहना, बड़ा कठिन गाया।
मन के कारण नहीं जीव को, समकित गुण भाया।।
दर्श ज्ञान चारित्र सुतप शुभ, अरु उपचार कहे।
मार्दव धर्म के हेतु विनय के, भेद ये पंच रहे।।
मार्दव धर्म हृदय में अपने, हमें जगाना है।
मुक्ती का है हेतु विशद जो, हमको पाना है।।2।।

ॐ ह्रीं उत्तम मार्दव धर्मांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

उत्तम आर्जव धर्म

मन से वचन काय के द्वारा, मायावी प्राणी।
तिर्यंचायू का आश्रय करते, कहती जिनवाणी।।

छल छद्रम करते हैं नित प्रति, कर मायाचारी।
ठगते हैं औरों को जिससे, होवें संसारी।।
जो मन में हो कहें वचन से, करें काय द्वारा।
उत्तम आर्जव धर्म कहा यह, जिनवर ने प्यारा।।
सरल हृदय के धारी प्राणी, आर्जव गुण पाएँ।
यह संसार भ्रमण को तजकर, सिद्ध सदन जाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं उत्तम आर्जव धर्मांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

उत्तम शौच धर्म

तृष्णा भाव जगे जीवन में, पाए जो माया।
लोभ पाप का बाप कहा है, आगम में गाया।।
खावें ना खर्चें धन प्राणी, जोड़-जोड़ धरते।
प्राण दाव पे लगा के धन की, रक्षा वे करते।।
मैल हाथ का धन यह गाया, शौच धर्मधारी।
माने धन को पाकर के जो, होते अविकारी।।
शौच धर्म को पाने वाले, चेतन को ध्याते।
पाकर के चेतन की निधियाँ, सिद्ध दशा पाते।।4।।

ॐ ह्रीं उत्तम शौच धर्मांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

उत्तम सत्य धर्म

रहा बोलबाला झूठे का, सत्य का मुँह काला।
इस कलिकाल में ठोकर खाए, सत्य धर्मवाला।।
राग-द्वेष से मोहित हैं जो, अज्ञानी प्राणी।
उभय लोक में निन्द्य कही है, दुखकर कटुवाणी।।
हित-मित-प्रिय वाणी है पावन, जग-जन हितकारी।
वचन कहे आगम अनुसारी, सत्य धर्मधारी।।
सत्य महाव्रत सत्य धर्म का, अविनाभावी है।
सत्य धर्म को पाने वाला, शुद्ध स्वभावी है।।5।।

ॐ ह्रीं उत्तम सत्य धर्मांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

उत्तम संयम धर्म

पंचेन्द्रिय मन को वश में जो, करते हैं जानो।
भू-जल अग्नी वायु वनस्पति, त्रस कायिक मानो।।

इनकी रक्षा करने वाले, संयम के धारी।
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरित धर, होते अनगारी।।
हिंसा झूठ चोरी कुशील अरु, परिग्रह के त्यागी।
पंच समितियाँ पालन करते, शिव के अनुरागी।।
संयम धर्म जगत में पावन, कहा गया भाई।
जिसके द्वारा पाते प्राणी, जग में प्रभुताई।।6।।

ॐ ह्रीं उत्तम संयम धर्मांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

उत्तम तप धर्म

अनशन तप ऊनोदर धारे, व्रत संख्यान कारी।
रस परित्याग विविक्त शैय्यासन, कायोत्सर्ग धारी।।
प्रायश्चित्त विनय सुतप जानो ये, वैय्यावृत्तकारी।
स्वाध्याय व्युत्सर्ग ध्यान रत, गाये शिवकारी।।
बाह्यभ्यन्तर तप ये द्वादश, आगम में गाए।
कर्म निर्जरा के हेतू यह, अनुपम कहलाए।।
तप से आतम कंचन कुन्दन, निर्मल हो भाई।
तप की महिमा विशद लोक में, जानो अतिशायी।।7।।

ॐ ह्रीं उत्तम तप धर्मांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

उत्तम त्याग धर्म

दान त्याग में कुछ समानता, शास्त्रों में गाई।
दान त्याग दोनों में फिर भी, भेद है अधिकायी।।
उत्तम पात्र को उत्तम वस्तू, दान में दी जाए।
आहारौषधि शास्त्र अभय ये, चउ विधि कहलाए।।
विषय कषायारम्भ परिग्रह, की ममता खोवें।
त्याग शुभाशुभ वस्तू के जो परिहारी होवें।।
धन परिजन गृह वस्त्राभूषण, के होकर त्यागी।
मोक्ष मार्ग पर बढ़ने वाले, होते बड़भागी।।8।।

ॐ ह्रीं उत्तम त्याग धर्मांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

उत्तम आकिन्चन्य धर्म

क्षेत्र वास्तु सोना चांदी धन, धान्य दास दासी।
कुप्य भाण्ड दश बाह्य परिग्रह, त्यागें वनवासी।।

मिथ्या क्रोध मान माया अरु, लोभ हास्यकारी।
शोक अरति रति ग्लानी भय त्रय, वेद के परिहारी।।
बहयाभ्यन्तर परिग्रह के यह, चौबिस भेद कहे।
आकिञ्चन व्रत धारी इनसे, विरहित पूर्ण रहे।।
कुछ भी किञ्चित राग रहा ना, तन मन में भाई।
आकिञ्चन शुभ धर्म के धारी, गाये शिवदायी।।9।।

ॐ ह्रीं उत्तम आकिंचन्य धर्मांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म

कामदेव के वश में भाई, है यह जग सारा।
उसको वश में किया है जिसने, ब्रह्मचर्य धारा।।
कामी राग रोग से पीड़ित, खोजें नित नारी।
घृणित कार्य में रति करते हैं, होते लाचारी।।
कामदेव चक्री नृप ज्ञानी, ब्रह्मचर्य धारी।
पाते हैं कई सहस रानियाँ, तज हों अनगारी।।
आत्म ब्रह्म में रमण करें जो, निज को ही ध्याते।
यह संसार असार छोड़कर, सिद्ध दशा पाते।।10।।

ॐ ह्रीं उत्तम ब्रह्मचर्य धर्मांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

क्षमावाणी पर्व

पर्व क्षमावाणी का मिलकर, सभी मनाते हैं।
मन में हुई कलुषता कोई, उसे मिटाते हैं।।
करते क्षमा सभी जीवों को, वे सब क्षमा करें।
हुए दोष जाने अन्जाने, वे सब पूर्ण हरें।।
मैत्री भाव सभी जीवों से, मेरा नित्य रहे।
बैर नहीं हो किसी जीव से, प्रेम की धार बहे।।
जाने या अन्जाने हमसे, दोष हुए भारी।
'विशद' भाव से क्षमा करो सब, होके अविकारी।।11।।

ॐ ह्रीं 'विशद' क्षमावाणी पर्वाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा/प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

अष्ट कुमारिकाओं द्वारा समवशरण में अष्ट महाप्रातिहार्य स्थापना करने के काव्य व मंत्र

निज परिवार सहित 'श्री देवी', समवशरण में आवे।
'सुरतरु प्रातिहार्य' शुभ लेकर, सादर शीश झुकावे।।1।।

ॐ ह्रीं 'श्री देवी' परिवार सहिताय श्री आदिनाथ समवशरणे 'तरु अशोक प्रातिहार्य' स्थापनं करोमि।

'ह्री देवी' यक्षों को लेकर, 'चँवर' ढुराने आवे।
हर्ष भाव से श्री जिन महिमा, प्रमुदित होकर गावे।।2।।

ॐ ह्रीं 'ह्री देवी' परिवार सहिताय श्री आदिनाथ समवशरणे 'चँवर प्रातिहार्य' स्थापनं करोमि।

निज परिवार सहित भक्ती से, 'धृति देवी' भी आवे।
'प्रातिहार्य क्षत्रत्रय' लेकर, सादर शीश झुकावे।।3।।

ॐ ह्रीं 'धृति देवी' परिवार सहिताय श्री आदिनाथ समवशरणे 'छत्रत्रय प्रातिहार्य' स्थापनं करोमि।

निज परिवार सहित भक्ती से, 'कीर्ति देवी' जो आवे।
'प्रातिहार्य भामण्डल' लाकर, श्री जिन महिमा गावे।।4।।

ॐ ह्रीं 'कीर्ति देवी' परिवार सहिताय श्री आदिनाथ समवशरणे 'भामण्डल प्रातिहार्य' स्थापनं करोमि।

'बुद्धि देवी' श्री जिन के चरणों, भक्ति भाव से आवे।
'दुन्दुभि'' वाद्य बजावे खुश हो, परिकर साथ में लावे।।5।।

ॐ ह्रीं 'बुद्धि देवी' परिवार सहिताय श्री आदिनाथ समवशरणे 'दुन्दुभि प्रातिहार्य' स्थापनं करोमि।

'दिव्य देशना' श्री जिनेन्द्र की, 'लक्ष्मी देवी' पावे।
देवों द्वारा निज-निज भाषा, में सबको समझावे।।6।।

ॐ ह्रीं 'लक्ष्मी देवी' परिवार सहिताय श्री आदिनाथ समवशरणे 'दिव्य ध्वनि प्रातिहार्य' स्थापनं करोमि।

निज परिवार सहित भक्ती से, 'शांती देवी' आवे।
'सिंहासन प्रातिहार्य' साथ ले, श्री जिन महिमा गावे।।7।।

ॐ ह्रीं 'शांति देवी' परिवार सहिताय श्री आदिनाथ समवशरणे 'सिंहासन प्रातिहार्य' स्थापनं करोमि।

'पुष्प वृष्टि' जिन समवशरण में, करके अति हर्षावे।
'पुष्टि देवि' जिनवर की महिमा, विशद भाव से गावे।।8।।

ॐ ह्रीं 'पुष्टि देवी' परिवार सहिताय श्री आदिनाथ समवशरणे 'पुष्पदृष्टि प्रातिहार्य' स्थापनं करोमि।

समवशरण में अष्ट मंगल द्रव्य स्थापित करने के काव्य व मंत्र

मंगल द्रव्य रहा क्षत्र त्रय, अतिशय पुण्य प्रदायी।
समवशरण में शोभा पावे, सुर-नर अर्चित भाई।।1।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय नमः समवशरणे क्षत्रत्रय मंगल द्रव्य स्थापयामि।

स्वस्तिक मंगल द्रव्य मनोहर, अतिशय पुण्य प्रदायी।
समवशरण में शोभा पावे, सुर-नर अर्चित भाई।।2।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय नमः समवशरणे स्वस्तिक मंगल द्रव्य स्थापयामि।

मंगल द्रव्य है पंखा पावन, अतिशय पुण्य प्रदायी।
समवशरण में शोभा पावे, सुर-नर अर्चित भाई।।3।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय नमः समवशरणे पंखा मंगल द्रव्य स्थापयामि।

झारी मंगल द्रव्य मनोहर, अतिशय शांति प्रदायी।
समवशरण में शोभा पावे, सुर-नर अर्चित भाई।।4।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय नमः समवशरणे झारी मंगल द्रव्य स्थापयामि।

मंगल द्रव्य कलश है पावन, अतिशय पुण्य प्रदायी।
समवशरण में शोभा पावे, सुर-नर अर्चित भाई।।5।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय नमः समवशरणे कलश मंगल द्रव्य स्थापयामि।

दर्पण मंगल द्रव्य मनोहर, अतिशय पुण्य प्रदायी।
समवशरण में शोभा पावे, सुर-नर अर्चित भाई।।6।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय नमः समवशरणे दर्पण मंगल द्रव्य स्थापयामि।

मंगल द्रव्य रहा ध्वज पावन, अतिशय पुण्य प्रदायी।
समवशरण में शोभा पावे, सुर-नर अर्चित भाई।।7।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय नमः समवशरणे ध्वज मंगल द्रव्य स्थापयामि।

चौंसठ चँवर द्रव्य मंगलमय, अतिशय पुण्य प्रदायी।
समवशरण में शोभा पावे, सुर-नर अर्चित भाई।।8।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय नमः समवशरणे चँवर मंगल द्रव्य स्थापयामि।

मंगल द्रव्य आठ हैं पावन, प्रातिहार्य भी आठ महान।
सुर नरेन्द्र विद्याधर एवं, अष्ट देवियाँ सर्व प्रधान।।
श्री जिनेन्द्र के समवशरण में, अष्ट द्रव्य हैं सर्व प्रकार।
एक सौ आठ-आठ संख्या है, प्रातिहार्य सब मंगलकार।।9।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकर जिनेन्द्राय नमः समवशरणे मण्डलस्योपरि अष्ट मंगल द्रव्य प्रातिहार्य स्थापनं करोमि।

मध्यलोक के जिनालयों की दीपार्चना द्वारा विशेष अर्चा

पंचमेरु के श्री जिन मंदिर की, महिमा हम गावें।
दीप जलाकर श्री जिनपद में, सादर शीश झुकावें।।1।।

ॐ ह्रीं पंचमेरु सम्बन्धी-अशीति जिनालय जिनबिम्बेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

गजदन्तों के श्री जिन मंदिर, की महिमा हम गावें।
दीप जलाकर श्री जिनपद में, सादर शीश झुकावें।।2।।

ॐ ह्रीं गजदन्त सम्बन्धी-विंशति जिनालय जिनबिम्बेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

जम्बू शाल्मलि के तरुवर शुभ, की महिमा हम गावें।
दीप जलाकर श्री जिनपद में, सादर शीश झुकावें।।3।।

ॐ ह्रीं जंबूवृक्षादि सम्बन्धी दश जिनालय जिनबिम्बेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

गिरि वक्षार के श्री जिन मंदिर, की महिमा हम गावें।
दीप जलाकर श्री जिनपद में, सादर शीश झुकावें।।4।।

ॐ ह्रीं वक्षारपर्वत सम्बन्धी अशीति जिनालय जिनबिम्बेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

विजयार्द्धों के श्री जिन मंदिर, की महिमा हम गावें।
दीप जलाकर श्री जिनपद में, सादर शीश झुकावें।।5।।

ॐ ह्रीं विजयार्द्ध पर्वत सम्बन्धी सप्तत्यधिक शत जिनालय जिनबिम्बेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

सुगिरि कुलाचल के जिन मंदिर, की महिमा हम गावें।
दीप जलाकर श्री जिनपद में, सादर शीश झुकावें।।6।।

ॐ ह्रीं कुलाचल पर्वत सम्बन्धी त्रिंशद् जिनालय जिनबिम्बेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

इष्वाकार के श्री जिन मंदिर, की महिमा हम गावें।
दीप जलाकर श्री जिनपद में, सादर शीश झुकावें।।7।।

ॐ ह्रीं इष्वाकार पर्वत सम्बन्धी चतुर्जिनालय जिनबिम्बेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

मानुषोत्तर के श्री जिन मंदिर, की महिमा हम गावें।
दीप जलाकर श्री जिनपद में, सादर शीश झुकावें।।8।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तर पर्वत सम्बन्धी चतुर्जिनालय जिनबिम्बेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

नन्दीश्वर के श्री जिन मंदिर, की महिमा हम गावें।
दीप जलाकर श्री जिनपद में, सादर शीश झुकावें।।9।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वर द्वीप सम्बन्धी द्वापंचाशद्जिनालय जिनबिम्बेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

कुण्डलगिरि के श्री जिन मंदिर, की महिमा हम गावें।
दीप जलाकर श्री जिनपद में, सादर शीश झुकावें।।10।।

ॐ ह्रीं कुण्डलवर पर्वत सम्बन्धी चतुर्जिनालय जिनबिम्बेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

रुचकसुगिरि के श्री जिन मंदिर, की महिमा हम गावें।
दीप जलाकर श्री जिनपद में, सादर शीश झुकावें।।11।।

ॐ ह्रीं रुचकवर पर्वत सम्बन्धी चतुर्जिनालय जिनबिम्बेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

ढाई द्वीप में कृत्रिम जिनगृह, की महिमा हम गावें।
'विशद' भाव से दीप जलाकर, सादर शीश झुकावें।।12।।

ॐ ह्रीं सार्द्धद्वीपसंबंधी पंचदशकर्मभूमिस्थित कृत्रिमजिनालय जिनबिम्बेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

भवनवासी देवों के भवनों में स्थित जिनालयों एवं जिनबिम्बों की विशेष अर्चा

(नरेन्द्र छंद)

असुर कुमार भवनवासी के, जिन पूजा को आवें।
दीप जलाकर श्री जिनपद में, सादर शीश झुकावें।।1।।

ॐ ह्रीं असुरकुमार भवनवासी देव जिनालय जिनबिम्बेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

नागकुमार भवनवासी के, जिनपूजा को आवें।
दीप जलाकर श्री जिनपद में, सादर शीश झुकावें।।2।।

ॐ ह्रीं नागकुमार भवनवासी देव जिनालय जिनबिम्बेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

सुपर्ण कुमार भवनवासी के, जिन पूजा को आवें।
दीप जलाकर श्री जिनपद में, सादर शीश झुकावें।।3।।

ॐ ह्रीं सुपर्णकुमार भवनवासी देव जिनालय जिनबिम्बेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

द्वीप कुमार भवनवासी के, जिनपूजा को आवें।
दीप जलाकर श्री जिनपद में, सादर शीश झुकावें।।4।।

ॐ ह्रीं द्वीपकुमार भवनवासी देव जिनालय जिनबिम्बेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

उदधिकुमार भवनवासी के, जिनपूजा को आवें।
दीप जलाकर श्री जिनपद में, सादर शीश झुकावें।।5।।

ॐ ह्रीं उदधिकुमार भवनवासी देव जिनालय जिनबिम्बेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

स्तनितकुमार भवनवासी के, जिनपूजा को आवें।
दीप जलाकर श्री जिनपद में, सादर शीश झुकावें।।6।।

ॐ ह्रीं स्तनितकुमार भवनवासी देव जिनालय जिनबिम्बेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

विद्युत्कुमार भवनवासी के, जिनपूजा को आवें।
दीप जलाकर श्री जिनपद में, सादर शीश झुकावें।।7।।

ॐ ह्रीं विद्युत्कुमार भवनवासी देव जिनालय जिनबिम्बेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

दिक्कुमार भी भवनवासी के, जिनपूजा को आवें।
दीप जलाकर श्री जिनपद में, सादर शीश झुकावें।।8।।

ॐ ह्रीं दिक्ककुमार भवनवासी देव जिनालय जिनबिम्बेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

अग्निकुमार भवनवासी के, जिनपूजा को आवें।
दीप जलाकर श्री जिनपद में, सादर शीश झुकावें।।9।।

ॐ ह्रीं अग्निकुमार भवनवासी देव जिनालय जिनबिम्बेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

वायुकुमार भवनवासी के, जिनपूजा को आवें।
दीप जलाकर श्री जिनपद में, सादर शीश झुकावें।।10।।

ॐ ह्रीं वायुकुमार भवनवासी देव जिनालय जिनबिम्बेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

व्यन्तर देवों के जिनालयों में स्थित जिनबिम्बों की दीपार्चना द्वारा विशेष अर्चा

किन्नर देवों के जिन मंदिर, की महिमा हम गावें।
दीप जलाकर श्री जिनपद में, सादर शीश झुकावें।।1।।

ॐ ह्रीं किन्नरजातिव्यंतर देवसम्बन्धी असंख्यात जिनालय जिनबिम्बेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

किंपुरुषेन्द्र के श्री जिन मंदिर, की महिमा हम गावें।
दीप जलाकर श्री जिनपद में, सादर शीश झुकावें।।2।।

ॐ ह्रीं किंपुरुषजातिव्यंतर देवसम्बन्धी असंख्यात जिनालय जिनबिम्बेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

महोरगेन्द्रों के जिन मंदिर, की महिमा हम गावें।
दीप जलाकर श्री जिनपद में, सादर शीश झुकावें।।3।।

ॐ ह्रीं महोरगजातिव्यंतर देवसम्बन्धी असंख्यात जिनालय जिनबिम्बेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

सुर गंधर्वों के जिन मंदिर, की महिमा हम गावें।
दीप जलाकर श्री जिनपद में, सादर शीश झुकावें।।4।।

ॐ ह्रीं गंधर्वजातिव्यंतर देवसम्बन्धी असंख्यात जिनालय जिनबिम्बेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

सर्व यक्ष देवों के जिनगृह, की महिमा हम गावें।
दीप जलाकर श्री जिनपद में, सादर शीश झुकावें।।5।।

ॐ ह्रीं यक्षजातिव्यंतर देवसम्बन्धी असंख्यात जिनालय जिनबिम्बेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

राक्षस देवों के श्री जिनगृह, की महिमा हम गावें।
दीप जलाकर श्री जिनपद में, सादर शीश झुकावें।।6।।

ॐ ह्रीं राक्षसजातिव्यंतर देवसम्बन्धी असंख्यात जिनालय जिनबिम्बेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

सर्व भूत देवों के मंदिर, की महिमा हम गावें।
दीप जलाकर श्री जिनपद में, सादर शीश झुकावें।।7।।

ॐ ह्रीं भूतजातिव्यंतर देवसम्बन्धी असंख्यात जिनालय जिनबिम्बेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

देव पिशाचों के जिन मंदिर, की महिमा हम गावें।
दीप जलाकर श्री जिनपद में, सादर शीश झुकावें।।8।।

ॐ ह्रीं पिशाचजातिव्यंतर देवसम्बन्धी असंख्यात जिनालय जिनबिम्बेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

ज्योतिर्वासी जिनालयों में स्थित जिनबिम्बों की दीपार्चना द्वारा विशेष अर्चा

चन्द्रदेव के जिन मंदिर की, अतिशय महिमा गावें।
दीप जलाकर श्री जिनपद में, सादर शीश झुकावें।।1।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके चन्द्रविमान स्थित असंख्यात जिनालय जिनबिम्बेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

सूर्यदेव के जिन मंदिर की, अतिशय महिमा गावें।
दीप जलाकर श्री जिनपद में, सादर शीश झुकावें।।2।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके सूर्यविमान स्थित असंख्यात जिनालय जिनबिम्बेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

ग्रहदेवों के जिन मंदिर की, अतिशय महिमा गावें।
दीप जलाकर श्री जिनपद में, सादर शीश झुकावें।।3।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके ग्रहविमान स्थित असंख्यात जिनालय जिनबिम्बेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

नक्षत्रों के जिन मंदिर की, अतिशय महिमा गावें।
दीप जलाकर श्री जिनपद में, सादर शीश झुकावें।।4।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके नक्षत्रविमान स्थित असंख्यात जिनालय जिनबिम्बेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

तारों स्थित जिन मंदिर की, अतिशय महिमा गावें।
दीप जलाकर श्री जिनपद में, सादर शीश झुकावें।।5।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके प्रकीर्णक ताराविमान स्थित असंख्यात जिनालय जिनबिम्बेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

ऊर्ध्वलोक देवों के विमानों में स्थित जिनालय जिनबिम्बों की दीपार्चना द्वारा अवशेष अर्चा

सौधर्मेन्द्र के जिन मन्दिर की, अतिशय महिमा गावें।
दीप जलाकर श्री जिनपद में, सादर शीश झुकावें।।1।।

ॐ ह्रीं सौधर्मेन्द्र सम्बन्धी द्वात्रिंशद् लक्ष जिनालय जिनबिम्बेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

ईशानेन्द्र के जिन मन्दिर की, अतिशय महिमा गावें।
दीप जलाकर श्री जिनपद में, सादर शीश झुकावें।।2।।

ॐ ह्रीं ईशानेन्द्र सम्बन्धी अष्टाविंशति लक्ष जिनालय जिनबिम्बेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

सानतकुमार के जिन मंदिर की, अतिशय महिमा गावें।
दीप जलाकर श्री जिनपद में, सादर शीश झुकावें।।3।।

ॐ ह्रीं सानत्कुमारेन्द्र सम्बन्धी द्वादश लक्ष जिनालय जिनबिम्बेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

माहेन्द्रेन्द्र के जिन मन्दिर की, अतिशय महिमा गावें।
दीप जलाकर श्री जिनपद में, सादर शीश झुकावें।।4।।

ॐ ह्रीं माहेन्द्र इन्द्र सम्बन्धी अष्ट लक्ष जिनालय जिनबिम्बेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

ब्रह्म युगल के जिन मन्दिर की, अतिशय महिमा गावें।
दीप जलाकर श्री जिनपद में, सादर शीश झुकावें।।5।।

ॐ ह्रीं ब्रह्म-ब्रह्मोत्तर स्वर्ग सम्बन्धी चतुर्लक्ष जिनालय जिनबिम्बेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

लान्तव युगल के जिन मन्दिर की, अतिशय महिमा गावें।
दीप जलाकर श्री जिनपद में, सादर शीश झुकावें।।6।।

ॐ ह्रीं लान्तवस्वर्गसम्बन्धी पंचाशत् सहस्रजिनालय जिनबिम्बेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

शुक्र युगल के जिन मन्दिर की, अतिशय महिमा गावें।
दीप जलाकर श्री जिनपद में, सादर शीश झुकावें।।7।।

ॐ ह्रीं शुक्रमहाशुक्र सम्बन्धी चत्वारिंशत्सहस्रजिनालय जिनबिम्बेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

शतार युगल के जिन मन्दिर की, अतिशय महिमा गावें।
दीप जलाकर श्री जिनपद में, सादर शीश झुकावें।।8।।

ॐ ह्रीं शतारसहस्रारस्वर्गसम्बन्धी षट्सहस्रजिनालय जिनबिम्बेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

आनतादि के जिन मन्दिर की, अतिशय महिमा गावें।
दीप जलाकर श्री जिनपद में, सादर शीश झुकावें।।9।।

ॐ ह्रीं आनतप्राणत-आराणाच्युतस्वर्गसम्बन्धी सप्त शतक जिनालय जिनबिम्बेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

नव ग्रीवक के जिन मन्दिर की, अतिशय महिमा गावें।
दीप जलाकर श्री जिनपद में, सादर शीश झुकावें।।10।।

ॐ ह्रीं नवग्रीवक सम्बन्धी नवोत्तरत्रिशतक जिनालय जिनबिम्बेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

नव अनुदिश के जिन मन्दिर की ,अतिशय महिमा गावें।
दीप जलाकर श्री जिनपद में, सादर शीश झुकावें।।11।।

ॐ ह्रीं नवानुदिश सम्बन्धी नव जिनालय जिनबिम्बेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

अनुत्तरों के जिन मन्दिर की, अतिशय महिमा गावें।
दीप जलाकर श्री जिनपद में, सादर शीश झुकावें।।12।।

ॐ ह्रीं पंचानुत्तर सम्बन्धी पंच जिनालय जिनबिम्बेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

सिद्ध शिला पर सिद्ध प्रभु जी, ज्ञान शरीरी गाए।
जिन अर्चा करने को हम यह, दीप जलाकर लाए।।13।।

ॐ ह्रीं सिद्धशिलोपरिविराजमान-अनन्तानन्तसिद्धेभ्यो नमो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

24 तीर्थंकरों की प्रतीक 24 ध्वजाएँ
समवशरण में स्थापित करने के काव्य व मंत्र
(तर्ज-रामजी की सेना चली...)

जैन ध्वजा हाथ ले, भक्तों को साथ ले-2।
जिनवर की सेना चली, गुरुवर की सेना चली-2।। टेक।।

(तर्ज-सास भी कभी बहु थी...)

धर्म प्रवर्तन प्रभु जी कीन्हे हैं, षट् कर्मों की शिक्षा दीन्हें हैं।
आदिनाथ स्वामी हैं, मुक्ती पथगामी हैं, शिवसुख में करते रमण।।
क्योंकि बड़े पुण्य से अवसर आया है, श्री जिनवर का दर्शन पाया है।।1।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः समवशरणे धर्म ध्वज स्थापनं करोमि।

अजितनाथ जी कर्म विजेता हैं, मुक्ती पथ के अनुपम नेता हैं।
शिवपद के दाता हैं, जीवों के त्राता हैं, जिनवर हैं पावन श्रमण।।
क्योंकि, बड़े पुण्य से अवसर आया है, श्री जिनवर का दर्शन पाया है।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः समवशरणे धर्म ध्वज स्थापनं करोमि।

कार्य असंभव संभव कीन्हें हैं, स्व का चित्त स्वयं में दीन्हें हैं।
संभव जिनस्वामी हैं, मुक्ती पथगामी हैं, चरणों में करते नमन।।
क्योंकि, बड़े पुण्य से अवसर आया है, श्री जिनवर का दर्शन पाया है।।3।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः समवशरणे धर्म ध्वज स्थापनं करोमि।

अभिनंदन पद वंदन करते हैं, चरणों में अपना सिर धरते हैं।
जग में निराले हैं, शुभ कांतीवाले हैं, सारा जग करता नमन्।।
क्योंकि, बड़े पुण्य से अवसर आया है, श्री जिनवर का दर्शन पाया है।।4।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नमो नमः समवशरणे धर्म ध्वज स्थापनं करोमि।

सुमतिनाथ यह नाम निराला है, मति सुमति जो करने वाला है।
पंचम तीर्थंकर हैं, मानो शिवशंकर हैं, कर्मों का करते शमन।।
क्योंकि, बड़े पुण्य से अवसर आया है, श्री जिनवर का दर्शन पाया है।।5।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः समवशरणे धर्म ध्वज स्थापनं करोमि।

पद्मप्रभुजी पद्म समान कहे, कमल की भाँति आप विरक्त रहे।
महिमा दिखाई है, प्रतिमा प्रगटाई है, बाड़े को कीन्हा चमन।।
क्योंकि, बड़े पुण्य से अवसर आया है, श्री जिनवर का दर्शन पाया है।।6।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय नमो नमः समवशरणे धर्म ध्वज स्थापनं करोमि।

जिन सुपार्श्व की महिमा न्यारी है, सारे जग में विस्मयकारी है।
जिनवर कहाए हैं, मुक्तीपद पाए हैं, कीन्हें हैं मोक्ष गमन।।
क्योंकि, बड़े पुण्य से अवसर आया है, श्री जिनवर का दर्शन पाया है।।7।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः समवशरणे धर्म ध्वज स्थापनं करोमि।

चन्द्र चिन्ह प्रभु के पद श्रेष्ठ रहा, धवल कांतिमय चन्द्र समान रहा।
चंदा सितारों में, सोहें बहारों में, प्रभुजी हैं चन्द्र सम अहा।।
क्योंकि, बड़े पुण्य से अवसर आया है, श्री जिनवर का दर्शन पाया है।।8।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय नमो नमः समवशरणे धर्म ध्वज स्थापनं करोमि।

पुष्पदंत जी प्रभू कहाए हैं, दंत पंक्ति पुष्पों सम पाए हैं।
नाम जो पाया है, सार्थक कहाया है, ऐसा है आगम कथन।।
क्योंकि, बड़े पुण्य से अवसर आया है, श्री जिनवर का दर्शन पाया है।।9।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमो नमः समवशरणे धर्म ध्वज स्थापनं करोमि।

तन मन से शीतलता पाई है, शीतलवाणी अति सुखदायी है।
शीतल जिन चंदन है, जिनपद में अर्चन है, कर्मों का करना हनन।।
क्योंकि, बड़े पुण्य से अवसर आया है, श्री जिनवर का दर्शन पाया है।।10।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः समवशरणे धर्म ध्वज स्थापनं करोमि।

श्रेय प्रदाता जो कहलाए हैं, निःश्रेयस पद प्रभुजी पाए हैं।
श्रेय दिला दीजे, देरी अब न कीजे, मिट जाए सबकी तपन।।
क्योंकि, बड़े पुण्य से अवसर आया है, श्री जिनवर का दर्शन पाया है।।11।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः समवशरणे धर्म ध्वज स्थापनं करोमि।

वसुपूज्य सुत जग उपकारी हैं, वासुपूज्य जिन मंगलकारी हैं।
चंपापुर प्रभु आए, कल्याणक सब पाए, चंपापुर की शुभ धरन।।
क्योंकि, बड़े पुण्य से अवसर आया है, श्री जिनवर का दर्शन पाया है।।12।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमो नमः समवशरणे धर्म ध्वज स्थापनं करोमि।

विमल गुणों को पाने वाले हैं, विमलनाथ जिनराज निराले हैं।
निर्मल जो पावन हैं, अतिशय मनभावन हैं, जग में हैं तारण तरण।।
क्योंकि, बड़े पुण्य से अवसर आया है, श्री जिनवर का दर्शन पाया है।।13।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः समवशरणे धर्म ध्वज स्थापनं करोमि।

गुण अनंत जिनने प्रगटाए हैं, अनंतनाथ जिनराज कहाए हैं।
जग में न आएँगे, अंत ना पाएँगे, करते हैं सुख में रमण।।
क्योंकि, बड़े पुण्य से अवसर आया है, श्री जिनवर का दर्शन पाया है।।14।।

ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः समवशरणे धर्म ध्वज स्थापनं करोमि।

धर्म ध्वजा जो हाथ सम्हारे हैं, धर्मनाथ जिनराज हमारे हैं।
धर्म के धारी हैं, अतिशय शुभकारी हैं, करते हम जिन पद वरण।।
क्योंकि, बड़े पुण्य से अवसर आया है, श्री जिनवर का दर्शन पाया है।।15।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः समवशरणे धर्म ध्वज स्थापनं करोमि।

शांतिनाथ पद माथ झुकाते हैं, जिनभक्ती कर हम हर्षाते हैं।
शांती के दाता हैं, जग के विधाता हैं, आते जो प्रभु के चरण।।
क्योंकि, बड़े पुण्य से अवसर आया है, श्री जिनवर का दर्शन पाया है।।16।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः समवशरणे धर्म ध्वज स्थापनं करोमि।

कुंथुनाथ अज लक्षणधारी हैं, प्राणिमात्र के जो उपकारी हैं।
तीर्थंकर पद पाए, चक्री शुभ कहलाए, तेरहवें आप मदन।।
क्योंकि, बड़े पुण्य से अवसर आया है, श्री जिनवर का दर्शन पाया है।।17।।

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः समवशरणे धर्म ध्वज स्थापनं करोमि।

कामदेव पद जिनने पाया था, चक्ररत्न भी शुभ प्रगटाया था।
अरहनाथ तीर्थंकर, अनुपम थे क्षेमंकर, मैटे जो जन्म-मरण।।
क्योंकि, बड़े पुण्य से अवसर आया है, श्री जिनवर का दर्शन पाया है।।18।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः समवशरणे धर्म ध्वज स्थापनं करोमि।

सब मल्लों में मल्ल कहाए हैं, कर्म मल्ल जो सभी हराए हैं।
शीतल जिन चंदन हैं, जिनपद में अर्चन है, कर्मों का करना हनन।।
क्योंकि, बड़े पुण्य से अवसर आया है, श्री जिनवर का दर्शन पाया है।।19।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः समवशरणे धर्म ध्वज स्थापनं करोमि।

मुनियों के व्रत जिनने पाए हैं, मुनिसुव्रतजी जो कहलाए हैं।
शनिग्रह विनाशी हैं, सद्गुण की राशी हैं, कर्मों का कीन्हा क्षरण।।
क्योंकि, बड़े पुण्य से अवसर आया है, श्री जिनवर का दर्शन पाया है।।20।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः समवशरणे धर्म ध्वज स्थापनं करोमि।

विजयसेन सुत नमि जिन कहलाए, अनंत चतुष्टय अनुपम प्रगटाए।
शीतल जिन चंदन है, जिनपद में अर्चन है, कर्मों का करना हनन।।
क्योंकि, बड़े पुण्य से अवसर आया है, श्री जिनवर का दर्शन पाया है।।21।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः समवशरणे धर्म ध्वज स्थापनं करोमि।

वर बनके जिनवरजी आये थे, राजमती को ब्याह न पाए थे।
मुनियों के व्रत पाए, संयम जो अपनाए, पशुओं का देखाऽऽक्रंदन।।
क्योंकि, बड़े पुण्य से अवसर आया है, श्री जिनवर का दर्शन पाया है।।22।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः समवशरणे धर्म ध्वज स्थापनं करोमि।

उपसर्ग विजेता जो कहलाते हैं, उनके पद हम शीश झुकाते हैं।
समता जो धारे हैं, शत्रू भी हारे हैं, पारस प्रभू के चरण।।
क्योंकि, बड़े पुण्य से अवसर आया है, श्री जिनवर का दर्शन पाया है।।23।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः समवशरणे धर्म ध्वज स्थापनं करोमि।

वर्धमान सन्मति कहलाए हैं, वीर और अतिवीर कहाए हैं।
महावीर कहलाए, पाँच नाम प्रभु पाए, कर्मों का कीन्हें दहन।।
क्योंकि, बड़े पुण्य से अवसर आया है, श्री जिनवर का दर्शन पाया है।।24।।

ॐ ह्रीं श्री वर्धमान जिनेन्द्राय नमो नमः समवशरणे धर्म ध्वज स्थापनं करोमि।

तीर्थंकर चौबिस कहलाये हैं, इस जग को सन्मार्ग दिखाये हैं।
जीवों के हितकारी, अतिशय करुणा धारी, करते हम जिनपद नमन।।
क्योंकि, बड़े पुण्य से अवसर आया है, श्री जिनवर का दर्शन पाया है।।25।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय नमो नमः समवशरणे धर्म ध्वज स्थापनं करोमि।

46 मूल गुणों के धारी अर्हत् परमेष्ठी की 46 दीपकों से दीपार्चना

दोहा- दीपाञ्जन करने यहाँ, जला रहे हम दीप।
'विशद' ज्ञान पाएँ प्रभो !, प्रभु तव चरण समीप॥
हे स्वामी नमोस्तु-नमोस्तु-नमोस्तु

जन्मातिशय (चौपाई)

जन्म से सुन्दर तन प्रभु पाते, सुर-नर मुनि सब महिमा गाते।
श्री जिनपद में दीप जलाएँ, पावन सम्यक् ज्ञान जगाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं सौरुप्य जन्मातिशय गुणधारक श्री जिनेन्द्र चरण कमलेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

परम सुगन्धित तन के धारी, होते हैं जिनवर अविकारी।
श्री जिनपद में दीप जलाएँ, पावन सम्यक् ज्ञान जगाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं सौगन्ध्य जन्मातिशय गुणधारक श्री जिनेन्द्र चरण कमलेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

स्वेद रहित प्रभु जी तन पाते, जन्म का अतिशय यह प्रगटाते।
श्री जिनपद में दीप जलाएँ, पावन सम्यक् ज्ञान जगाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं निःस्वेद जन्मातिशय गुणधारक श्री जिनेन्द्र चरण कमलेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

रहित निहार प्रभू जी गाए, मल से रहित प्रभू तन पाए।
श्री जिनपद में दीप जलाएँ, पावन सम्यक् ज्ञान जगाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं मलरहित जन्मातिशय गुणधारक श्री जिनेन्द्र चरण कमलेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

हित-मित-प्रिय हो प्रभु की वाणी, होती जग जन की कल्याणी।
श्री जिनपद में दीप जलाएँ, पावन सम्यक् ज्ञान जगाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रियहितवादित्व जन्मातिशय गुणधारक श्री जिनेन्द्र चरण कमलेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

बल अतुल्य के धारी स्वामी, होते हैं प्रभु अन्तर्यामी।
श्री जिनपद में दीप जलाएँ, पावन सम्यक् ज्ञान जगाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनंत बल जन्मातिशय गुणधारक श्री जिनेन्द्र चरण कमलेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

श्वेत रुधिर तन में प्रभु पाते, वात्सल्य धारी कहलाते।
श्री जिनपद में दीप जलाएँ, पावन सम्यक् ज्ञान जगाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं गौर क्षी रुधिरत्व जन्मातिशय गुणधारक श्री जिनेन्द्र चरण कमलेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

सहस्त्राष्ट लक्षण जो पावें, गुण जिनके कोइ गिन न पावें।
श्री जिनपद में दीप जलाएँ, पावन सम्यक् ज्ञान जगाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं शुभ लक्षण जन्मातिशय गुणधारक श्री जिनेन्द्र चरण कमलेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

समचतुष्क संस्थान के धारी, सुन्दर तन पाते मनहारी।
श्री जिनपद में दीप जलाएँ, पावन सम्यक् ज्ञान जगाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं सम चतुरस्त्र संस्थान जन्मातिशय गुणधारक श्री जिनेन्द्र चरण कमलेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

प्रभू संहनन पावन पावें, वज्र वृषभ नाराच कहावें।
श्री जिनपद में दीप जलाएँ, पावन सम्यक् ज्ञान जगाएँ।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं वज्रवृषभ नाराज संहनन जन्मातिशय गुणधारक श्री जिनेन्द्र चरण कमलेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

केवलज्ञानातिशय (चौपाई छंद)

हो सुभिक्ष सौ योजन भाई, केवल ज्ञान की है प्रभुताई।
जिन चरणों में दीप जलाएँ, हम भी केवल ज्ञान जगाएँ।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं शत योजन दुर्भिक्ष निवारक श्री जिनेन्द्र चरणेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

गगन गमन करते हैं स्वामी, होते हैं प्रभु शिवपथ गामी।
जिन चरणों में दीप जलाएँ, हम भी केवल ज्ञान जगाएँ।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं आकाश गमनातिशय सहित श्री जिनेन्द्र चरणेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

प्रभू चतुर्मुख अतिशय धारी, दर्श करें जग के नर-नारी।
जिन चरणों में दीप जलाएँ, हम भी केवल ज्ञान जगाएँ।।13।।

ॐ ह्रीं अर्हं चतुर्मुख विराजमान सहित श्री जिनेन्द्र चरणेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

अदया भाव रहित जिन गाए, करुणा जीवों पर दर्शाए।
जिन चरणों में दीप जलाएँ, हम भी केवल ज्ञान जगाएँ॥14॥

ॐ ह्रीं अर्हं अदया अभावातिशय सहित श्री जिनेन्द्र चरणेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

जो उपसर्ग रहित कहलाए, महिमा प्रभु जी यह दिखलाए।
जिन चरणों में दीप जलाएँ, हम भी केवल ज्ञान जगाएँ॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हं उपसर्ग रहित श्री जिनेन्द्र चरणेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

कवलाहार रहित हों स्वामी, होते हैं शिव के अनुगामी।
जिन चरणों में दीप जलाएँ, हम भी केवल ज्ञान जगाएँ॥16॥

ॐ ह्रीं अर्हं कवलाहार रहित श्री जिनेन्द्र चरणेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

सब विद्या के ईश्वर जानो, लोकपूज्य इस जग में मानो।
जिन चरणों में दीप जलाएँ, हम भी केवल ज्ञान जगाएँ॥17॥

ॐ ह्रीं अर्हं सकल विद्याधिपत्ययुत श्री जिनेन्द्र चरणेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

सम नख केश सहज प्रभु पाते, केवलज्ञान प्रभू प्रगटाते।
जिन चरणों में दीप जलाएँ, हम भी केवल ज्ञान जगाएँ॥18॥

ॐ ह्रीं अर्हं नखकेश वृद्धि रहित श्री जिनेन्द्र चरणेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

अक्ष स्पन्द रहित जिन गाए, निज आतम का ध्यान लगाए।
जिन चरणों में दीप जलाएँ, हम भी केवल ज्ञान जगाएँ॥19॥

ॐ ह्रीं अर्हं नेत्र भ्रू चपलता रहित श्री जिनेन्द्र चरणेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

छाया रहित रहे जिन स्वामी, तीन लोक में अन्तर्यामी।
जिन चरणों में दीप जलाएँ, हम भी केवल ज्ञान जगाएँ॥20॥

ॐ ह्रीं अर्हं छाया रहित श्री जिनेन्द्र चरणेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

देवकृत अतिशय (चौपाई छंद)

प्रभु सर्वार्ध मागधी वाणी, बोलें जग-जन की कल्याणी।
अतिशयकारी दीप जलाएँ, हम भी मोक्ष मार्ग अपनाएँ॥21॥

ॐ ह्रीं अर्हं मागधी भाषा रहित श्री जिनेन्द्र चरणेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

जग जन मैत्री भाव जगाते, प्रभु के चरण जहाँ पड़ जाते।
अतिशयकारी दीप जलाएँ, हम भी मोक्ष मार्ग अपनाएँ॥22॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वजीव मैत्रीभाव युक्त श्री जिनेन्द्र चरणेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

निर्मल देव दिशाएँ करते, बाधाएँ जो सारी हरते।
अतिशयकारी दीप जलाएँ, हम भी मोक्ष मार्ग अपनाएँ॥23॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वदिशा निर्मलतातिशय सहित श्री जिनेन्द्र चरणेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

गगन होय निर्मल शुभकारी, देवों की है ये बलिहारी।
अतिशयकारी दीप जलाएँ, हम भी मोक्ष मार्ग अपनाएँ॥24॥

ॐ ह्रीं अर्हं गगननिर्मलतातिशय सहित श्री जिनेन्द्र चरणेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

फलें सर्व ऋतु के फल भाई, प्रभु की यह महिमा बतलाई।
अतिशयकारी दीप जलाएँ, हम भी मोक्ष मार्ग अपनाएँ॥25॥

ॐ ह्रीं अर्हं षड्ऋतु फल पुष्प सहित श्री जिनेन्द्र चरणेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

प्रभु के चरण जहाँ पड़ जावें, भूमी कंचन वत हो जावे।
अतिशयकारी दीप जलाएँ, हम भी मोक्ष मार्ग अपनाएँ॥26॥

ॐ ह्रीं अर्हं दर्पण सम भूम्यतिशय सहित श्री जिनेन्द्र चरणेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

चरण कमल तल कमल रचाते, देव विशद महिमा दिखलाते।
अतिशयकारी दीप जलाएँ, हम भी मोक्ष मार्ग अपनाएँ॥27॥

ॐ ह्रीं अर्हं पद तल कमल रचना युत श्री जिनेन्द्र चरणेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

प्रभु की जय-जयकार लगाते, देव सभी को पास बुलाते।
अतिशयकारी दीप जलाएँ, हम भी मोक्ष मार्ग अपनाएँ॥28॥

ॐ ह्रीं अर्हं जय-जय शब्दातिशय सहित श्री जिनेन्द्र चरणेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

देव सुगन्धित वायु चलाते, अतिशय जो महिला दिखलाते।
अतिशयकारी दीप जलाएँ, हम भी मोक्ष मार्ग अपनाएँ॥29॥

ॐ ह्रीं अर्हं सुगन्धित पवनातिशय सहित श्री जिनेन्द्र चरणेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

धूली कंटक देव हटाते, भू निष्कंटक श्रेष्ठ बनाते।
अतिशयकारी दीप जलाएँ, हम भी मोक्ष मार्ग अपनाएँ॥30॥

ॐ ह्रीं अर्हं कंटक रहितातिशय सहित श्री जिनेन्द्र चरणेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

मेघ कुमार देव भी आते, गंधोदक की वृष्टि कराते।
अतिशयकारी दीप जलाएँ, हम भी मोक्ष मार्ग अपनाएँ॥31॥

ॐ ह्रीं अर्हं गंधोदक वृष्टयतिशय सहित श्री जिनेन्द्र चरणेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

परमानन्द जीव सब पाते, जिनवर की जो महिमा गाते।
अतिशयकारी दीप जलाएँ, हम भी मोक्ष मार्ग अपनाएँ।।32।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वानंदकारक श्री जिनेन्द्र चरणेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

धर्म चक्र सिर पर ले जाते, यक्ष विशद महिमा दिखलाते।
अतिशयकारी दीप जलाएँ, हम भी मोक्ष मार्ग अपनाएँ।।33।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्म चक्रातिशय सहित श्री जिनेन्द्र चरणेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

मंगल अष्ट द्रव्य शुभकारी, देव रचावें अतिशयकारी।
अतिशयकारी दीप जलाएँ, हम भी मोक्ष मार्ग अपनाएँ।।34।।

ॐ ह्रीं अर्हं वसु मंगल द्रव्य सहित श्री जिनेन्द्र चरणेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

अष्ट प्रातिहार्य (चौपाई छंद)

तरु अशोक गाया शुभकारी, प्रातिहार्य पावें मनहारी।
दीप जलाएँ मंगलकारी, बनें मोक्ष के हम अधिकारी।।35।।

ॐ ह्रीं अर्हं अशोक वृक्ष प्रातिहार्य सहित श्री जिनेन्द्र चरणेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

पुष्पवृष्टि होवे सुखदायी, समवशरण में पावन भाई।
दीप जलाएँ मंगलकारी, बनें मोक्ष के हम अधिकारी।।36।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुष्प वृष्टि प्रातिहार्य सहित श्री जिनेन्द्र चरणेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

चौंसठ चँवर ढुरें शुभकारी, दिखते हैं जो विस्मयकारी।
दीप जलाएँ मंगलकारी, बनें मोक्ष के हम अधिकारी।।37।।

ॐ ह्रीं अर्हं चतुःषष्ठी चामर प्रातिहार्य सहित श्री जिनेन्द्र चरणेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

भामण्डल चमके मनहारी, सप्त सुभव दिग्दर्शन कारी।
दीप जलाएँ मंगलकारी, बनें मोक्ष के हम अधिकारी।।38।।

ॐ ह्रीं अर्हं भामंडल प्रातिहार्य सहित श्री जिनेन्द्र चरणेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

दुन्दुभि नाद होय सुखदायी, दिखलाए प्रभु की प्रभुताई।
दीप जलाएँ मंगलकारी, बनें मोक्ष के हम अधिकारी।।39।।

ॐ ह्रीं अर्हं देव दुन्दुभि प्रातिहार्य सहित श्री जिनेन्द्र चरणेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

शीश पे क्षत्रत्रय शुभ जानो, प्रभुता जो दिखलावें मानो।
दीप जलाएँ मंगलकारी, बनें मोक्ष के हम अधिकारी।।40।।

ॐ ह्रीं अर्हं छत्रत्रय प्रातिहार्य सहित श्री जिनेन्द्र चरणेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

दिव्य ध्वनि प्रभु की मनहारी, कही लोक में मंगलकारी।
दीप जलाएँ मंगलकारी, बनें मोक्ष के हम अधिकारी।।41।।

ॐ ह्रीं अर्हं दिव्य ध्वनि प्रातिहार्य सहित श्री जिनेन्द्र चरणेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

प्रातिहार्य सिंहासन पावें, अधर प्रभू जिस पर ठहरावें।
दीप जलाएँ मंगलकारी, बनें मोक्ष के हम अधिकारी।।42।।

ॐ ह्रीं अर्हं सिंहासन प्रातिहार्य सहित श्री जिनेन्द्र चरणेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

अनन्त चतुष्टय (चौपाई छंद)

ज्ञान अनन्त प्रभू प्रगटाते, ज्ञानावरणी कर्म नशाते।
ज्ञानदीप हम भी प्रजलाएँ, श्री जिनपद में दीप जलाएँ।।43।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनंतज्ञान सहित श्री जिनेन्द्र चरणेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

प्रभु है दर्शावरणी नाशी, होते केवल दर्श प्रकाशी।
ज्ञानदीप हम भी प्रजलाएँ, श्री जिनपद में दीप जलाएँ।।44।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनंतदर्शन सहित श्री जिनेन्द्र चरणेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

मोहनीय प्रभु कर्म विनाशी, गाए सुख अनन्त के वासी।
ज्ञानदीप हम भी प्रजलाएँ, श्री जिनपद में दीप जलाएँ।।45।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनंतसुख सहित श्री जिनेन्द्र चरणेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

अन्तराय प्रभु कर्म नशाए, वीर्य अनन्त आप प्रगटाए।
ज्ञानदीप हम भी प्रजलाएँ, श्री जिनपद में दीप जलाएँ।।46।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तवीर्य सहित श्री जिनेन्द्र चरणेभ्यो नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

दोहा

छियालिस गुणधारी प्रभू, पाए शिव सोपान।
दीपार्चन है भाव से, पाने केवल ज्ञान।।

ॐ ह्रीं अर्हं 46 गुणयुत श्री अरिहन्त परमेष्ठी चरणेभ्यो 46 प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

कल्याणालोचना दीपार्चना

परमप्पइ वड्ढमदिं, परमेट्ठीणं करोमि णवकारं।
सग-पर सिद्धि-णिमित्तं कल्लाणालोयणा वोच्छे।।1।।

ज्ञानानंत के धारी अर्हत्, के चरणों करते वंदन।
स्व-पर सिद्धि हेतू जीवों के, हे प्रभु ! चरणों आलोचन।।

(अर्द्ध शम्भू छंद)

वृद्धिंगत परमात्म ज्ञानमय, परमेष्ठी के चरण नमन।
कल्याणालोचन का करते, स्व-पर सिद्धि के हेतु कथन।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं जिनचरण युगले नमः आलोचना सहितं प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

रे जीवा-णंत-भवे संसारे, संसरंत बहुवारं।
पत्तो ण बोहिलाहो मिच्छत्त-विजंभ-पयडीहिं।।2।।

भवानंत में अरे ! जीव तू, करे संचरण बारंबार।
मिथ्या प्रकृति उदय से बोधी, लाभ नहीं हो किसी प्रकार।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं भवानन्त निवारणाय श्री जिनाय नमः आलोचना सहितं प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

संसारभमण-गमणं, कुणंत आराहिदो ण जिणधम्मो।
तेण विणाऽवरं-दुक्खं, पत्तोसि अणंत वाराइं।।3।।

यह संसार भ्रमण करते नहिं, आराधा जिनधर्म कभी।
जैन धर्म बिन दुःख अनंतों, बार प्राप्त तू किए सभी।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं दुःख निवारणाय श्री जिनाय नमः आलोचना सहितं प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि

संसारे णिवसंता, अणंत मरणाइ पाओसि तुमं।
केवलिणा विण तेसिं, संखा पज्जत्ति णो हवदि।।4।।

मरण किया संसार में रहके, तूने बार अनंतानंत।
केवलि बिन मरणों की संख्या, कह ना सके कोई गुणवंत।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनंतानंतभव निवारणाय श्री जिनाय नमः आलोचना सहितं प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

तिण्णिसया छत्तीसा, छावट्ठि-सहस्सवार मरणाइं।
अंतोमुहुत्त-मज्झे, पत्तोसि णिगोय-मज्झम्मि।।5।।

छियासठ सहस तीन सौ छत्तिस, सर्व क्षुद्र भव पावे जीव।
अन्तर्मुहूर्त में ये भव धारें, हों निगोदिया सर्व अतीव।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्षुद्रभव निवारणाय श्री जिनाय नमः आलोचना सहितं प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

वियलिंदिये असीदी, सट्ठी चालीसमेव जाणेहिं।
पंचेंदिय चउवीसं, खुद्दभवंतो-मुहुत्तस्स ।।6।।

दो त्रय चउ इन्द्रिय भव क्रमशः, अस्सी साठ धरें चालीस।
अन्तर्मुहूर्त में पंचेन्द्रिय के, भी पावें ये भव चौबीस।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रस क्षुद्रभव निवारणाय श्री जिनाय नमः आलोचना सहितं प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

अण्णोण्णं खज्जंता, जीवा पावंति दारुणं दुक्खं।
णहु तेसिं पज्जत्ती, कहपावइ धम्म मदिसुण्णो।।7।।

जीव परस्पर में क्रोधित हो, पावें दारुण दुःख महान्।
जैनधर्म में रहित बुद्धि का, कैसे छूटे भ्रमण जहान।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं परस्पर क्रोधकषाय निवारणाय श्री जिनाय नमः आलोचना सहितं प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

माया-पिया कुडुंबो, सुजण-जण कोवि णायदि सत्थे।
एगागी भमदि सदा, णहि वीओ अत्थि संसारे।।8।।

स्वजन कुटुम्बी मात पितादिक, नहीं कोई भी जाते साथ।
भ्रमे अकेला तू इस जग में, दूजा नहीं बटाए हाथ।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं एकत्व भावना प्राप्त श्री जिनाय नमः आलोचना सहितं प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

आउक्खएवि पत्ते, ण समत्थो कोवि आउदाणेय।
देवेंदो ण णरेंदो, मणि-ओसह मंत-जालाईं।।9।।

आयू क्षय होने पर कोई, ना समर्थ जो करे प्रदान।
इन्द्र नरेन्द्र मंत्र मणि औषधि, नहीं बचा सकते कोई आन।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं आयुकर्म निवारणाय श्री जिनाय नमः आलोचना सहितं प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

संपडि जिणवरधम्मो, लद्धोसि तुमं विसुद्ध-जोएण।
खामसु जीवा सव्वे, पत्ते-समये पयत्तेण।।10।।

जिनवर धर्म मिला तुमको यह, तीन योग से होके शुद्ध।
यत्नपूर्वक प्रतिक्षण जीवों, को तुम क्षमा करो हे बुद्ध !।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्षमागुण धारकाय श्री जिनाय नमः आलोचना सहितं प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

तिण्णिसया तेसट्ठि, मिच्छत्ता दंसणस्स पडिवक्खा।
अण्णाणे सद्दहिया, मिच्छा मे दुक्कडं हुज्ज।।11।।

सम्यक्दर्शन के प्रतिपक्षी, तीन सौ त्रेसठ मिथ्या भेद।
यदि अज्ञानपूर्वक श्रद्धा, की हो मिथ्या है यह खेद।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं मिथ्यात्व निवारणाय श्री जिनाय नमः आलोचना सहितं प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

महु-मज्ज-मंस-जूआ-पभिदी-वसणाइ सत्तभेयाइं।
णियमो ण कथं च तेसिं, मिच्छा मे दुक्कडं हुज्ज ॥12॥

मद्य मांस मधु जुआ आदि ये, सप्त व्यसन कीन्हें सेवन।
इनका त्याग किया ना मैंने, दुष्कृत मिथ्या हो भगवन् ॥12॥

ॐ ह्रीं अर्हं सप्त व्यसन निवारणाय श्री जिनाय नमः आलोचना सहितं प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

अणुवय-महव्वया जे, जम-णियमा-सीलसहगुरुदिण्णा।
जे जे विराहिदा खलु, मिच्छा मे दुक्कडं हुज्ज ॥13॥

सद्गुरु दिए मुझे जो अणुव्रत, यम या नियम महाव्रत जान।
हुई विराधना सप्त शील में, दुष्कृत मिथ्या हो भगवान ॥13॥

ॐ ह्रीं अर्हं शील विराधना दोष निवारणाय श्री जिनाय नमः आलोचना सहितं प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

णिच्चिदर-धादुसत्तय, तरुदस-वियलिंदिएसु छच्चेव।
सुर-णरय-तिरिय-चउरो, चउदस मणुए सदसहस्सा ॥14॥

नित्य इतर धातू चउ की हैं, सात-सात तरु की दश लाख।
विकलत्रय छह सुर नारक पशु की, चउ-चउ नर चौदह लाख ॥14॥

एदे सव्वे जीवा, चउरासीलक्ख-जोणिवसि पत्ता।
जे जे विराहिदा खलु, मिच्छा मे दुक्कडं हुज्ज ॥15॥

इन सब लाख चुरासी यौनी, में सब जीव का रहा भ्रमण।
हुई विराधना जिन जिन की हो, दुष्कृत विफल होय भगवन ॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हं चतुरशीति लक्ष जाति जीव विराधना निवारणाय श्री जिनाय नमः आलोचना सहितं प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

पुढवी-जलग्गि-वाओ, तेओवि वणप्फदी य वियलतया।
जे जे विराहिदा खलु, मिच्छा मे दुक्कडं हुज्ज ॥16॥

भू जल अग्नी वायु वनस्पति, विकलत्रय का हुआ हो घात।
हुई विराधना जिन जिन की हो, दुष्कृत हो मम मिथ्यावाद ॥16॥

ॐ ह्रीं अर्हं विकलजीव विराधना दोष निवारणाय श्री जिनाय नमः आलोचना सहितं प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

मल सत्तरा जिणुत्ता, वयविसये जा विराहणा विविहा।
सामइया खमइया खलु, मिच्छा मे दुक्कडं हुज्ज ॥17॥

श्री जिनेन्द्र ने सभी व्रतों के, सत्तर बतलाए अतिचार।
हानी सामायिक क्षमादि में, हुई दोष होवें यह क्षार ॥17॥

ॐ ह्रीं अर्हं व्रतातिचार दोष निवारणाय श्री जिनाय नमः आलोचना सहितं प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

फलफुल्ल-छल्लिवल्लि, अणगल ण्हाणंच धोवणादीहिं।
जे जे विराहिदा खलु, मिच्छा मे दुक्कडं हुज्ज ।।18।।

पुष्प छाल फल आदि का सेवन, अनछने जल से कर स्नान।
हुई विराधना जिन जीवों की, दुष्कृत मिथ्या होय प्रधान।।18।।

ॐ ह्रीं अर्हं जल फलादि जीव विराधना दोष निवारणाय श्री जिनाय नमः आलोचना सहितं प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

णो शीलं णेव खमा, विणओ तवो ण संजमोवासा।
ण कदा ण भावि कदा, मिच्छा मे दुक्कडं हुज्ज ।।19।।

शील क्षमा तप विनय नहीं की, किया नहीं संयम उपवास।
नहीं भावना भी इनकी की, दुष्कृत मिथ्या हो वह खास।।19।।

ॐ ह्रीं अर्हं शीलादि गुणभावना दोष निवारणाय श्री जिनाय नमः आलोचना सहितं प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

कंदफल-मूल-बीया, सचित्त-रयणीय-भोयणाहारा।
अण्णाणो जे वि कदा, मिच्छा मे दुक्कडं हुज्ज ।।20।।

कंदमूल फल बीज सचित्त का, किया भूल से जो सेवन।
रात्री भोजन किया कराया, दुष्कृत मिथ्या हो भगवन्।।20।।

ॐ ह्रीं अर्हं कंदमूल फल सेवन दोष निवारणाय श्री जिनाय नमः आलोचना सहितं प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

णो पूया जिणचरणे, ण पत्तदाणं ण चेइया-गमणं।
ण कदा ण भाविद-मये, मिच्छा मे दुक्कडं हुज्ज ।।21।।

पूजा की ना जिन चरणों की, पात्र दान ना ईर्यागमन।
नहीं किया ना भावना भाई, दुष्कृत मिथ्या हो भगवन्।।21।।

ॐ ह्रीं अर्हं दान-पूजादि दोष निवारणाय श्री जिनाय नमः आलोचना सहितं प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

बंभारंभ-परिग्गह, सावज्जा- बहु पमाद-दोसेण।
जीवा विराहिदा खलु, मिच्छा मे दुक्कडं हुज्ज ।।22।।

ब्रह्मचर्य आरंभ परिग्रह, में प्रमाद से किया हो पाप।
हुई विराधना हो जीवों की, दुष्कृत मिथ्या हों सब आप।।22।।

ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मचर्यादि गुण विराधना दोष निवारणाय श्री जिनाय नमः आलोचना सहितं प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

सत्तातिसद-खेत्तभवा-तीदाणा-गदसुवट्टमाण-जिणा।
जे जे विराहिदा खलु, मिच्छा मे दुक्कडं हुज्ज ।।23।।

भूत भविष्यत वर्तमान के, एक सौ सत्तर क्षेत्र महान।
हुई विराधना उनमें जिन की, दुष्कृत मिथ्या हो भगवान।।23।।

ॐ ह्रीं अर्हं सप्तति शत कर्मभूमि स्थित त्रिकाल जीव विराधना निवारणाय श्री जिनाय नमः आलोचना सहितं प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

अरुहासिद्धाइरिया, उवझाया साहु पञ्चपरमेट्ठी।
जे जे विराहिदा खलु, मिच्छा मे दुक्कडं हुज्ज।।24।।

अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय, साधू यह परमेष्ठी जो।
हुई विराधना जिन जिन की वह, दुष्कृत मेरा मिथ्या हो।।24।।

ॐ ह्रीं अर्हं पंच परमेष्ठी विराधना निवारणाय श्री जिनाय नमः आलोचना सहितं प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

जिणवयण-धम्मचेदिय, जिणपडिमा किट्टियाऽकिट्टिमया।
जे जे विराहिदा खलु, मिच्छा मे दुक्कडं हुज्ज।।25।।

कृत्रिमाकृत्रिम जिनगृह प्रतिमा, जैनधर्म जिनराज वचन।
हुई विराधना जिन जिन की हो, दुष्कृत मिथ्या हो भगवन्।।25।।

ॐ ह्रीं अर्हं कृत्रिमाकृत्रिम जिनप्रतिमा विराधना दोष निवारणाय श्री जिनाय नमः आलोचना सहितं प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

दंसण-णाण-चरित्ते, दोसा अट्ठट्ठ-पञ्च-भेयाइं।
जे जे विराहिदा खलु, मिच्छा मे दुक्कडं हुज्ज।।26।।

सम्यक् दर्श ज्ञान के अठ अठ, दोष पाँच चारित के जान।
हुई विराधना उनकी जो भी, दुष्कृत मिथ्या हो भगवान।।26।।

ॐ ह्रीं अर्हं रत्नत्रय विराधना दोष निवारणाय श्री जिनाय नमः आलोचना सहितं प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

मदि-सुद-ओही-मणपज्जयं, तहा केवलं च पंचमयं।
जे जे विराहिदा खलु, मिच्छा मे दुक्कडं हुज्ज।।27।।

मति श्रुत अवधि मनःपर्यय शुभ, पंचम गाया केवलज्ञान।
हुई विराधना उनकी जो भी, दुष्कृत मिथ्या हो भगवान।।27।।

ॐ ह्रीं अर्हं सम्यक्ज्ञान विराधना दोष निवारणाय श्री जिनाय नमः आलोचना सहितं प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

आयारादी अंगा, पुव्वपइण्णा जिणेहिं पण्णत्ता।
जे जे विराहिदा खलु, मिच्छा मे दुक्कडं हुज्ज।।28।।

जिन वर्णित आचारांगादिक, पूर्व प्रकीर्णक जो श्रुतज्ञान।
हुई विराधना उनकी जो भी, दुष्कृत मिथ्या हो भगवान।।28।।

ॐ ह्रीं अर्हं अंगपूर्व श्रुत विराधना दोष निवारणाय श्री जिनाय नमः आलोचना सहितं प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

पंच महव्वदजुत्ता, अट्ठादस-सहस्स-सीलकदसोहा।
जे जे विराहिदा खलु, मिच्छा मे दुक्कडं हुज्ज।।29।।

पंच महाव्रत सहस अठारह, शील से शोभित रहे महान्।
हुई विराधना उनकी जो भी, दुष्कृत मिथ्या हो भगवान।।29।।

ॐ ह्रीं अर्हं व्रतशील विराधना दोष निवारणाय श्री जिनाय नमः आलोचना सहितं प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

लोए पियर समाणा, रिद्धिपवण्णा महागणवइया।
जे जे विराहिदा खलु, मिच्छा मे दुक्कडं हुज्ज।।30।।

पिता समान लोक में गणधर, अतिशय गाये ऋद्धीमान।
हुई विराधना उनकी जो भी, दुष्कृत मिथ्या हो भगवान।।30।।

ॐ ह्रीं अर्हं ऋद्धीमान गणधर विराधना दोष निवारणाय श्री जिनाय नमः आलोचना सहितं प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

णिग्गंथ अज्जियाओ, सड्ढा सड्ढी य चउविहो संघो।
जे जे विराहिदा खलु, मिच्छा मे दुक्कडं हुज्ज।।31।।

संघ चतुर्विध मुनी आर्यिका, श्रावक श्राविका कहे महान्।
हुई विराधना उनकी जो भी, दुष्कृत मिथ्या हो भगवान्।।31।।

ॐ ह्रीं अर्हं चतुर्विध संघ विराधना दोष निवारणाय श्री जिनाय नमः आलोचना सहितं प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

देवा सुरा मणुस्सा णेरइया-तिरिय-जोणिगद-जीवा।
जे जे विराहिदा खलु, मिच्छा मे दुक्कडं हुज्ज।।32।।

देवासुर नर पशू नारकी, चतुर्सुगति के जीव महान्।
हुई विराधना उनकी जो भी, दुष्कृत मिथ्या हो भगवान।।32।।

ॐ ह्रीं अर्हं चतुर्गति जीव विराधना दोष निवारणाय श्री जिनाय नमः आलोचना सहितं प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

कोहो - माणो - माया-, लोहो - एदेय रायदोसाइं।
अण्णाणे जे वि कदा, मिच्छा मे दुक्कडं हुज्ज।।33।।

क्रोध मान माया लोभादिक, राग द्वेष होके अज्ञान।
किया गया जो मेरे द्वारा, दुष्कृत मिथ्या हो भगवान।।33।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्रोधादि रागद्वेष विराधना दोष निवारणाय श्री जिनाय नमः आलोचना सहितं प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

परवत्थं परमहिला, पमादजोगेण अज्जियं पावं।
अण्णावि अकरणीया, मिच्छा मे दुक्कडं हुज्ज।।34।।

जो प्रमाद से पर स्त्री या, परवस्त्रों को किया ग्रहण।
उससे पाप हुआ जो मेरे, दुष्कृत मिथ्या हो भगवन्।।34।।

ॐ ह्रीं अर्हं परस्त्री वस्त्रादि ग्रहण विराधना दोष निवारणाय श्री जिनाय नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

एगो सहाव-सिद्धो सोहं, अप्पा वियप्प-परिमुक्को।
अण्णो ण मज्झ सरणं, सरणं सो एग परमप्पा।।35।।

एक स्वभाव सिद्ध है आतम, सर्व विकल्पों रहित महान्।
अन्य शरण कोइ नहीं है मेरा, आप शरण इक हो भगवान।।35।।

ॐ ह्रीं अर्हं जिनशरण प्राप्ताय श्री जिनाय नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

अरस-अरूव-अगंधो, अव्वावाहो अणंत-णाणमओ।
अण्णो ण मज्झ सरणं, सरणं सो एग परमप्पा।।36।।

अव्याबाध अनंत ज्ञानमय, अरस अरूप अगंध महान्।
अन्य शरण कोइ नहीं है मेरा, आप शरण इक हो भगवान।।36।।

ॐ ह्रीं अर्हं जिनशरण प्राप्ताय श्री जिनाय नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

णेयपमाणं णाणं, समए एगेण हुंति ससहावे।
अण्णो ण मज्झ सरणं, सरणं सो एग परमप्पा।।37।।

एक समय में है स्वभावमय, सर्व ज्ञानमय ज्ञेय प्रमाण।
अन्य शरण कोइ नहीं है मेरा, आप शरण इक हो भगवान।।37।।

ॐ ह्रीं अर्हं जिनशरण प्राप्ताय श्री जिनाय नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

एयाणेय-वियप्पप्-पसाहणे सयसहाव-सुद्धगदी।
अण्णो ण मज्झ सरणं, सरणं सो एग परमप्पा।।38।।

एकानेक विकल्पक स्वामी, स्वस्वभाव में स्थिर मान।
अन्य शरण कोइ नहीं है मेरा, आप शरण इक हो भगवान।।38।।

ॐ ह्रीं अर्हं जिनशरण प्राप्ताय श्री जिनाय नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

देहपमाणो णिच्चो, लोयपमाणो वि धम्मदो होदि।
अण्णो ण मज्झ सरणं, सरणं सो एग परमप्पा।।39।।

देह प्रमाण नित्य है आतम, ज्ञानापेक्षा लोक प्रमाण।
अन्य शरण कोइ नहीं है मेरा, आप शरण इक हो भगवान।।39।।

ॐ ह्रीं अर्हं जिनशरण प्राप्ताय श्री जिनाय नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

केवलदंसण-णाणं, समये एगेण दुण्णि-उवओगा।
अण्णो ण मज्झ सरणं, सरणं सो एग परमप्पा।।40।।

एक समय में द्वि उपयोगी, केवल दर्शन केवलज्ञान।
अन्य शरण कोइ नहीं है मेरा, आप शरण इक हो भगवान।।40।।

ॐ ह्रीं अर्हं जिनशरण प्राप्ताय श्री जिनाय नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

सगरूव सहजसिद्धो, विहावगुण-मुक्ककम्मवावारो।
अण्णो ण मज्झ सरणं, सरणं सो एग परमप्पा।।41।।

सहज सिद्ध स्वरूप कर्म बिन, हैं विभाव गुण रहित महान्।
अन्य शरण कोइ नहीं है मेरा, आप शरण इक हो भगवान।।41।।

ॐ ह्रीं अर्हं जिनशरण प्राप्ताय श्री जिनाय नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

सुण्णो णेय असुण्णोए, णोकम्मो कम्मवज्जिओ णाणं।
अण्णो ण मज्झ सरणं, सरणं सो एग परमप्पा।।42।।

शून्य कर्म नो कर्म रहित है, है अशून्य जो ज्ञान प्रधान।
अन्य शरण कोइ नहीं है मेरा, आप शरण इक हो भगवान।।42।।

ॐ ह्रीं अर्हं जिनशरण भावना प्राप्ताय श्री जिनाय नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

णाणाउजोण भिण्णो, वियप्पभिण्णो सहावसुक्खमओ।
अण्णो ण मज्झ सरणं, सरणं सो एग परमप्पा।।43।।

नहीं ज्ञान से भिन्न विकल्पों, से है भिन्न स्वभाव सुख मान।
अन्य शरण कोइ नहीं है मेरा, आप शरण इक हो भगवान।।43।।

ॐ ह्रीं अर्हं जिनशरण भावना प्राप्ताय श्री जिनाय नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

अच्छिण्णो-वच्छिण्णो, पमेय रूवत्त गुरुलहू चेव।
अण्णो ण मज्झ सरणं, सरणं सो एग परमप्पा।।44।।

जो अगुरुलघु प्रमेय रूप शुभ, है अछिन्न अवछिन्न विधान।
अन्य शरण कोइ नहीं है मेरा, आप शरण इक हो भगवान।।44।।

ॐ ह्रीं अर्हं जिनशरण भावना प्राप्ताय श्री जिनाय नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

सुह-असुहभावविगओ, सुद्धसहावेण तम्मयं पत्तो।
अण्णो ण मज्झ सरणं, सरणं सो एग परमप्पा।।45।।

जो है रहित शुभाशुभ भावों, शुद्ध स्वभाव में तन्मय जान।
अन्य शरण कोइ नहीं है मेरा, आप शरण इक हो भगवान।।45।।

ॐ ह्रीं अर्हं जिनशरण भावना प्राप्ताय श्री जिनाय नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

णो इत्थी ण णउंसो, णो पुंसो णेव पुण्ण-पावमओ।
अण्णो ण मज्झ सरणं, सरणं सो एग परमप्पा।।46।।

स्त्री पुरुष नपुंसक ना जो, पुण्य पाप से रहित महान।
अन्य शरण कोइ नहीं है मेरा, आप शरण इक हो भगवान।।46।।

ॐ ह्रीं अर्हं जिनशरण भावना प्राप्ताय श्री जिनाय नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

ते को ण होदि सुजणो, तं कस्स ण बंधवो ण सुजणो वा।
अप्पा हवेइ अप्पा, एगागी जाणगो सुद्धो।।47।।

न कोई तेरा स्वजन ना तू भी, बंधू स्वजन किसी को मान।
यह आतम एकाकी ज्ञायक, चिन्मय शुद्ध स्वरूप महान्।।47।।

ॐ ह्रीं अर्हं एकत्व भावना प्राप्ताय श्री जिनाय नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

जिणदेवो होदु सदा, मई सु जिणसासणे सया होऊ।
सण्णासेण य मरणं, भवे-भवे मज्झ संपदओ।।48।।

जिन शासन में मति हो मेरी, सदा रहें मेरे जिनदेव।
भव-भव में सन्यास मरण हो, यह संपत्ती मिले सदैव।।48।।

ॐ ह्रीं अर्हं संन्यासमरणप्राप्ति भावना प्राप्ताय श्री जिनाय नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

जिणो देवो जिणो देवो, जिणो देवो जिणो जिणो।
दयाधम्मो दयाधम्मो, दयाधम्मो दया सदा।।49।।

जिनदेव जिनदेव 'विशद' लोक में, श्री जिनदेव हैं जगत महान।
दया धर्म है दया धर्म है, दया धर्म है जगत प्रधान।।49।।

ॐ ह्रीं अर्हं जिनदेव जिनधर्म प्राप्ति भावना प्राप्ताय श्री जिनाय नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

महासाहू महासाहू, महासाहू दिगंबरा।
एवं तच्च सया हुज्ज, जावण्णो मुक्ति संगमो।।50।।

महासाधु हैं महासाधु हैं, महासाधु जिन संत महान।
जब तक मुक्ती ना हो मेरी, सभी तत्त्व ये मिलें प्रधान।।50।।

ॐ ह्रीं अर्हं तत्त्व प्राप्ति भावना प्राप्ताय श्री जिनाय नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

एवमेव गओकालो, अणंतो दुक्खसंगमे।
जिणोवदिट्ठ-सण्णासे, ण यतारोहणा कया।।51।।

काल अनंत व्यतीत हुआ है, इस प्रकार दुःखों के साथ।
जिनभक्ती सन्यास कभी भी, प्राप्त हुआ ना मुझको नाथ !।।51।।

ॐ ह्रीं अर्हं जिनभक्ति सन्यास प्राप्ति भावना प्राप्ताय श्री जिनाय नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

संपइ एव संपत्ताऽऽराहणा जिणदेसिया।
किं किं ण जायदे मज्झ, सिद्धि-संदोह-संपई।।52।।

जिनभक्ती आराधन मुझको, पुण्योदय से हुई है प्राप्त।
सिद्धि समूह की संपत्ती क्या, इससे मुझे ना हो सम्प्रात?।।52।।

ॐ ह्रीं अर्हं सिद्ध समूह वैभव प्राप्ति भावना प्राप्ताय श्री जिनाय नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

अहो धम्ममहो धम्मं , अहो मे लद्धि णिम्मला।
संजादा संपया सारा, जेण सुक्ख-मणूपमं।।53।।

अहो धर्म हे ! अहो धर्म हे, निर्मल सिद्धी हम पाई।
मुझे मिला सर्वस्व धर्म से, अनुपम सुख की घड़ि आई।।53।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मफल प्राप्ताय श्री जिनाय नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

एवं आराहंतो, आलोयण-वंदणा-पडिक्कमणं।
पावइ फलं च तेसिं, णिद्दिट्ठं अजियवम्मेण।।54।।

इस प्रकार आलोचन वंदन, प्रतिक्रमण का आराधन।
इससे मिलता 'विशद' सौख्य शिव, अजित ब्रह्म मिलता पावन।।54।।

ॐ ह्रीं अर्हं आलोचना क्रिया प्राप्ति रूप फल प्राप्ताय श्री जिनाय नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

दोहा- शुभ कल्याणालोचना, पद्यमयी अनुवाद।
'विशद' सिंधु कहते पढ़े, सुने मिले निज स्वाद।।

ॐ ह्रीं अर्हं कल्याणालोचना पठन श्रवण प्राप्ताय श्री जिनाय नमः प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

।। इति कल्याणालोचना।।

श्री आदिनाथ चालीसा

दोहा- परमेष्ठी जिन पाँच हैं, मंगल उत्तम चार।
शरण चार की प्राप्त कर, भवदधि पाऊँ पार।।

दोहा- वंदन करके भाव से, करते हम गुणगान।
चालीसा जिन आदि का, गाते विशद महान।।

चौपाई

लोकालोक अनन्त बताया, जिसका अन्त कहीं न पाया।।1।।
लोक रहा है विस्मयकारी, चौदह राजू है मनहारी।।2।।
ऊर्ध्व लोक ऊर्ध्व में गाया, अधोलोक नीचे बतलाया।।3।।
मध्य लोक है मध्य में भाई, सागर दीप युक्त सुखदायी।।4।।
नगर अयोध्या जन्म लिया है, नाभिराय को धन्य किया है।।5।।
सर्वार्थ-सिद्धि से चय कर आये, मरुदेवी के लाल कहाए।।6।।
चिह्न बैल का पद में पाया, लोगों ने जयकार लगाया।।7।।
आदिनाथ प्रभु जी कहलाए, प्राणी सादर शीश झुकाए।।8।।
जीवों को षट् कर्म सिखाए, सारे जग के कष्ट मिटाए।।9।।
पद युवराज का पाये भाई, विधि स्वयंवर की बतलाई।।10।।
सुत ने चक्रवर्ति पद पाया, कामदेव सा पुत्र कहाया।।11।।
हुई पुत्रियाँ उनके भाई, कालदोष की यह प्रभुताई।।12।।
ब्राह्मी को श्रुत लिपि सिखाई, ब्राह्मी लिपि अतः कहलाई।।13।।
लघु सुता सुन्दरी कहलाई, अंक ज्ञान की कला सिखाई।।14।।
लाख तिरासी पूरब जानो, काल भोग में बीता मानो।।15।।
इन्द्र के मन में चिंता जागी, प्रभु बने बैठे हैं रागी।।16।।
उसने युक्ति एक लगाई, देवी नृत्य हेतु बुलवाई।।17।।
उससे अतिशय नृत्य कराया, तभी मरण देवी ने पाया।।18।।
दृश्य प्रभु के मन में आया, प्रभु को तब वैराग्य समाया।।19।।
केश लुंच कर दीक्षा धारी, संयम धार हुए अविकारी।।20।।

छह महीने का ध्यान लगाया, चित् का चिंतन प्रभु ने पाया॥21॥
चर्या को प्रभु निकले भाई, विधि किसी ने जान न पाई॥22॥
छह महीने तक प्रभु भटकाए, निराहार प्रभु काल बिताए॥23॥
नृप श्रेयांश को सपना आया, आहार विधि का ज्ञान जगाया॥24॥
अक्षय तृतीया के दिन भाई, चर्या की विधि प्रभु ने पाई॥25॥
भूप ने यह सौभाग्य जगाया, इक्षु रस आहार कराया॥26॥
पञ्चाश्चर्य हुए तब भाई, ये है प्रभुवर की प्रभुताई॥27॥
प्रभुजी केवल ज्ञान जगाए, समवशरण तब देव बनाए॥28॥
प्रातिहार्य अतिशय प्रगटाए, दिव्य ध्वनि तब प्रभु सुनाए॥29॥
बारह योजन का शुभ गाए, गणधर चौरासी प्रभु पाए॥30॥
माघ वदी चौदश कहलाए, अष्टापद से मोक्ष सिधाए॥31॥
मोक्ष मार्ग प्रभु ने दर्शाया, जैनधर्म का ज्ञान कराया॥32॥
योग निरोध प्रभूजी कीन्हें, कर्म नाश सारे कर दीन्हें॥33॥
शिव पदवी को प्रभु ने पाया, सिद्ध शिला स्थान बनाया॥34॥
बने पूर्णतः प्रभु अविकारी, सुख अनन्त पाये त्रिपुरारी॥35॥
हम भी यही भावना भाते, पद में सादर शीश झुकाते॥36॥
जगह-जगह प्रतिमाएँ सोहें, भवि जीवों के मन को मोहें॥37॥
क्षेत्र बने कई अतिशयकारी, सारे जग में मंगलकारी॥38॥
जिस पदवी को तुमने पाया, वह पाने का भाव बनाया॥39॥
तव पूजा का फल हम पाएँ, मोक्ष मार्ग पर कदम बढ़ाएँ॥40॥

दोहा- चालीसा चालीस दिन, दिन में चालीस बार।
'विशद' भाव से जो पढ़ें, पावे भव से पार॥
रोग शोक पीड़ा मिटे, होवे बहु गुणवान्।
कर्म नाश कर अन्त में, होवे सिद्ध महान्॥

***

पंच परमेष्ठी की आरती

(तर्ज-पत्थर के पारस प्यारे...)

परमेष्ठी हैं पंच हमारे, सारे जग से न्यारे।
सबकी उतारे हम आरती, ओ भैय्या !
हम सब उतारें मंगल आरती....

कर्म घातिया नाश किये हैं, केवल ज्ञान जगाए।
दोष अठारह रहे न कोई, प्रभु अर्हत् कहलाए।।
प्रभु के द्वारे हम आये, भक्ति से शीश झुकाए।। हम सब...

अष्ट कर्म का नाश किया है, अष्ट गुणों को पाए।
अजर-अमर अक्षय पद धारी, सिद्ध प्रभु कहलाए।।
शिवपुर को जाने वाले, मुक्ति को पाने वाले।। हम सब...

पंचाचार का पालन करते, शिष्यों से करवाते।
शिक्षा दीक्षा देने वाले, जैनाचार्य कहलाते।।
भक्ति हम उनकी करते, चरणों में मस्तक धरते।। हम सब...

रत्नत्रय के धारी मुनिवर, पढ़ते और पढ़ाते।
मोक्ष मार्ग पर उपाध्यायजी, नित प्रति कदम बढ़ाते।।
मूल गुण पाने वाले, ज्ञान बरसाने वाले।। हम सब...

विषय वासना हीन रहे जो, ज्ञान ध्यान तप करते।
'विशद' साधना करने वाले, कर्म कालिमा हरते।।
कर्मों को हरने वाले, मुक्ति को वरने वाले।। हम सब...

चौबीस जिन की आरती

(तर्ज - मांई रि मांई ...)

चौबीस जिन की आरती करने, दीप जलाकर लाए।
विशद आरती करने के शुभ, हमने भाग्य जगाए।।
जिनवर के चरणों में नमन्, प्रभुवर के चरणों में नमन्।। टेक।।

ऋषभ नाथ जी धर्म प्रवर्तक, अजित कर्म के जेता।
सम्भव जिन अभिनन्दन स्वामी, अतिशय कर्म विजेता।।
सुमति नाथ जिनवर के चरणों, मति सुमति हो जाए। विशद ...
पद्म प्रभु जी पद्म हरे हैं, जिन सुपार्श्व जी भाई।
चन्द्र प्रभु अरु पुष्पदन्त की, धवल कांति सुखदाई।।
शीतल जिन के चरण शरण में, शीतलता मिल जाए। विशद ...
श्रेयनाथ जिन श्रेय प्रदायक, वासुपूज्य जिन स्वामी।
विमलानन्त प्रभु अविकारी, जग में अन्तर्यामी।।
धर्मनाथ जी धर्म प्रदाता, इस जग में कहलाए। विशद ...
शांति कुन्थु अरु अरह नाथ जी, तीन-तीन पद पाए।
चक्री काम कुमार तीर्थंकर, बनकर मोक्ष सिधाए।।
मल्लिनाथ जी मोह मल्ल को, क्षण में मार भगाए। विशद ...
मुनिसुव्रत जी व्रत को धारे, नमि धर्म के धारी।
नेमिनाथ जी करुणा धारे, पार्श्वनाथ अविकारी।।
वर्धमान सन्मति वीर अति, महावीर कहलाए। विशद ..

श्री आदिनाथ भगवान की आरती

(तर्ज : आज करें हम ..)

आज करें हम विशद भाव से, आरती मंगलकारी।
मणिमय दीपक लेकर आये, आदिनाथ दरबार।।
हो जिनवर-हम सब उतारे मंगल आरती।
जन्म प्राप्त कर नगर अयोध्या, को प्रभु धन्य बनाया।
नाभिराय राजा मरुदेवी, ने सौभाग्य जगाया।। हो जिनवर..
षट् कर्मों की शिक्षा देकर, सबके भाग्य जगाए।
नर-नारी सब नाचे गाये, जय-जयकार लगाए।। हो जिनवर..
रत्नत्रय पाकर हे स्वामी!, मोक्ष मार्ग अपनाया।
आतम ध्यान लगाकर, तुमने केवलज्ञान जगाया।। हो जिनवर..

यही भावना भाते हैं हम, तव पदवी को पावें।
मोक्ष प्राप्त न होवे जब तक, शरण आपकी आवें।। हो जिनवर..
अतिशय पुण्यवान प्राणी ही, दर्श आपका पाते।
'विशद' आरती करने वाले, बिगड़े भाग्य बनाते।। हो जिनवर..

श्री पद्मप्रभ भगवान की आरती

श्री पद्मप्रभु जिनराज, आज थारी आरती उतारूँ।
आरती उतारूँ, थारी मूरत निहारूँ।।
प्रभु करो मेरा उद्धार, आज थारी.....
मात सुसीमा के सुत प्यारे, धरणराज के राज दुलारे।
जन्मे कौशाम्बी ग्राम, आज थारी आरती उतारूँ।। श्री पद्मप्रभु....
प्रभुजी भेष दिगम्बर धारे, वस्त्राभूषण आप उतारे।
कीन्हा है आतम ध्यान, आज थारी आरती उतारूँ।। श्री पद्मप्रभु....
तुमने कर्म घातिया नाशे, आत्म ध्यान से ज्ञान प्रकाशे।
करते जग कल्याण, आज थारी आरती उतारूँ।। श्री पद्मप्रभु....
जग-मग दीपक हाथ में लाते, प्रभु चरणों में शीश झुकाते
तुम हो कृपा निधान, आज थारी आरती उतारूँ।। श्री पद्मप्रभु....
प्रभु तुम तीन लोक के स्वामी, ज्ञाता दृष्टा अन्तर्यामी।
विशद ज्ञान के नाथ, आज थारी आरती उतारूँ।। श्री पद्मप्रभु....

श्री चन्द्रप्रभु भगवान की आरती

ॐ जय चन्द्रप्रभु स्वामी, जय चन्द्रप्रभु स्वामी।
चन्द्रपुरी अवतारी, मुक्ति पथगामी।। ॐ जय.....
महासेन घर जन्मे, धर्म ध्वजाधारी।
स्वर्ग मोक्षपदवी के दाता, ऋषिवर अनगारी।। ॐ जय.....
आतमज्ञान जगाए, सद् दृष्टि धारी।
मोह महामदनाशी, स्व-पर उपकारी।। ॐ जय.....

पंच महाव्रत प्रभुजी, तुमने जो धारे।
समिति गुप्ति के द्वारा, कर्म शत्रु जारे।। ॐ जय.....
इन्द्रिय मन को जीता, आतम ध्यान किया।
केवलज्ञान जगाकर, पद निर्वाण लिया।। ॐ जय.....
तुमको ध्याने वाला, सुख-शांति पावे।
'विशद' आरती करके, मन में हर्षावे।। ॐ जय.....
प्रभु की महिमा सुनकर, द्वारे हम आये।
भाव सहित प्रभु तुमरे, हमने गुण गाये।। ॐ जय.....
तुम करुणा के सागर, हम पर कृपा करो।
भक्त खड़े चरणों में, सारे कष्ट हरो।। ॐ जय.....

श्री शांतिनाथ भगवान की आरती

(तर्ज-वन्दे जिनवरम्-वन्दे जिनवरम्.....)

जगमग-जगमग आरति कीजे, शांतिनाथ भगवान की।
कामदेव चक्री तीर्थंकर, पदधारी गुणवान की।। टेक।।
नगर हस्तिनापुर में जन्मे, मात-पिता हर्षाए थे ।
विश्वसेन माँ ऐरादेवी के, जो लाल कहाए थे ।।
द्वार-द्वार पर बजी बधाई, जय हो कृपा निधान की। जगमग...
जान के जग की नश्वरता को, जिनवर दीक्षा पाई थी ।
त्याग तपस्या देख आपकी, यह जगती हर्षाई थी ।।
देवों ने भी महिमा गाई, नाथ आपके ध्यान की। जगमग...
हर संकट में जग के प्राणी, प्रभू आपको ध्याते हैं ।
भाव सहित गुण गाते नत हो, पूजा पाठ रचाते हैं ।।
महिमा गाई है संतों ने, वीतराग विज्ञान की। जगमग...
'विशद' भाव से ध्याने वाले, इच्छित फल को पाते हैं ।
जिनगुण पाने वाले मानव, निज सौभाग्य जगाते हैं ।।
फैल रही जग में प्रभुताई, अतिशय महिमावान की। जगमग...

भक्ती से यह भक्त आपके, आरति करने आए हैं ।
चरण-शरण के भक्त मनोहर, दीप जलाकर लाए हैं ।।
करें सभी मिल जय-जयकारें, पावन पूत महान की। जगमग...

श्री महावीर स्वामी की आरती

(तर्ज : कंचन की थाली लाया...)

रत्नों के दीप जलाए, चरणों में तेरे आए।
भावों से करने थारी आरती, हो वीरा हम सब..।। टेक।।
कुण्डलपुर में जन्म लिए प्रभु, मात पिता हर्षाए।
धन कुबेर ने खुश होकर के, दिव्य रत्न वर्षाए।।
इन्द्र भी महिमा गावे, भक्ति से शीश झुकावे।
भवि जन करते हैं तेरी, आरती हो वीरा.....।।1।।
चैत शुक्ल की त्रयोदशी को, जन्म जयन्ती आवे।
नगर-नगर के नर-नारी सब, मन में हर्ष बढ़ावें।।
प्रभु को रथ पे बैठावें, नाचे गावें हर्षावें।
सब मिल उतारे थारी आरती हो वीरा.....।।2।।
मार्ग शीर्ष कृष्णा तिथि दशमी, तुमने दीक्षा धारी।
युवा अवस्था में संयम धर, हुए आप अनगारी।।
आतम का ध्यान लगाया, कर्मों को आप नशाया।
श्रावक करते है थारी आरती...हो वीरा।।3।।
दशें शुक्ल वैशाख माह में, केवल ज्ञान जगाये।
कार्तिक कृष्ण अमावश को प्रभु, 'विशद' मोक्ष पद पाए।।
पावापुर है मनहारी, सिद्ध भूमि है- प्यारी।
जिनबिम्बों की हम करते हम आरती हो वीरा....।।4।।

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्ज:- माई री माई मुंडेर पर तेरे बोल रहा कागा.....)

जय-जय गुरुवर भक्त पुकारे, आरति मंगल गावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता।।
सत्य अहिंसा महाव्रती की.....2, महिमा कहीं न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया।।
जग की माया को लखकर के.....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा।।
गुरु की भक्ति करने वाला.....2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

धन्य है जीवन, धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे।।
आशीर्वाद हमें दो स्वामी.....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के... जय...जय।।

रचयिता : श्रीमती इन्दुमती गुप्ता, श्योपुर